MR. CHAIRMAN: Now we have to move on to the Short Duration Discussion and I call upon Shri Chaturanan Mishra to speak.

STATEMENT AND DISCUSSION ON THE SITUATION ARISING OUT OF THE DEMOLITION OF RAM JANMA BHOOMI-BABRI MASJID STRUCTURE—CONTD.

श्री चतुरानन मिश्र : (बिहार) : सभापतिजी, अभी विभिन्न माननीय सदस्यों से हमने सुना कि देश में बाबरी मस्जिद टूटने से क्या-क्या घटनायें घटी हैं और कैसे सारा देश सांप्रदायिक तनाव में आ गया है।

[उपसभापति पीठासीन हुई]

मेरा ऐसा ख्याल है कि बाबरी मस्जिद को तोड़ने के सिलसिले में जो कुछ किया गया और जिस ढंग से बाद में बी०जे०पी० के लोगों ने स्वीकार किया है कि उनके लोगों ने इसको तोड़ा है, भले ही हमारे विरोधी दल के नेता यहां उठकर खड़े हुए और उन्होंने कहा कि हमको इस बात से गम है, दुख है कि ऐसा हुआ, लेकिन जब सारा सदन इनको निन्दा करने के लिए कह रहा था, तो हमारे विरोधी दल के नेता और उनकी पार्टी तैयार नहीं हुई कि इस सिलसिले में बाबरी मस्जिद तोड़ने और इसके बाद जो घटनाऐं घटी हैं, इसकी निंदा की जाये, इसके लिए वे लोग तैयार नहीं।

मैं इस बात को ऐसा समझता हूं कि अब इस देश में जो फर्स्ट रिपब्लिक है, उसको भंग करके अब दुनिया दूसरी दिशा में देश ले जाने के लिए वे लोग आमादा है, कटिबद्ध है कि इस रिपब्लिक को समाप्त कर दिया जाय। हमारी इस रिपब्लिक के चार मुख्य खंभे हैं। पहला है, जो संविधान सेक्युलरिज्म पर आधारित है, अब वह नई परिभाषा देते हैं सेक्युलरिज्म की, जिसमें मां-बहिनों की बेइज्जती की जाए, जिसमें लोगों को जिंदा जलाया जाए, जिसमें मंदिर-मस्जिद को गिराया जाए। जो कुछ उन्होंने किया, उस दिन बाबरी मस्जिद में, उसके बाद सारे देश के अन्दर उनके हिसाब से भी करीब 6—7 सौ मंदिर और मस्जिद गिराये जा चुके हैं। इससे स्पष्ट होता है कि इन्होंने जो कुछ किया है, उससे सारा राष्ट्र धू-धू करके जलने लगा है।

मैं अखबारों में पढ़ता हूं कि कभी-कभी बाजपेयी जी हम लोगों के दिल को शांति देने के लिये कह देते हैं कि बहुत गम है, बहुत दुख है। लेकिन हम कहना चाहते हैं कि सारे राष्ट्र में किसने यह आग लगाई से अगर बाबरी मस्जिद की घटना नहीं घटी होती तो यह सारा फसाद कहीं नहीं होता और हमारा देश अमन से रह सकता था। यह बिल्कुल निश्चित है।... (व्यवधान) "आपको जब कबड्डी खेलने का मौका आएगा तब खेल लीजिएगा, अभी हमको शांत रहने दें"। जिन लोगों ने हमारे संविधान पर हमला किया उन्होंने ही संसद की अवमानना शुरू की। संसद ने तय किया था कि 15 अगस्त 1947 तक जहां जो पूजा-स्थल है वह सब वहीं रहेगा जो 15 अगस्त, 1947 में था। इन्होंने रथ यात्रा शुरू की मथुरा से और बनारस से और यह इनके अध्यक्ष और जिम्मेवार नेताओं ने इसे शुरू किया। सदन के अन्दर नारा लगाया कि अब यह तो सिर्फ झांकी है। अयोध्या तो सिर्फ झांकी है, मथुरा काशी बाकी हैं। इसका मतलब है कि सीधा-सीधा इस संसद को चुनौती देते हैं। जो सर्वोच्च न्यायालय है, उसका जो आदेश था उसका इन्होंने उल्लंघन किया। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में शपथ लिया था कि हम इसकी रक्षा करेंगे। उस शपथ को उन्होंने भंग किया। चौथा जो प्रजातंत्र का पिल्लर होता है, जो स्तंभ होता है वह प्रैस है। प्रैस पर इन्होंने बुरी तरह से हमला किया। प्रैस के लोगों को घायल किया। अब यह कहते हैं कि हमें अफसोस है कि ऐसा हुआ। सारी चीजों में अफसोस है लेकिन करवाने वाले तो आप ही लोग हैं, फिर यह अफसोस किसका है हमको बता दीजिए? इसीलिए हम समझते हैं कि इनका जो यह प्रयास है वह भारत के संविधान को समाप्त कर देने का यह जो हमारा रिपब्लिक है, संविधान है, उसको समाप्त कर देने की इनकी लड़ाई है और इस दिशा में संगठित ढंग से आगे बढ़ने के लिए यह जा रहे हैं। इन्होंने जो सारे देश में

किया वह मुझे याद आता है सन 1946 का जब जिन्ना साहब ने ऐसा ही डिलिवरेंस-डे करके समूचे देश में रायट करवाया था। हिन्दु जिन्ना साहब का काम इन लोगों ने किया है और सारे देश में आग लगाए हैं। मुझे आपसे पहली बात यही कहनी है। मैं इस सिलसिले में यह कहना चाहूंगा कि इनका दावा है कि यह हिन्दु है और हिन्दुत्व का नारा देते हैं यह असली बात नहीं है। मैं समझता हूं कि स्वामी विवेकानन्द से बड़ा कोई भी हिन्दुत्व को मानने वाला व्यक्तित्व इस देश में नहीं था। इन लोगों के बारे में उन्होंने कहा है कि जो लोग यह मंदिर गिराते हैं, मस्जिद गिराते हैं, आगजनी करते हैं, लूट-पाट करते हैं, उनके बारे में कहा हैं:

> "Sectarianism, bigotry, and its horrible descendant, fanaticism, have long possessed this beautififul earth. They have filled the earth with violence, drenched it often and often with blood, destroyed civilisations, and sent whole nations to despair."

यही काम इन्होंने किया है। चारों तरफ खून की धारा बहा करके भारतवर्ष में यही नंगा काम इन्होंने किया है। मैं इस बात करों इनको याद दिलाना चाहता हूं। मैंने सदन को 3 तारीख की बहस में भी कहा था कि यह जो हमारे विरोधी दल के नेता कह रहे थे वह सच्ची बात नहीं है, वह हिन्दुत्व की बात नहीं है, यह तो वोट की खातिर ऐसा करते हैं। उनको धर्म से कोई भी मतलब नहीं है। इन्होंने जो कुछ किया है उससे हिन्दुत्व को कलंकित किया है, न सिर्फ देश के अंदर में बल्कि सारे विश्व में कलंकित किया है। मैं आपको कहना चाहता हूं जो स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दु धर्म के बारे में कहा, जो शिकागो में धर्म संसद हुई थी, उस में उन्होंने कहा था:

> "I am proud to belong to a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance. We believe not only in universal toleration, but we accept all religions as true. I am proud to belong to a nation which has sheltered the prosecuted and the refugees of all religions and all nations of the Earth. I am proud to tell you that we have gathered in our bosom the purest remnants of the Israelites who came to Southern India and took refuge with us in the very year in which their holy temple was shattered to pieces by Roman tyranny. I am proud to belong to the religion which has sheltered and is still fostering the remnants of the grand Zoroastrian nation."

मैं यह कहना चाहता हूं कि भारत दुनियां में कलंकित हुआ है। हिंदु धर्म कलंकित हुआ है। विश्व में जाकर कोई भारतीय ... (व्यवधान) ...

श्रीमती कमला सिन्हा : (बिहार) हिंदु धर्म कलंकित नहीं हुआ है। इन लोगों ने उसे कलंकित किया है।

श्री चतुरानन मिश्र : हिंदु धर्म कलंकित है। कोई रेप होता है और कोई रेप करता है, दोनों में फर्क होता है। इन्होंने कलंकित किया है। मैं बिल्कुल सही बात कह रहा हूं। हिंदु धर्म कलंकित हुआ है... (व्यवधान) ...

श्रीमती सत्या बहिन : (उत्तर प्रदेश) इन्होंने कलंकित किया है।

श्री चतुरानन मिश्र : इन्होंने कलंकित किया है। अब कोई विश्व में जाकर नहीं कह सकेगा कि हिंदु धर्म में टालरेंस है। वह दूसरे को शरण देता है। धर्म के नाम पर सताये लोगों को भारत शरण देता है। यह बात अब हम दुनियां में जाकर नहीं कह सकते। मैं यही कहने के लिए खड़ा हुआ हूं। इसलिए इन्होंने हिंदु धर्म को कलंकित किया है। फिर इन्होंने किस बात के लिए कलंकित किया है? वोट के लिए किया है। इनके लिए सर्वोपरि वोट हैं। गद्दी पर आने के लिए ये राम का नाम लेते हैं। राम तो गद्दी छोड़कर चले गए थे। गद्दी को लात मारकर जंगल में चले गए थे और इनकी लार टपक रही है दिल्ली आने के लिए। इसके लिए सारे देश में आग लगा रहे हैं और ऐसा काम कर रहे हैं ... (व्यवधान) ...

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : (उत्तर प्रदेश) : मुख में राम बगल में छुरी वाली बात है।

श्री चतुरानन मिश्र : उपसभापति महोदया, मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि अगर वोट की बात होती तो ब्रिटिश पार्लियामेंट ने क्यों प्रस्ताव पास किया इसकी निंदा करते हुए ? अगर सिर्फ वोट की बात होती तो अमेरिका ने क्यों निंदा का प्रस्ताव किया कि भारत में ऐसा हो रहा है ? अमेरिकंस को तो यहां वोट लेना नहीं है। अगर वोट की बात रहती तो पूरे कामन मार्केट के देशों ने क्यों इसकी निंदा की है? अगर वोट की बात होती तो जर्मन अखबारों ने एक-एक कर के क्यों इसकी निंदा की है ? उपसभापति महोदया, सारे विश्व ने, अरब वर्ल्ड की बात मैं नहीं करता जिसका नाम सुनकर इनको बुखार चढ़ जाएगा, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि सारी दुनिया जो आज हमारी निंदा कर रही है, सारी दुनियां के सामने जो आज हमको सिर झुकाना पड़ रहा है, इसका सारा श्रेय इस बी.जे.पी. को है और इनके नेताओं को है। मैं इसी बात से सावधान करने के लिए यहां खड़ा हुआ हूं।

उपसभापति महोदया, मैं एक दूसरी बात और आपके ध्यान में लाना चाहता हूं। इस घटना के बाद मैं गया था भोपाल मैं गया था बंबई हमारे कुछ मित्र लोग माननीय सदस्य यशवन्त सिन्हा साहब और असद मदनी साहब भी साथ थे। ये लोग कह रहे हैं कि जो सस्कारें भंग हुई हैं, यह अनुचित है। उपसभापति महोदया, मैं इस बारे में भी कुछ कहना चाहता हूं। हमारी पार्टी सदैव इस ख्याल की रही है कि आर्टिकल–356 का इस्तेमाल नहीं होना चाहिये, लेकिन फिर भी मैंने क्यों इस बात का समर्थन किया ? महोदया, सिंहा साहब भी हमारे साथ गये हुये थे। हमको लोगों ने भोपाल में बताया कि पुलिस के संरक्षण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और दूसरे लोग जाते थे और मस्जिदों पर हमला करते थे। मुसलमानों के साथ लड़ाई करते थे और पुलिस मुसलमानों पर गोली चलाती थी।

श्री लक्खीराम अग्रवाल : (मध्य प्रदेश) : यह गलत बात है। देखिये, जांच कमीशन बैठ गया है, तथ्य आ जाने दीजिये यह गलत बात है, पूरी तरह से। जांच कमीशन बैठ गया है, न्यायिक आयोग की रिपोर्ट आ जाने दीजिये, सारी बात स्पष्ट हो जायेगी।

श्री चतुरानन मिश्र : सुन लीजिये, सब बात स्पष्ट हो जायेगी। जो मर गये हैं, उनको स्पष्ट कौन करेगा यह आप हमको बता दीजिये ? मैं आपसे कहना चाहता हूं कि वहां यह घटना घटी है।

श्री लक्खीराम अग्रवाल : आप गलत बयानी कर रहे हैं।

उपसभापति : आप इधर देखकर बोलिये, उधर देखकर क्यों बोल रहे हैं?

श्री चतुरानन मिश्र : मैं यही कहना चाहता हूं कि जो लोग उनके डैमोक्रेटिक राइट्स के लिये उठते हैं, वह यह देखलें कि मैं खड़ा हुआ हूं अपनी बात कहने के लिये और ये मुझको रोकना चाहते हैं।

श्री लक्खीराम अग्रवाल : बोलने के मायने यह नहीं है कि आप गलत बयानी कहें। हम भी भोपाल में थे। कोई ऐसी बात नहीं है कि आप ही सबके लिये बोलते हैं। हम भी भोपाल में थे आप सदन को दिग्भ्रमित नहीं कर सकते। आप सदन को भ्रमित नहीं कर सकते।

श्री चतुरानन मिश्र :... (व्यवधान) .... सुनिये, जरा बैठिये, आप लोग क्यों मदद में आ रहे हैं, हम अपने ही काफी हैं।..

उपसभापति : एक मिनट, मिश्र जी। मैं मैंबर से कहूंगी कि जो बोल रहे हैं, यहां वह अपने समय में बोल रहे हैं। आप लोगों के अन्दर थोड़ी सी सहन-शक्ति रखिये। एक दूसरे की बात सुन लीजिये।

श्री चतुरानन मिश्र : : इतना ही नहीं और बाकी है । चूंकि यह प्रजातंत्र की बात करते हैं, डमोक्रटिक राइट की बात करते हैं, हमको सदन को तब तक ग़ुमराह करने का अधिकार है जब तक कि आपकी रूलिंग नहीं हो जाए । यह कोई नहीं होते हैं हमको कुछ रोकने वाले । ...(**व्यवधान**) ..इस सबको तब तक गुमराह करने का अधिकार है, जब तक आपकी रूलिंग नहीं आती । यह डैमोक्रेसी समझते नहीं और डमोक्रेसी डमोक्रेसी कहते हैं ।

श्री लखीराम अग्रवाल : डेमोक्रेसी तो आपने ही समझी है । आप ही ने समझा है इसे । आपकी रूस की डेमोक्रेसी क्यों चली गई ? ...(**व्यवधान**)...

श्री चतुरानन मिश्र : उपसभापति महोदया, मैं दूसरी बात अखबार वालों से कह रहा हूं और देश के वे लीगल राय देने वाले जो एक्सपर्ट हैं और जो लिख रहे हैं कि उन सरकारों को भंग नहीं करना चाहिये, मैं वहां गया भोपाल, पुतलीघर, काजीपुरा, आरिफनगर, कांग्रेस नगर, भेल में पिपलानी मस्जिद में, गोविन्दपुरा में, हमीदिया अस्पताल में, वहां लोगों ने हमें बताया कि सात दिन से वे घर से भागकर के कैंपों में रह रहे हैं और सरकार की तरफ से कोई राहत नहीं दी गई । जब मैं मुख्यमंत्री से वहां मिला तो उन्होंने कहा कि वह कल से इसका इंतजाम करेंगे । मैं जानना चाहता हूं कि अखबार वालों से, मैं जानना चाहता हूं उन मित्रों से, जो कह रहे हैं कि उस सरकार को रहना चाहिये, कि जो रिलीफ कैंपों में हैं और वह मुसलमान है इसलिये प्रशासन उन भूख से मरते हुये लोगों की, दूध के लिये चिल्लाते हुये बच्चों की रक्षा न करें तो ऐसी सरकार को क्या रहना चाहिये? यही मैं सुप्रीम कोर्ट में जाकर बोलूंगा कि हमको आप बताइये कि ऐसी सरकार का क्या होना चाहिये ।

उपसभापति महोदया, दुखद बात है कि हमारे गृहमंत्री अपने बयान में इस बात को नहीं बोले । वह आयेंगे शायद इस पर । अगर ऐसा उनका बयान रहता तो देश के लोग समझ सकते थे । आपने बता दिया कि सरकार भंग कर देते हैं, लेकिन कारण भी तो बताइये कि किसके चलते आप भंग करते हैं । भंग करते हैं इसलिये कि उनके रहते लोगों की हत्यायें पुलिस के संरक्षण में की जाती है और इसलिये सरकार भंग करना जरूरी हो गया है कि यदि वह रहते हैं तो रिलीफ नहीं आर्गनाइज होने देते हैं । केन्द्र सरकार को कोई हाथ पैर नहीं है, राज्य सरकार ही हाथ पैर है इन कामों को करने का । मैंने यह उचित समझा कि चूंकि मैं वहां गया था, तो मैं सदन को इससे अवगत करादूं कि उन लोगों ने ऐसा किया है ।... (**समय की घंटी**)....

एक दूसरी बात जो मैं कहना चाहता था, चूंकि आप घंटी दे रही हैं तो थोड़ी सी बात इधर सुना दूं । (**व्यवधान**) आप इधर बताने का कह रहे हैं । मैं आपको बता दूं कि देश की जनता सेक्यूलरिज्म का नाशनहीं होने देगी क्योंकि इस देश की जनता को सेकुलरिज्म पर गहरा विश्वास है और अन्त में इन्हीं की जीत होगी ।

महोदया, मैं इस बात की चर्चा करना चाहता था कि यह जो रिपब्लिक है, उसको सबसे बड़ा खतरा उपस्थित हो गया है और जो लोग कह रहे हैं कि यह संरक्षण दीजिए मीटिंग करने का या यह करने का, तो यह संरक्षण होना चाहिए नॉर्मल अवस्था में । हिटलर ने भी डेमोक्रेटिक राइट का इस्तेमाल करके एक बार चलाया और सदा के लिए समाप्त कर दिया था जनतन्त्र को । इसलिए मैं सदन के उन लोगों से कहूंगा कि इनके एक मूंह में दो जीभ हैं, एक जीभ रहता तब वह ठीक समझा जाता, लेकिन एक जीभ से कहेगा कि हम संरक्षण करेंगे बाबरी मस्जिद का और दूसरी जीभ से कहेगा कि हमने बाबर को मार दिया, खतम कर दिया । अरे, बाबर मरा पांच सौ वर्ष पहले, मर गया । अब ये कहते हैं बाबर को हरा दिया । तो यह तो समझने की कोशिश

होनी चाहिए। तो जो बोलते हैं यह सच नहीं बोल रहे हैं, यह हृदय की बात नहीं बोल रहे हैं। यह फ्रॉड कर रहे हैं और यह इस्तेमाल करना चाहते हैं संविधान के उन प्रावधानों का, जो इनको अधिकार दे ताकि देश में खून खराबा और हंगामा करें। सारा राष्ट्र अभी बंट गया है हिन्दू और मुसलमानों के बीच। हम इनसे पूछना चाहते हैं कि उत्तर प्रदेश में जनता ने इनको जिता दिया था। एक पीलीभीत की घटना करके पूरे तराई को इन्होंने आतंकवादियों के हाथों में सुपुर्द कर दिया। आप सभी जानते हैं कि धर्म या मजहब जो है वह अत्यंत ही संवेदनशील विषय है और हिन्दू जितना संवेदनशील है, उससे भी ज्यादा इस्लाम को मानने वाले संवेदनशील हैं और वे कभी इसको बर्दाश्त नहीं करेंगे। वह मारे गए हैं। गृह मंत्री जी आप मत बोलिए कि कितने हिन्दू मरे हैं, कितने मुसलमान मरे हैं लेकिन हमने जाकर देखा है कि अल्पसंख्यक बहुत ज्यादा मारे गए हैं और आपकी ही पुलिस को भी बम्बई में मारा है। मजहब की खातिर लोग जान दे देंगे और इनके चलते सारा हिन्दुस्तान आतंकवाद में फंस जाएगा, यही खतरा है इस देश के ऊपर, यह मैं आपसे कहना चाहता हूं और आप रोक नहीं सकेंगे। आपका तराई में कुछ नहीं चल सका, यह सारा देश जानता है।

मैं आपके बयान के बारे में गृह मंत्री जी कहना चाहता हूं कि आप बातों को छिपाते क्यों हैं? आप हमसे मदद मांगते हैं, आपके कई नेता लोगों ने कहा है कि मदद दीजिए। आपकी रिपोर्ट, जो मैंने बयान पढ़ा है, तो लगता है कि एस.पी. के दफ्तर के किसी किरानी का लिखा हुआ बयान है। क्यों मैं ऐसा कह रहा हूं? इसलिए कह रहा हूं कि क्या यह सच नहीं है कि मस्जिद गिराने के एक दिन पहले वहां रिहर्सल हुआ था? सारे अखबारों ने दिया है, फोटो दिया है, आप क्यों अपने बयान में नहीं देते हैं? क्या यह सच नहीं है कि दो-दो, तीन-तीन दरगाहों को वहां पर उखाड़ा गया था, तोड़ा गया था? आप क्यों छिपाते हैं इस बात को? क्या एक मस्जिद की दीवार गिराई गई थी या नहीं? यह सच है या नहीं? क्या यह बात सच है या नहीं कि इसके बाद मुसलमान आबादी एक चौथाई से भी कम हो गई है अयोध्या में? सब कहते हैं कि मस्जिद बना दो, मैं भी चाहता हूं कि जिसकी कोई मस्जिद टूटी है या मंदिर टूटा है, मैं तो यह चाहता हूं कि हिन्दू लोग जाकर मस्जिद बना दें और मुसलमान लोग जाकर मंदिर बना दें। मैं नई कार-सेवा चाहता हूं। ये हिंदुइज्म के नाम पर हूलिगनइज्म करते हैं, मैं वह नहीं चाहता। और मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप इस बात की गारंटी कीजिए कि वहां अगर मस्जिद बनाएंगे तो नमाज कौन पढ़ेगा? चव्हाण साहब, चतुरानन मिश्र या प्राइम मिनिस्टर जाएंगे वहां नमाज़ पढ़ने के लिए? ...(**व्यवधान**)...

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: (उत्तर प्रदेश): मिश्र जी, आप पढ़िए न, क्या दिक्कत है?

श्री चतुरानन मिश्र: पढ़ने में दिक्कत नहीं है, यहां से जाकर वहां रोज नमाज़ ही नहीं न पढ़ेंगे, दिक्कत यह है जब उनके साथ आप ऐसा करते हैं तो हमको ही क्या बख्श देंगे, आपको तो वोट चाहिए था—वोट, वोट, वोट। वोट ही मां, वोट ही बाप, वोट ही सब कुछ और कुछ आपको सूझा ही नहीं। तो मैं यह कहना चाहता था कि आप सारे देश में इन्हीं की रिपोर्ट के मुताबिक जो अभी छपी है, इनकी रिपोर्ट, आपकी रिपोर्ट क्या है मैं नहीं जानता। आपकी रिपोर्ट यह है कि कितने लोग मारे गए, कितना दौरा किया, कितने मंदिर टूटे, कितनी मस्जिद टूटीं, यह आपने अपने बयान में नहीं दिया। यह सारे देश में जो हुआ है, यह बयान में आपने नहीं दिया जो आज प्रश्नोत्तर के जरिए देते हैं, क्या आप राष्ट्र को अवगत नहीं करा सकते थे कि इनके एक फसाद के कारण सारे देश में अ

श्री चतुरानन मिश्र

लग गई है? इतने घर जले, इतनी बस्तियां जलीं, इतने लूटे गए, इतनी बेइज्जती हुई, यह आपकी रिपोर्ट में नहीं आना चाहिए था? अगर यह काम आपको नहीं करना है तो कोई दूसरा रोजगार कीजिए, कुछ न मिले तो चना-चूर बेचिए। यह क्यों छिपा रहे हैं, यह आप हमको बता दीजिए? आप लोग कहते हैं कि बी.जे.पी. वालों ने धोखा दिया, दिया होगा लेकिन प्रधान मंत्री ने हमको धोखा दिया। ...(**व्यवधान**)...

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): फिर भी आप साथ दे रहे हो, फिर भी आप सपोर्ट कर रहे हो। ....(**व्यवधान**)...

श्री चतुरानन मिश्र: उन्होंने सिर्फ धोखा दिया है, तुम गरदन भी ले लोगे, इसलिए सपोर्ट कर रहे हैं। अब बात समझ में आ गई। अब सुन लीजिए। उपसभापति महोदया, घटना क्या घटी है? आप जानते हैं वह पुरानी कहानी। एक पंच ने हुक्मनामा दिया कि तुमको सजा दी जाती है कि आप एक सौ प्याज खाओ। अगर एक सौ प्याज नहीं खाओगे तो पचास जूते लगेंगे। उसने सोचा कि प्याज ही खालें तो बच जाएंगे जूतों से। उसने प्याज खाना शुरू किया तो पचास प्याज खाते-खाते जब थक गया तो उसने कहा कि अब और नहीं खाई जाएंगी। इसके बाद पचास जूते भी पड़े। तो प्रधान मंत्री का हाल यही है। सरकार नहीं तोड़ेंगे, बी.जे.पी. से नहीं टकराएंगे इसीलिए उन्होंने प्याज खाना शुरू किया। अब प्याज भी खाई और सरकारें भी तोड़ी और गाली भी खा रहे हैं। बताइए, हम लोग क्या करें। ....(**व्यवधान**)

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): Don't make these wild allegations.

SHRI CHATURANAN MISHRA: It is not at all an allegation.

SHRI V. NARAYANASAMY: There should be a limit. There was no collusion. There was no hand-in-glove...

SHRI CHATURANAN MISHRA: I did not say collusion.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Narayanasamy, your translation must not be correct.

SHRI CHATURANAN MISHRA: You did not understand what I said.

SHRI V. NARAYANASAMY: I am not getting you through translation.

SHRI CHATURANAN MISHRA: I don't say whether you had my right or wrong translation, but at least you have understood me wrongly. This is what I can say.

अब आप आ जाइए, मैंने कहा कि सरकारें भी आपने तोड़ी, फिर बचा क्या? बेन भी आपने कर ही दिया है और वहां से नारा लग ही रहा है कि—"गद्दी छोड़ो तानाशाही, प्रजातंत्र के हत्यारो।" परन्तु आपके मुंह से निकलता ही नहीं कि—"गांधी जी के हत्यारो, तुम भी शर्म करो-शर्म करो।" आपके मुंह से निकल ही नहीं रहा है। ....(**व्यवधान**)

श्री एन० के० पी० साल्वे (महाराष्ट्र): हमारी तरफ से आप ले लीजिए। ....(**व्यवधान**)

श्री एस० बी० चव्हाण: आप हाउस में नहीं थे उस वक्त। ...(**व्यवधान**)

श्री चतुरानन मिश्र : अगर नारा लगा दें लीडर आफ दी ऑपोजिशन, तो हम तुरन्त समर्थन कर दें। . . . (**व्यवधान**) नहीं-नहीं, लीडर आफ दी हाऊस। . . . (**व्यवधान**)

श्री सिकन्दर बख्त (मध्य प्रदेश) : इन्होंने परेशान होकर लीडर आफ दी ऑपोजिशन कहा है तो उस सिलसिले में एक शेर पेश-ए-खिदमत करदूं,

> "दहशत में हर एक नक्शा उलटा नजर आता है,
> मजनूं नजर आती है, लैला नजर आता है।"

श्री चतुरानन मिश्र : यह तो उसी को होता है जो कह देता है कि बाबरी मस्जिद तोड़ो और यहां आकर कहदे कि नहीं, हमको अफसोस है।

जल-भूतल परिवहन मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री जगदीश टाइटलर) : इतना कुछ होने के बाद, आग लगने के बाद, सुबह से 3-4 घंटे ऑनोरेबिल मेंबर्स क्या-क्या नहीं बता रहे हैं, क्या-क्या अत्याचार नहीं कर रहे हैं, और उसके बाद भी शायरी करके, दांत फाड़कर हंसते हैं तो इस देश का तो हो ही गया सत्यानाश।

श्री संघ प्रिय गौतम : मैडम, गांधी जी को कोट कर रहे हैं। गांधी जी ने कहा था कि मेरे जीते जी पाकिस्तान नहीं बनेगा। पाकिस्तान बनेगा मेरी लाश पर। मगर आप जानती हैं पाकिस्तान गांधी जी के जीते जी बना। . . . (**व्यवधान**)

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश) : और इसी जुर्म में मारा है इन्होंने। . . . (**व्यवधान**)

†[**شری محمد افضل عرف م. افضل (اترپردیش)**: اور اسی جرم میں مارا ہے انھوں نے... مداخلت]

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : . . . (**व्यवधान**) तो इनको हत्या करने का क्या अधिकार था। गांधी जी जो राष्ट्र के लिए कर रहे थे उसी गांधी जी को . . . (**व्यवधान**) पूरा राष्ट्र साम्प्रदायिकता की होली में जला जा रहा है। . . . (**व्यवधान**)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am not permitting. आप बैठ जाइए। प्लीज, देखिए, एक सैकेंड, मैंने आप लोगों से सबसे यह गुजारिश करी, इल्तदा करी, रिक्वेस्ट करी और आग्रह किया कि अगर आप समझते हैं कि मामला गंभीर है और हाऊस का समय उस पर दिया गया तो मैं समझती हूं कि एक-दूसरे की बात सुनने की थोड़ी सहनशक्ति होनी चाहिए। अगर देश में नहीं है तो हाऊस में तो हो जाए। . . . (**व्यवधान**) . . .

श्री चतुरानन मिश्र : उपसभापति महोदया, हमारे मित्र ने गांधी जी की चर्चा की। तो गांधी जी इनके बारे में क्या कहते हैं वही सुना देता हूं, तब तो इनको खुश हो जाना चाहिए। . . . (**व्यवधान**) गांधी जी की डायरी का पेज नं. 10 है 10 सितम्बर, 1947 का। गांधी जी ने कहा था जब गोलवाल्कर जी उनसे मिलने के लिए गये थे। Gandhiji said at his prayer meeting in Delhi on September 10, 1947 "He had been told that the hands of this organisation too were steeped in blood..."

"उसका हाथ इनके खून से, लहू से भरा हुआ है" यह गांधी जी ने इनके बारे में कहा है। यह गांधी जी की डायरी से मैं कहता हूं। ये सरदार पटेल की बड़ी चर्चा करते हैं जैसे यही लोग सरदार पटेल को पूछते हैं, हम लोग जो आजादी के आंदोलन में गए वह तो बिल्कुल गधे थे . . . (**व्यवधान**)

Said Sardar Patel: "Militant communalism which was preached until only a few months ago by many spokesmen of

[Shri M. A. Baby]

the Hindu Mahasabha including men like Mahant Dig Vijay Nath, Prof: Ram Singh and Desh Pande could not but be regarded as a danger to public security. The same would apply to the RSS with the additional danger inherent in an organisation run in secret militant and semi-militant lines." ये हुआ सरदार पटेल का कारेस्पोंडेंस वोल्यूम 6, पेज 66 से।

"The activities of the RSS constituted a clear threat to the existence of the Government and the State". This is from Sardar Patel correspondence Vol. VI page 323. "The other is RSS, I have made to them an open offer: change your plans, give up secrecy, respect the Consituation, show your loyalty to the flag and make us believe that we can trust you."

मैं जिस बात की चर्चा करना चाहता था कि हमारे संविधान में ये नहीं लिखा हुआ है कि किसी को अगर बैन कर देंगे तो सब दिन बैन रहेगा। बैन तो सिर्फ डिसलोकेट करने के लिए है। हर बार ट्राईब्यूनल में जाना होगा। आप लोग आतंक फैला दिए थे, आग लगा रहे थे, कार-सेवक दंगे का संदेशा लेकर जा रहे थे, उसको डिसलोकेट किया गया है। आपको परमानेंट रोक कहां दी गयी है? वह तो सिर्फ डिसलोकेशन है फिर तो वही आ जायेगा। आप सुन लीजिए, इस सदन में बहुत से लोगों ने कहा है हमारे बिहार के मुख्य मंत्री के बारे में कि "वह तो कुछ नहीं है, उजबक है, बहुत लोग बोलते हैं लेकिन एक बात करके हमारे मुख्य मंत्री ने दिखला दिया। ज्यों ही उतरे कार-सेवक, सबको कहा कि वह ऊंची दीवार वाला घर आपके लिए है, चले जाइए, भीतर घुसिए। सबको बंद कर दिया। बिहार शांत रह गया . . . (व्यवधान)

श्री संघ प्रिय गौतम : सीतामढ़ी में क्या हुआ ?

श्री चतुरानन मिश्र : सीतामढ़ी में तो पहले हुआ . . . (व्यवधान)

श्री संघ प्रिय गौतम : 135 मुसलमान मारे गए और इन्होंने मरवाए। बंगाल में क्या हुआ, कलकत्ते में क्या हुआ ?

श्री चतुरानन मिश्र : जरा सुनिए तो, कलकत्ते, में वही हुआ कि आपने आग लगाने की कोशिश की, हमने मिलिट्री को सौंपकर के आपको रोक दिया। यही हुआ कलकत्ते में और क्या हुआ ? हमने नहीं चलने दिया। हमारे मुख्यमंत्री ने यही करके दिखला दिया। जो बार-बार जयपाल रेड्डी जी उठते हैं कि इनको अधिकार दीजिए, गणतांत्रिक अधिकार। सरकार को जरूर अतिशय नहीं करने दीजिये, लेकिन वह गलती नही कीजिए जो हिटलर के वक्त में सोशलिस्टों और कम्युनिस्टों ने की थी। यह मैं आपको कह देना चाहता हूं। वरना यह अत्यंत ही खतरनाक जीव इस देश में आया है जिसके दो जीभ हैं। एक जीभ से इधर-उधर लल्लो-चप्पो करता है और दूसरे जीभ से विष फैलाकर सबको चाटता है। यह नया जीव जन्म लिया है।

उपसभापति : आपका भाषण खत्म होने की कुछ सम्भावना है . . . (व्यवधान)

श्री चतुरानन मिश्र : उपसभापति महोदया, ये लोग इस्लाम के बारे में बहुत बोलते हैं कि बहुत खराब है, इस्लाम जो आया है इसी के चलते हुए ऐसा यह कह रहे हैं। मैं फिर स्वामी विवेकानंद का उद्धरण आपको सुना देता हूं—

"Practical Advaitism, which looks upon and behaves to all mankind as one's own soul, was never developed among the Hindus. .If ever any religion approached to this equality is an appreciable manner, it is Islam and Islam alone. . ."

श्री सुकोमल सेन (पश्चिमी बंगाल) : किसको सुनाते हैं आप, किसको सुनाते हैं ?

श्री चतुरानन मिश्र : हम उनको सुनाना चाहते हैं जो अभी तक नहीं समझे हैं कि ये हिंदू नहीं हुडलुम्स हैं ....(व्यवधान) और सुन लीजिए—

"I am firmly persuaded that without the help of practical Islam, theories of Vedantism, however fine and wonderful they may be, are entirely valuales, to the vast mass of mankind...

मैं माथुर जी को सुनाना चाहता हूं क्योंकि वे विद्वान आदमी हैं और हमारे मित्र भी हैं :

"For our own motherland, a junction of the two great systems, Hinduism and Islam—Vedanta brain and Islam body—is the only hope. I set, in my mind's eye, the future perfect India rising out of this chaos and strife, glorious and invincible, with Vedanta brain and Islam body."

This is what you are destroying. इसी का त आप विनाश कर रहे हैं। हिन्दुओं के उसी सिद्धान्त को हम चाहते हैं। ...(समय की घंटी)

मैडम, आपने घंटी बजा दी, इसलिए...

कुछ माननीय सदस्य : बोलने दीजिए, बोलने दीजिए....

उपसभापति : अगर हाउस ऐग्री करता है कि कोई दूसरा न बोले तो हमको क्या ऐतराज है ?

श्री चतुरानन मिश्र :: हम जिस बात की चर्चा करना चाहते हैं उसी को कहते हैं। हम दूसरों का समय नहीं लेना चाहते हैं। एक बात यह है कि इस मसले को हल करने के लिए प्रधान मंत्री व दोनों कम्यूनिस्ट पार्टी के नेताओं की बैठक हुई थी। इसमें हमसे कहा गया कि सरकार सारे कागज पत्र लेकर तैयार है। हम सुप्रीम कोर्ट को दे देंगे और कानून बना देंगे कि फैसले तक यथा-स्थिति रहे और हम लोग साथ देंगे। एक तरह का स्टे आर्डर होना चाहिए। लेकिनवह आपने नहीं किया। आपने भा.ज.पा. पर भरोसा किया और वामपंथ को धोखा दिया। अब आप कह रहे हैं कि हम आपका साथ देंगे। अविश्वास प्रस्ताव तो इस सदन में नहीं होगा, उस सदन में होगा। उस सदन में भी हम आपका साथ देते हैं। हमें इसके लिए धन्यवाद देने की कोई जरूरत नहीं है। हम आपका साथ देंगे, लेकिन फिर आप बजट लाएंगे, उसमें गरीबों पर टैक्स लगाइएगा, फिर आप पब्लिक सैक्टर को चोट कीजिएगा। आपसे हम सीधे सीधे कह देते हैं कि आपका आदर्श क्या है ? आपका आदर्श है विश्व बैंक, आपका आदर्श है आई.एम.एफ.। गांधीजम, पब्लिक सैक्टर आपका आदर्श नहीं है। आत्मनिर्भरता आपका आदर्श नहीं है। इसीलिए हम आपसे कहते हैं कि आपका आदर्श हो गया सेक्युरिटी स्कैम, बोफोर्स। इन सब की हमको आदत नहीं है।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shall I still allow him to continue?

श्री चतुरानन मिश्र : यह आपको भी जानना चाहिए। फाइनेंस मिनिस्ट्री की कंसल्टेटिव कमेटी में भी हमने कहा था। जब हिटलर का उदय हुआ तो इसके दो फैक्टर थे। एक सबसे बड़ा काम किया उस समय रेशियलिज्म का जो यहां कम्यूनलिज्म का रूप है और दूसरा वहां महंगाई, बेरोजगारी बेतहाशा फैल गई थी...(व्यवधान) सबों ने नारा दिया "हेल हिटलर" हेल हिटलर।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : स्टालिन कैसे बना था ?

श्री चतुरानन मिश्र : स्टालिन रहता तो आपको रहने देता ? ये नहीं जानते। सुनिए। जब स्टालिन और उसके लोग रहे किसी को चूं-चप्पो नहीं करने दिया था। हम लोग हट गए तब आप कहते हैं कि बाबरी मस्जिद तोड़ेंगे, यह तोड़ेंगे, वह तोड़ेंगे, हम हट गए तो कहते हैं...

SHRI M. A. BABY (Kerala): Since you have said that two factors contributed for the coming up of Hitler, I would say, there was one more political reason. The two powerful political forces, com-

[Shri M. A: Baby]

munists and social democrats, could not come together to fight Hitler. That also has to be said.

SHRI CHATURANAN MISHRA: I would not like to repeat it.

SHRI MENTAY PADMANABHAM (Andhra Pradesh): Who are the social democrats now?

SHRI CHATURANAN MISHRA: Maybe, both you and I.

तो मैं आपसे कहना चाहता था कि यह तो स्थिति आने वाली है वह सबके सामने है। हमने उनसे कहा कि आप इस खतरे से अगर लड़ना चाहते हैं इनसे तो आर्थिक कार्यक्रम भी वैसा बनाइए। देश के लोग कराह रहे हैं, आपसे राज चलेगा नहीं, यहां सैक्युरिटी स्कैम होगा, बोफोर्स होगा तो आपका साथ क्यों देंगे और विपक्ष के लोग आपका साथ छूना भी नहीं चाहेंगे क्योंकि आप संक्रामक रोग हैं, आप कंटेजियस डिजीज हैं। देख ही रहे हैं कैसा है। इसलिए हम आपसे कहने के लिए आये कि अगर इस राष्ट्र को एक सूत्र में बांधना है तो यह शर्त नहीं होगा कि हम चुनाव में आपका समर्थन करें। चुनाव में समर्थन नहीं करना है तो नहीं करना है। डेमोक्रेसी का अर्थ ही यह है कि अलग-अलग रहें। आप आइये इस बात पर कि आपके पास कोई प्रोग्राम है इस देश को आगे ले जाने के लिए? आपके अण्डे में क्या गांधीज्म लिखा हुआ है, आपके धंधे में क्या नेहरूइज्म लिखा हुआ है, पब्लिक सेक्टर लिखा हुआ है या आपके धंधे में आई.एम.एफ. और वर्ल्ड बैंक, एक्जिट, एक्जिट... । अपने फाइनेन्स मिनिस्टर से मैंने कहा था इतना एक्जिट एक्जिट करते हो, डेमोक्रेसी इज ओन एक्जिट। (**व्यवधान**) इसलिए कम से कम राष्ट्र को इतना तो प्रधान मंत्री कहते कि भई हम से गलती हो गई कि हमने इन पर विश्वास किया। मोरेल रिस्पोंसिबिलिटी तो आप लीजिए। क्यों नहीं लेते यह बताइये। यह राष्ट्र को एक सूत्रबद्ध करेगा। वह कहेगा इन्होंने धोखा दिया, धोखा देने वाले के साथ आप रहम क्यों करते हैं। आप रात में जाकर वाजपेयी से मिलिए या अंधेरी रात में मिलिए हमें इससे कोई मतलब नहीं।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : यह अपना हम पर मत छोड़िये। हमें बैठने दीजिए। (**व्यवधान**)

श्री चतुरानन मिश्र : हम तो वैसे भी मिले हैं। हम अयोध्या से दोनों मैं और वाजपेयी जी साथ लौटकर आ रहे थे और हमने यह कहा कि अच्छा किया कि इतने शांतिपूर्ण ढंग से सुलट लिया। उन्होंने चुप्पी साध ली। हम को समझ में आया कि यह धन्यवाद ठीक नहीं दिया। यह तो मिसफायर है धन्यवाद। वहां तो हंगामा होने वाला है। हम दोनों साथ ही आये। इसलिए मैं आपसे कहने के लिए आया हूं कि

Democracy is on the exit. This Government is also on the exit. I warn you all that unless we go to the people and mobilise the public opinion against this, the beginning of the end of this Republic has started. Otherwise the case is lost. I am telling you. If Gandhi Ji could not stop the division of India, we poor fellows are nowhere.

जिन्ना साहब ने 1940 में पास किया था पाकिस्तान का रेजोलूशन और 1947 में ही गोट इट। 7 वर्ष ही लगे। यह आग है। बीजेपी वाले जो कह रहे हैं यह आग है। कम्यूनलिज्म की आग लगेगी और सारा देश धू-धू करके जल जायेगा, कोई नहीं बचेगा। हमारी और आपकी कोई बात नहीं सुनेगा। इसलिए वक्त रहते हम आपको चेतावनी देते हैं कि यह मत समझिये कि मुसलमान मारे जा रहे हैं। हम आपको सीधी बात कह रहे हैं कि यह भारत की जो सर्वश्रेष्ठ चीजें थीं वह मारी जा रही हैं। संविधान की सर्वश्रेष्ठ बातें हैं वह मारी जा रही हैं। इसलिए पब्लिक ओपिनियन आपके फेवर में जा रही है और उनके खिलाफ जा रही है। सारे के सारे दुनिया के लोग लिख रहे हैं, उनकी निन्दा कर रहे हैं और यह कह रहे हैं कि विश्व

के इतने बड़े गणतंत्र, प्रजातंत्र देश में उस पर खतरा है। सेक्यूलर लोग आपकी तरफ झुके हुए हैं। आप उनके साथ बिट्रे मत करिये। मुझे विश्वास है कम से कम आप सावधानी से इस काम को लेंगे। जो स्टेटमेंट आपने हम को दी है यह तो एक पुलिस वर्क है। कम से कम आप जो भाषण दीजियेगा उसमें दिल खोलकर बोलिए जिससे लगे कि आप गृह मंत्री के लायक हैं। नहीं तो हमने जैसे पहले कहा कि चनाचूर बेचिए। इसको छोड़ दीजिए।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just a minute. The Chairman Saheb announced before leaving that the time allotted for this discussion is over. He suggested that all those parties who have not spoken should be given first preference. I do not know how many names of Members we can keep on adding who would like to speak because they feel that they would like to put forth their views before the Members on the floor of this House. I have some hands being raised in this House. Now, first of all I would request the House to dispense with the lunch hour and if the House so agrees, we can dispense with the lunch hour, sit through the lunch hour so that we have one extra hour to discuss this. I would request the hon. Members that whatever they want to say if they say it briefly because so much has been said already and if they do not go into the details of what happened and just say as to what are the solutions or suggestions, I think it will help the Home Minister also to formulate his thoughts in future. This is my suggestion. *(Interruptions)*

SHRI MENTAY PADMANABHAM: Madam, when are you going to have voting?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let me complete. This is the tragedy. We will have a voting on this also because this discussion is going to culminate into the proclamation. *(Interruptions)* I do not know. It depends on the House. Mr. Mathur, I cannot give you the time. It depends on the entire House when they have finished the discussion.

1.00 P.M.

If the House cooperates with the Chair, then the discussion can be short.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: मेडम, मैं दूसरी बात पूछ रहा हूं। चेयरमैन साहब ने हुक्म फरमाया है कि जिन पार्टियों के लोग बोल चुके हैं उनके लोग नहीं बोलेंगे।

उपसभापति: चव्हाण साहब ने नहीं, चेयर ने कहा था।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: जी हां, चेयर ने कहा था। इसलिए मैं यही विश्वास चाहता हूं कि जिन पार्टियों के लोग बोल चुके हैं वे न बोलें और जो दल रह गये हैं उन्हें ही बोलने दिया जाये तो ठीक है, लेकिन अगर जिन पार्टियों के लोग बोल चुके हैं वे भी बोलें तो मेरी पार्टी को भी समय दिया जाना चाहिए।

उपसभापति: पहले बहस तो पूरी हो जाय।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: जो बोल चुके हैं वे न बोलें जैसा चेयर ने कहा है, मुझे मंजूर है।

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am taking the sense of the House because the Chair functions with the cooperation of the Members. It is not the will of the Chair or the will of the Leader or the will of the Opposition Leader; it is the will of the entire House. If the Members so feel that they can contain their speeches and we can allow many Members to give their opinion on this point, I would try that we finish it in two hours or one and a half hours or during the lunch hour....

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam. I would like to submit that the time allotted to our party is not exhausted while the time allotted to the other parties has been exhaused. Therefore, you may kindly make an exception in the case of our party.

THE DEPUTY CHAIRMAN: O K.

[Shri S. Jaipal Reddy]

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: Madam, some Members have taken double the time allotted to them. Double the time but you are not giving me five minutes even. (*Interruptions*) ...

THE DEPUTY CHAIRMAN: अगर इस पर बहस छेड़ेंगे तो जो नुक्ता है वह खत्म हो जाएगा।

The House is agreed that we are not having the lunch hour. Then also I request the Members,—I will try to put as many Members into it as possible—I request each one of you to be brief. I call Mr. K. N. Singh.

श्री के० एन० सिंह (उत्तर प्रदेश) : मेडम डिप्टी चेयरमैन, अभी हम मिश्रा जी की बात सुन रहे थे। बड़े गांधीवादी विचारधारा में, शुद्ध शब्दों में, इन्होंने बोलने की कोशिश की और कहा कि बी०जे०पी. की सही सकल देश के सामने रखी जाय। इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूं थोड़े रिजर्वेशन के साथ। बहुत देर में ये इसको समझे हैं। मैं अभी कल ही कानपुर गया था तो वहां के अधिकारियों ने कहा कि साहब, 2 तारीख को कार सेवक यहां से चले गये थे। 2 तारीख से 6 तारीख तक कोई चोरी, कोई दुर्घटना या गिरहकटी कानपुर में नहीं हुई और 6 तारीख को जब वे लोग वापस आये तो डाके पड़ने शुरू हो गये और कत्ले आम शुरू हो गये, यह बात लोगों ने हमें बताई। मैं अपने साथियों को कहना चाहता हूं कि आपने कार सेवकों को इतना ट्रेन्ड कर दिया है कि वे हर चीज में माहिर हो गये हैं। कानपुर में 40 आदमी जिन्दा जला दिये गये, 35 आदमी अभी तक गायब हैं। उनका कोई पता नहीं है। होता यह है कि आम तौर से जो गायब होते हैं उनकी लाशों को जला दिया जाता है, वे मिलते नहीं हैं। करीब 30 आदमी मारे गये हैं और लाखों का नुक्सान हुआ है। उत्तर प्रदेश में तीन जगहों की हालत खराब रही। कोशिश तो इन्होंने हर जिले में की थी। लेकिन आप कानपुर की बात सुनें। कानपुर का कलेक्टर कौन था? कल्याण सिंह ने क्यों उसको फैजाबाद से हटा कर कानपुर में रखा था? वही श्रीवास्तव और वही एस.पी. कानपुर में रखे गये थे... (व्यवधान)। दोनों वही थे। उन्होंने जो कत्ले आम करवाया उसका एक दृश्य मैं आपको बताता हूं। पुलिस की गाड़ियों में पैट्रोल लादकर वे लोगों के घरों में गये, लोगों को पकड़ा और पैट्रोल डाल कर जला दिया।

40—42 ऐसे आदमी वहां मारे गये और वे सारे के सारे माइनारिटीज के लोग थे। वे पता नहीं क्या काम करने गये थे। रोजी-रोटी कमाने गये थे। शहर में तो हुआ गांवों में भी दोनों कौमों का नुकसान ज्यादा हुआ। काफी धन गया, प्रोपर्टी जली। तो मैं मिश्रा जी से कहना चाहता हूं कि हमने भी गलती की है और आपने भी गलती की है। इस वक्त सिंहा जी यहां नहीं हैं लेकिन जयपाल रेड्डी जी यहां हैं। आपने भी गलती की है। हमने इस हाउस में, हम सब ने इनका असली रूप जाने बिना यह गलती की है। इन्होंने एक दफा गांधियन समाजवाद की बात करी थी और कहा था कि हम और सब छोड़ देते हैं और अब गांधियन समाजवाद पर चलते हैं। आप अगर इनकी नीयत देखें शुरु से तो जब गांधीजी की हत्या हुई थी, आपको याद होगा कि गौडसे ने उनकी हत्या की तो मालूम नहीं था कि गोडसे हिन्दू है या मुसलमान है। इन्होंने गौडसे की मुसलमानी करायी थी। जरा नीयत देखें कि कैसा तरीका होता है इन ताकतों का, उनकी मुसलमानी करायी गयी थी कि यदि पकड़े जांये या उनको मार दिया जाय—उनका प्लान था कि उनको मार दिया जाये, इससे कातिल का पता नहीं लगेगा और यहीं पता लगेगा कि वह मुसलमान था। लेकिन जब वह पकड़ा गया तो पता लगा कि वह हिन्दू है। यानी उनकी नीयत क्या थी? जो फासिस्ट तरीका होता है, उसकी उन्होंने शुरुआत की थी। जब धर-पकड़ हुई तो धर-पकड़ में उन्होंने दोनों हाथ उठा दिये कि हम आर०एस०एस० के नहीं हैं। दफ्तर बंद हुआ। लेकिन एक बात आप जान लें कि इस देश की राजनीति एक तरफ तो दिल्ली से चलती

है लेकिन दूसरी तरफ वह नागपुर में धृतराष्ट्र से चल रही है। नागपुर में धृष्टराष्ट्र बैठा है और वहां से इनकी राजनीति चलती है और जो वह चाहता है वह ये यहां कहते हैं। उनका माउथ है बी० जे० पी०। इसलिये कभी कभी हमारे दोस्त धोखे में पड़कर के—आपको याद होगा कि कांग्रेस के खिलाफ कई मुहाज बनीं। कभी जनता पार्टी बनी और उसने इनकी आरती उतारी और फिर उन लोगों का क्या हश्र हुआ। फिर जनता दल वालों को कहना पड़ा कि वह लोग धोखेबाज हैं। फिर हमारे साथियों ने जो आज महसूस कर रहे हैं, उन्होंने उनकी आरती उतारी और उनका हश्र भी आपने देखा। अब मिश्रा जी आप यह सोच रहे हैं लेकिन इनकी यह शक्ल तो हम पहले से जानते थे, आपको भी मालूम था। आपको इस बात का अहसास था कि इनकी शक्ल क्या है लेकिन आप इतने गुस्से में थे, आप हमसे इतने नाराज थे कि आपने हमको हराने के लिये इन नागनाथों का साथ दिया। मैं समझता हूं कि यह ऐसा जहर है जिसका अहसास आज आपको हो रहा है। आज हिन्दुस्तान उस चौराहे पर खड़ा है, आज वह वहां खड़ा है, जहां हमें इस बात का फैसला करना है कि हमें किधर जाना है, देश को किधर जाना है। यह एक मौका देश को मिला है। इस मौके से हमको फायदा उठाना चाहिए और इसके लिये हम सब कोशिश करें। मैं समझता हूं कि यह जो मौका मिला है इस देश को सही रास्ते पर ले जाने के लिये इसके लिये जब हम देखते हैं कि सारे वे दिल, जिनके मतभेद थे...

श्री चतुरानन मिश्र : पवार साहब जी ने जो फिल्म बनायी है वह भी दिखलाइये सबों को सदन में।

श्री के० एन० सिंह : मैं समझता हूं कि वह जरूर दिखायी जायेगी ताकि सब के सामने इनके चेहरे साफ हों ..... (**व्यवधान**)...असल में बात यह है मिश्रा जी कि इनमें जो गैर–आर० एस० एस० लोग हैं वे ज्यादा बोलते इसलिये हैं कि वे अपनी वफादारी साबित कर सकें। इनमें हमारे गौतम जी आप भी हैं। क्योंकि आप आर० एस० एस० में कभी नहीं रहे और ये उस तबके से आते हैं जो गरीबों का तबका है, इसलिये ये बेचारे अपनी वफादारी साबित करने की कोशिश करते हैं।

श्री संघ प्रिय गौतम : मैं आपको एक शेर सुनाना चाहता हूं :

"तेरी सूरत तो ऐ जालिम नहीं है प्यार के काबिल,
मगर हम क्या करें हमको वफा मजबूर करती है"।

...(**व्यवधान**)...

श्री एन० के० पी० साल्वे : वह भी तो यही कह रहे हैं।

उपसभापति : गौतम जी यह शेर किस पर आपने पढ़ा है? उनके लिए पढ़ा है या अपने लोगों के लिए पढ़ा है (**व्यवधान**)

श्री के० एन० सिंह : गौतम जी, मैं आपके शेर का जवाब भी दे दूंगा। आप जल्दी न करें। मिश्रा जी, असल में इनको आज़ादी का कोई ख्याल ही नहीं है क्योंकि इन्होंने आज़ादी की लड़ाई लड़ी ही नहीं। आज़ादी किस को कहते हैं, इस बात का इनको अहसास नहीं है। कितनी मुश्किलें उठानी पड़ी, कितने लोग लड़ाई में गये, उसमें हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई भी थे, इनको इसका अहसास नहीं है। आपने देखा कि आज़ादी की लड़ाई के शुरु से ही इनके एक भी आदमी ने आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा नहीं लिया। इसलिए इनको देश की एकता का कोई ख्याल नहीं है इनके दिमाग में 1989 में अयोध्या में इनके नेता ने कहा था, मैं जानता हूं सरकार मन्दिर बनवा सकती है, एक नहीं, 10 मन्दिर बनवा सकती है, एक महीने में बनवा सकती है, सब कुछ हो सकता है, लेकिन इनके दिमाग में तो यह है कि हमको हिन्दू राष्ट्र की स्थापना करनी है और यह इस दिशा में इनकी पहली सिढ़ी है जिसके लिए इन्होंने पूरे देश में उन्माद खड़ा कर के सारे देश को बांटने की

[श्री के० एन० सिंह]

कोशिश की है । मैं समझता हूं कि हम देशवासियों के सामने जाएंगे, हमारे साथी जो यहां बैठे हुए हैं, उन्होंने भी इस बात को महसूस करना शुरु कर दिया है कि इनका असली मकसद क्या है । हमारे अहलुवालिया साहब ने बताया कि 1952 से ले कर इनको कब कितने वोट मिले। लेकिन इन्होंने जो वोट लिया उसके बाद यह कोशिश किया कि हम कैसे इसको आगे बढ़ावें । मैं आज आपको एक खत सुनाता हूं जो मेरे दोस्त का है जिनका नाम है राम केवल खां । सोचिये यह हमारी तहज़ीब है, हमारी संस्कृति है, हमारी धरोहर है । राम केवल खां हिन्दू थे। उनके अजदाद मुसलमान हो गये । हमारे दोस्त आजमी साहब मौजूद हैं । शायद वह भी पहले इसी खानदान से थे। उन्होंने लिखा है कि आज यह खत मैं आपको बड़े दर्द के साथ लिख रहा हूं । हालांकि हमारे यहां सब ठीक है, कोई हादसा नहीं हुआ, थोड़ा सा दोस्तपुर में हल्ला-वल्ला हुआ, लेकिन अब सब ठीक है। पिछले चुनाव में गांव की औरतों ने, सब लोगों ने जनसंघ को वोट दिया था । उनके दिमाग से जनसंघ नहीं जाता है हालांकि इन्होंने बी०जे०पी० नाम रख दिया है, लेकिन वे जनसंघ ही कहते हैं । वे लिखते हैं कि पिछले चुनाव में गांव की औरतों ने जनसंघ को वोट दिया था कि राद का मन्दिर बन जाए, उसमें हमारे घर की औरतें भी शामिल थीं । लेकिन उन्होंने कहा है कि अब क्या करें, इसके बाद अब क्या करें ? राम को हटा दूं तो केवल खां रह जाएगा और अगर राम केवल को हटा दूं तो खाली खां रह जाएगा। तब मैं आता क्या नाम बदलूं । आखिर में उन्होंने एक शेर भी लिखा है, वह यह है कि—

एक बेवफा को दिल दिया, पछता रहा हूं मैं,

अपने किये की आप सजा पा रहा हूं मैं ।

फिर आगे लिखा है—

अहले चमन से अब न दगा करेंगे हम,

हद से बढ़ा जो जुल्म तो बगावत करेंगे हम ।

यह वह खत है जो पहले हिन्दू परिवार था जिसके अजदाद मुसलमान हो गये थे। उसका नाम राम केवल खां है । सोचिये, जो जहर आपने फैलाया है, वह किस हद तक फैला है । उसके घर की औरतों ने राम के नाम पर, शिला पूजन कर के मन्दिर बनवाने की चेष्टा की थी कि राम किसी जमाने में हमारे खानदान से था । मुसलमान होने के बावजूद भी एक दफा पहले शादी ब्राह्मण से होती है फिर निकाह भी होता है । इन पूरी परम्पराओं को आपने कितना नुकसान पहुंचाया है हम जानते हैं आपको इसका अफसोस नहीं होगा क्योंकि आपका मकसद ही यही है? अफसोस तो इन लोगों को है जो हमारे यहां सदन में बैठे हुए हैं । आपको अफसोस नहीं होगा । आप तो अपने मकसद में पूरे हो रहे हैं । इसलिए मैं समझता हूं कि यह आपको सोचना पड़ेगा । मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा क्योंकि मिश्रा जी ने सब बात आपको बता दी हैं । अटल बिहारी वाजपेयी जी भूख हड़ताल पर हैं । हमारे बड़े लिबरल साथी हैं, हमारे बुजुर्ग हैं, मुझे आज बहुत सख्त अफसोस हुआ कि उनके सजेशन को मैंने बहुत बुरी तरह स इन्कार कर दिया कि हमको सबको जाना चाहिए । वाजपेयी जी के बारे में हम सबको भ्रम है । गांधी जी की परम्परा है—जब इन्होंने कौल दिया, चौरी-चौरा में क्रांतिकारियों ने वहां की पुलिस के ऊपर हमला करके जला दिया, तो वे फौरन भूख हड़ताल पर चले गये । उन्होंने कहा कि मुझे अफसोस है कि जो यह कर्म हुआ । वाजपेयी जी अगर आज देश के सामने कहते कि जो आज हुआ है, जो लोग जिंदा जलाये गये हैं जिन औरतों के साथ बलात्कार हुआ, जिन औरतों के साथ उनके मां और बाप के सामने बलात्कार हुआ इसके लिए मुझे अफसोस है इसलिए मैं भूख हड़ताल पर जा रहा हूं तो मैं समझता हूं कि आज यह पूरा सदन आपकी बात की ताईद करता । लेकिन मैं समझता हूं कि वाजपेयी जी ने एक

रास्ता अपनाया और हमारे आपस के साथियों ने जो आज एक मुत्तहिदा दिमाग के जैसे काम करना शुरु कर दिया था कि कम्यूनलिज्म के खिलाफ हमको लड़ाई लड़नी है, मुस्तरिका माहौल बना करके, उसमें भ्रम पैदा करने की कोशिश की कि डेमोक्रेसी के नाम पर हमको अधिकार नहीं दिया जा रहा है ।

आप ललकार दिवस मना रहे हैं । किस बात की ललकार थी आपकी । आप जीते हैं क्या ? मैं समझता हूं कि हमारी सरकार की यह कमजोरी है । अगर प्रतिबंध लगा था आर० एस० एस० पर तो गांधी जी की हत्या के बाद भी लगा था । ये सारे लोग भाग रहे थे घर छोड़कर। उनका पता नहीं चल पा रहा था और आज आप ललकार दिवस मना रहे हैं। यह मैं समझता हूं कि हमारी कमजोरी है, हमारी सरकार की कमजोरी है। मैं समझता हूं कि जरा और सख्ती के साथ बर्ताव करना चाहिए इनके साथ और अगर यह हाथ उठाकर कह दें कि हम आर०एस०एस० के नहीं हैं—माथुर साहब यहां बैठे हैं, कह दें कि हम आर० एस०एस० के नहीं हैं, छोड़ दीजिए उनको हमको कोई एतराज नहीं है। हालांकि मैं जानता हूं कि हमारे सिकन्दर बख्त साहब कन्फ्यूज्ड आदमी हैं। मन में कुछ है, मुंह में कुछ है। बोल नहीं पाते हैं बेचारे। मजबूर हैं। कहीं सोचते हैं बाहर जाएंगे तो क्या हमको लोग कहना शुरू करेंगे। मैं उनकी हालत महसूस करता हूं, कितने धर्मसंकट में हैं... (व्यवधान) कितनी उनको परेशानी है। मुझे पूरा अहसास है। रोजी रोटी की लड़ाई सभी लड़ रहे हैं। वे भी बेचारे लड़ रहे हैं। क्या करें।

मैं समझता हूं कि आज वह दिन आ गया है जबकि हम इस हाउस में बैठे हुए जितने लोग हैं इस बात के बारे में तय करें कि इस देश में यह जो साम्प्रदायिकता का जहर एक फासिस्ट रूप लेता जा रहा है कैसे इससे लड़ा जाए। हम समझते हैं कि कोई बैन से यह लडाई नहीं लडी जाती। इसका मुझे पूरा अहसास है लेकिन जैसा कि मिश्र जी ने कहा कि बैन तो होता है आपको तितर बितर करने के लिए, लड़ाई तो होती है सिद्धांत की और उसके लिए आपको मन बनाना पड़ेगा, हमारे उन साथियों को जो हमारे दल के साथ नहीं हैं, उनके किसी बात में मतभेद हैं, कम से कम एक मसले पर हम तय हो जाएं कि हम इस साम्प्रदायिकता के जहर से लड़ेंगे। जमीन से लेकर दिल्ली तक लड़ेंगे। मैं समझता हूं कि शायद हिंदुस्तान की परम्परा ऐसी है कि जो हमारा साथ देगी।

मैं कल्याण सिंह के बारे में था और लोगों के बारे में इसलिए नहीं कहना चाहता हूं कि काफी बातें कही गयी। कल्याण सिंह के बारे में मेरे दिमाग में मेरे जेहन में बहुत सफाई थी । बहुत ही बैकवार्ड कम्युनिटी के अच्छे टीचर थे । बहुत ही ईमानदार आदमी हैं । लेकिन सुप्रीम कोर्ट में मोहर लग गयी कि इनसे बड़ा बेइमान आदमी कोई नहीं है । सुप्रीम कोर्ट ने यह लगा दिया और उनके वकील ने कह दिया कि हां साहब हमारे क्लायंट ने धोखा दिया । मैं समझता हूं कि शायद कम से कम यह बात है कि अगर वे ठीक 11 बजे 12 बजे इस्तीफा दे दिये होते तभी उनमें ईमानदारी होती कि हमारी बात नहीं मानी गयी । लेकिन उन्होंने इस्तीफा तब दिया जब पूरी मस्जिद का सफाया करके पूरी मस्जिद को वहां से हटा करके वहां कंस्ट्रक्शन शुरु हो गया । तब जाकर उन्होंने इस्तीफा दिया... (व्यवधान)

श्री संघ प्रिय गौतम: वह 36 घंटे के आपके राज में हुआ है ... (व्यवधान)

उपसभापति: अब आप डिस्टर्ब मत करिये... (व्यवधान)

श्री के० एन० सिंह : इसलिए मैं आज आपके माध्यम से यह बताना चाहता हूं सरकार को कि वहां लोग कोशिश कर रहे हैं पूजा करने की, मैं समझता हूं कि यह उचित नहीं होगा । सरकार ने अगर उनको पूजा करने का अवसर दिया तो फिर एक दंगा वहां शुरु होगा, फिर एक लड़ाई शुरु होगी इसलिए जैसे सरदार पटेल ने कदम उठाया था , मुझे याद है उन्होंने कहा था अगर वे हिंदू और मुसलमान नहीं मानते हैं तो जो इडोल — राम तो मेरे पूर्वज थे, राम की जगह से तो मैं आता हूं , राम की मूर्ति अगर चोरी से

[श्री क० एन० सिंह]

रखी गयी है--1949 में उन्होंने कहा था, पटेल ने, तो उसको उठाकर फेंक दो सरयू के अंदर, ऐसी मूर्ति की कोई जरूरत हमको नहीं है। मैं समझता हूं कि उस मूर्ति के बारे में हमको जो वहां पूजा होती थी पहले, एक आदमी सुबह और शाम कर दीजिए, कोई एतराज नहीं होगा। अगर आप आज उस स्थल को पूजा--जैसे हजारों आदमी जो प्लान लेकर जाना चाहता है और उसको पूजा स्थल डेक्लेयर करना चाहते हैं, यह हमारे लिए खतरनाक होगा देश के लिए खतरनाक होगा और खुद राम के राज के लिए खतरनाक होगा।

मैं इन्हीं शब्दों के साथ आपका शुक्रिया अदा करता हूं और उम्मीद करता हूं कि हम साथी सब मिल करके, जो यह जहर है, उसके खिलाफ लड़ाई अच्छी लड़ेंगे।

THE DEPUTY CHAIRMAN: From the Telugu Desam, who will speak? Mr. Khaleelur Rahman. Shrimati Renuka Chowdhury also wants to speak.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): I was granted permission by the Chairman himself yesterday and I do not think I am supposed to share his time.

मैं तो परसों से इंतजार में थी।

I was allotted this time and I rarely ask for permission.

THE DEPUTY CHAIRMAN. If the Chairman has permitted time to you, I will give you. There is no problem. Naturally, I would like the view of women also to go on record.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: This is precisely the reason why I want to speak... (*Interruptions*) ...

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान (आन्ध्र प्रदेश) : जनाब डिप्टी चेयरमैन साहिबा ... (व्यवधान)

†شری محمّد خلیل الرحمٰن : جناب ڈپٹی چیرمین صاحبہ ... "مداخلت" ...

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा) : महोदया, मुझे भी... (व्यवधान)

उपसभापति : उनकी पार्टी का समय है ना... (व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज : अगर उनका समय है, तो जरा इधर का प्वाइंट आफ व्यू भी एक वोमन को तरफ से आ जाए। ... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I do not mind it. We do not go by men and women or any other thing. But here she would like to say. She told me that she wanted to express her feeling... (*Interruptions*) ... I think it is absolutely all right.

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं तो चाहती हूं... (व्यवधान) मैं तो ताईद कर रही हूं कि जरुर दीजिए, लेकिन इधर भी ध्यान रखें।

उपसभापति : आपकी पार्टी को ध्यान रखना चाहिए था कि टाइम देते। आपकी पार्टी ने तो दिया नहीं।... (व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : आप इनको अख्तियार दे रही हैं, दीजिए--एक महिला को दीजिए।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please ... (*Interruptions*) ... Please, I would not permit. Please strengthen my hands and be brief because the details have already been spoken by everybody. Just say what you have to say, only your view point.

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान : थैंक यू वैरी मच। जनाब डिप्टी चेयरमैन साहिबा:

दिल का यह फसाना है कि हर बात बयान करूं,
हालात यह कहते हैं कि लब और जबान सी लूं।
लोगो वफा और किस पर करुं एतबार मैं,
वह मेरे साथ रह कर मुझे लूटने को है।

मोहतरमा डिप्टी चेयरमैन साहिबा, 6 दिसम्बर, 1992 ई0 का वाक्या हमारे सेक्युलर हिंदुस्तान पर एक बदनुमा दाग है। यह वाक्या कोई अचानक नहीं हुआ, बल्कि पिछले कई दिनों से यह बर्निंग टापिक बना हुआ था और हिंदुस्तान का सेक्युलरिज्म धोखे में था। हिंदुस्तान के

सेक्युलर-पसंद अवाम अगर हिंदुस्तान के मुसलमान यह समझे थे कि हमारी जो मरकज़ी हुकूमत है, वह दस्तूर की पूरी-पूरी बागवनी करते हुए सेक्युलरिज्म का भरपूर मुज़ाहरा करेगी और हमारे सेक्युलरिज्म को बचायेगी ।

पिछली जुलाई से इंतहाई खतरनाक सूरतेहाल पैदा हो रही थी। जुलाई में इलाहाबाद हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के हुक्मे-इम्तना के बावजूद भी मुसलसल वहां पर चबूतरे का काम होता रहा और वहां पर रियास्ती हुकूमत और मरकजी हुकूमत दोनों यह खामोश तमाशाई बनी रही और फिर इसके बाद इस मसले को हल करने के लिए आली जनाब वजीरेआज़म की जानिब से तीन माह का टाईम लिया गया। मगर अफसोस कि तीन माह के टाईम बाद उस मसले को हल ही कर दिया। इस मसले की संगीनी को महसूस करते हुए नेशनल इंटेग्रेशन कौंसिल ने 23 नवम्बर को वजीरे आज़म को मुकम्मिल अख्तियारात दिये थे कि वह बाबरी मस्जिद की तहाफुज की खातिर जिस किस्म का भी कदम उठाना चाहते हैं, उठा सकते हैं और फिर इसके बाद 24 नवम्बर को शुरू हुए पार्लियामेंट के सेशन में दोनों एवानों की जानिब से वजीरेआज़म को चोकन्ना किया गया था कि बाबरी मस्जिद खतरे में है, हिंदुस्तान का सेकुलरिज्म खतरे में है, आप इंतहाई होशियार रहिए और किसी न किसी तरह से हिंदुस्तान के सेक्युलरिज्म को और बाबरी मस्जिद का तहाफुज करने की पूरी-पूरी कोशिश कीजिए। मोतरमा वाइस चेयरमैन साहिबा, यह बात समझ में आती है कि बी.जे.पी., विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल और आर.एस.एस. और शिव सेना वगैरह जो इंतहाई फिरकेवाराना तंज़ीमें हैं, इनकी पालिसी तो अयां है, इनकी पालिसी तो अज़हर मनिश्मस है। अब से नहीं कई साल से इनकी पालिसी मुस्लिम दुश्मन है। वह हिन्दुस्तान के सैकुलरिज्म को नुकसान पहुंचाना चाहते हैं। यह सब इनको मालूम है। मगर मैं यह पूछना चाहता हूं कि हमारी मरकज़ी हकूमत जो अपने आपको एक सैकुलर पसंद जमात से ताल्लुक रखने वाली हकूमत कहती है, आखिर उसकी क्या जिम्मेदारी है वह क्यों खामोश तमाशाई बनी रही? हालांकि इस ताल्लुक से मुख्तलिफ किस्म के खदमात थे। खुद हमारे लोक सभा में अपोजिशन के लीडर एल.के. आडवाणी और फिर हमारे यहां के एक मौअज़िज़ रुकन डा. मुरली मनोहर जोशी जो भारतीय जनता पार्टी के सदर भी हैं, उन्होंने जो मथुरा और काशी से दौरे शुरू किए, यहां से वहां तक पब्लिक को जमा करना शुरू किया और यहां तक कि आडवाणी जी ने पहली दिसंबर को जो बयान दिया था कि कार सेवा उस वक्त तक नहीं रुकेगी जब कि राम मंदिर बन न जाए, यह क्या बात है? मैं पूछना चाहता हूं कि क्या यह धमकी नहीं थी? क्या इससे वाज़े इशारे नहीं मिले थे और गुज़िश्ता जुमे के दिन हमारे सुरेश पचौरी जी ने जो कहा कि वह जो यह धर्म संसद का इजलास 4 दिसंबर को होने वाला था वह इजलास बजाय 4 दिसंबर के 5 दिसंबर को हुआ। क्या यह इशारा नहीं था कि इनके अज़ायम खतरनाक हैं और इस किस्म की हरकतें करने वाले हैं और यह बाबरी मस्जिद के तहाफुज़ नामुमकिन हैं? इन तमाम चीज़ों के बावजूद हमारी मरकज़ी हुकूमत एक खामोश तमाशाई बनी रहे यह इंतहाई अफसोस की बात है। आप देखें कि 9 घंटे तक मुसलमाल 6 दिसंबर को इनहदामी कार्यवाही हो रही है। बाबरी मस्जिद शहीद की जा रही है और इन 9 घंटों तक हमारी मरकज़ी हुकूमत का रोल इंतहाई खामोश रोल है। हलांकि एक गुंबद शहीद होने के बाद कम से कम दूसरे दो गुंबदों को बचाया जा सकता था तो हम यह कह सकते थे कि वाकईतन हुकूमत ने पूरी कोशिश की और एक गुंबद शहीद हुआ, दूसरे दो गुंबद बिल्कुल महफूज़ हैं दो गुंबदों के गिरने के बावजूद तीसरी गुंबद महफूज़ रखी जा सकती थी। मगर यह मानाखेज़ बात है, समझ में आने वाली बात नहीं है कि तीन की तीन गुंबदें शहीद हो गई हैं। पूरी तरह

[श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान]

मस्जिद ढहाई गई। फिर उसके बाद वहां के वजीरे आजम कल्याण सिंह जी इस्तीफा देते हैं और फिर उसके बाद यहां की हकूमत वहां पर सदर राज कायम करती है। यह बात समझ में आने वाली नहीं है और इंतहाई मानाखेज बात है। इससे हिन्दुस्तान के सैकुलर पसंद अवाम और हिन्दुस्तान के मुस्लमान यह सोचने पर मजबूर हैं कि क्यों मरकज़ी हकूमत खामोश तमाशाई बनी रही जबकि सिर्फ वहां से 5 किलोमीटर के फासले पर अयोध्या से हमारी सैक्युरिटी फोर्सिस मौजूद थीं और 5 किलोमीटर का रास्ता वह वहां पर नहीं पहुंच सके। यह इंतहाई...

उपसभापति : खलीलुर रहमान साहब अब जरा आगे किसी दूसरे को बुला लें।

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान : नहीं, अभी कितनी देर हुई है, अभी आप मुझे बोलने दीजिए।

उपसभापति : देखिए, सब लोगों को बांटकर टाइम इस्तेमाल होता है। आपके साथी हैं हाउस के मैंबर हैं। उनको एक-एक दो-दो मिनट बोलने का टाइम दे दीजिए।

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान : पार्टी की तरफ से... **(व्यवधान)**

उपसभापति : पार्टी की बात छोड़िए, पार्टी की बात नहीं हो रही है, हाउस के मैंबर्ज़ की बात है।

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान : आप मुझे बोलने दीजिए। 5 मिनट और दीजिए, ज्यादा नहीं। फिर मैडम, मस्जिद ढहाई गई यानी 6 बजे 6 दिसंबर की बात से मुसलसल 40 घंटे तक वहां पर यह कार सेवकों की तरफ से काम होता रहा। वहां पर पूरी मस्जिद का मलबा साफ किया गया। वहां पर मंदिर बना दी गई, वहां पर मूर्तियां बैठा दी गई। वहां पर पुजारी बैठा दिया गया। तो मैं यह पूछना चाहता हूं कि किसके तवसुत से यह हुआ? क्या आपके दौर में नहीं हुआ? क्या आप इसकी अखलाकी जिम्मेदारी कबूल करने के लिए तैयार हैं? आपको इसकी अखलाकी जिम्मेदारी कबूल करनी ही पड़ेगी और फिर इसके बाद दो दिन जो पूरे हिंदुस्तान में, हिंदुस्तान की कोई रियासत नहीं बची जहां पर कि पुलिस की गोली न चली हो। इस दफा मैं आपको बताऊं कि हिंदुस्तान की आजादी के बाद यह पहले किस्म के हिंदुस्तान में फसादात हुए हैं जोकि सिर्फ मुसलमान और हुकूमत की पुलिस के दरमियान हुए हैं, लेकिन मैडम इसमें हमारे हिंदू भाई वाक्यातन काबिले तरीफ हैं कि वह लोग सड़कों पर निकलकर नहीं आए। बेचारे निहत्थे मुसलमान, एक तरफ तो मस्जिद शहीद हुई और पुरअमन एहतजाज करने के लिए जब सड़कों पर निकल आए तो उनके सीने को गोलियों से छलनी किया गया और फिर खास तौर पर आप देखेंगे कि एक ही किस्म की यूनिफॉर्मिटी रही कि गोलियां जो लगी हैं, वह सिर्फ सीने और सिर पर लगी हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या उनको मुनतसिर करने के लिए आंसू गैस का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता था। उनको मुनतसिर करने के लिए क्या लाठी चार्ज नहीं किया जा सकता था? उनको मुनतसिर करने के लिए क्या हवा में फायरिंग नहीं की जा सकती थी? क्यों उनके सीनों और सिरों को गोलियों का निशाना बनाया गया? हजारों मुसलमान शहीद हुए, यह क्या जुल्म है? एक तरफ तो मस्जिद शहीद हुई और दूसरी तरफ हजारों मुसलमानों की जानें गयीं। मगर इसके बावजूद भी हुकूमत ने कोई खास इंतजामात नहीं किए, यह इंतहाई अफसोस की बात है।

उपसभापति : आपका टाइम खत्म हो गया बैठ जाइए।

श्री मोहम्मद खलीलूर रहमान : मैडम मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि लोग घंटों बोलते रहे। 20 मिनिट थे तो डेढ़ घंटा उनको दिया गया, मगर इंतहाई अफसोस की बात है कि...

उपसभापति : गुस्सा मत होइए, बैठिए अगर मैं आपके सामने सब नाम पढ़ूं तो आपको अंदाजा होगा कि इस पर कितने लोग बोलना चाहते हैं। एक मिनिट, आप जरा सुनिए, गुस्सा मत करिए। सवाल यह है कि यह मसला ऐसा है कि हर आदमी को अपनी बात कहने का मौका मिल जाएगा। आप भी वही बात कहेंगे, जो दूसरे कहेंगे और उससे फर्क नहीं पड़ेगा। तो अगर आप थोड़ी-थोड़ी सी हमदर्दी एक-दूसरे के साथ करें तो मुझे लगता हैं कि सब खुश हो जाएंगे। आपने इतना बोला और 5 मिनिट बोलेंगे तो उससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है।

श्री मोहम्मद खलीलुन रहमान : मैडम, मैं आपके तवस्सुत से मतालबा कर रहा हूं कि मरकजी इजारत ने अयोध्या सेल कायम किया था। इस अयोध्या सेल का काम क्या था? क्या अयोध्या सेल और हमारी मरकजी इजारत का जो दाखिला है उसमें एक अंडरस्टेंडिंग चल रही थी या मरकजी इजारत के दाखिला को नजरंदाज कर के मुकम्मल अयोध्या सेल ही सब कुछ करता रहा? मैं मरकजी हुकूमत से यह भी कहना चाहता हूं कि बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी, संतों और साधुओं के दरमियान और हुकूमत के दरमियान जो गुफ्तगू हुई, वह पूरी-की-पूरी प्रोसीडिंग्स, इस हाउस की टेबिल पर रखी जाय और जनाब वजीरे दाखिला, मैं आपसे यह भी डिमांड करता हूं कि मुख्तलिफ इंटलीजेंस एजेंसियों की जानिब से जो आपको रिपोर्ट मिली है, वह पूरी-की-पूरी रिपोर्ट्स आप हाउस की टेबिल पर रखिए।

मैडम, जहां तक मध्य प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश की रियासती हुकूमतों की बेदखली का सवाल है, इन रियासती हुकूमतों की बेदखली कर के आपने बी.जे.पी. को और हीरो बना दिया है। अगर आपको बेदखल करना ही था तो उसी वक्त पहली, दूसरी, तीसरी दिसंबर को यू.पी. की रियासती हुकूमत की बेदखली करते तो यह तमाम नाखुशगवार वाकियात से बच सकते थे।

उपसभापति : खलीलुर रहमान साहब, अब मेरी इब्तदा सुनकर आप बैठ जाइए।

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान : आप ने इस तरह की कार्यवाही की इससे हिंदुस्तान के दस्तूर में आपने एक बड़ी मदाखलत की है।

आपने मुझे बोलने का मौका दिया, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं।

उपसभापति : मुहम्मद मसूद खान।

श्री मोहम्मद मसूद खान : (उत्तर प्रदेश) : मैडम, मैं आगे से बोलना चाहता हूं।

उपसभापति : आप आगे से बोलना चाहते हैं तो पहले पूछ लिया कीजिए, फिर आप अपनी जगह छोड़कर आगे आइए।

شری محمد خلیل الرحمٰن " آندھرا پردیش":
تھینکیو ویری مچ .

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

کرتے ہوئے نیشنل انٹیگریشن کاؤنسل نے ۲۳ نومبر کو وزیراعظم کو مکمل اختیارات دیے تھے کہ وہ بابری مسجد کے تحفظ کی خاطر جس قسم کا بھی قدم اٹھانا چاہتے ہیں اٹھا سکتے ہیں اور پھر اس کے بعد ۲۴ نومبر کو شروع ہوئے پارلیمنٹ کے سیشن میں دونوں ایوانوں کی جانب سے وزیراعظم کو چوکنا کیا گیا تھا کہ بابری مسجد خطرے میں ہے۔ ہندوستان کا سیکولرازم خطرے میں ہے۔ آپ انتہائی ہوشیار رہیے۔ اور کسی نہ کسی طرح ہندوستان کے سیکولرازم کو اور بابری مسجد کا تحفظ کرنے کی پوری پوری کوشش کیجیے۔

محترمہ وائس چیرمین صاحبہ۔ یہ بات سمجھ میں آتی ہے کہ بی۔ جے۔ پی۔ وشو ہندو پریشد اور بجرنگ دل اور آر۔ ایس۔ ایس۔ اور شیو سینا وغیرہ جو انتہائی فرقہ وارانہ تنظیمیں ہیں۔ ان کی پالیسی تو عیاں ہے۔ ان کی پالیسی تو اظہر من الشمس ہے۔ اب سے نہیں کئی سال سے ان کی پالیسی مسلم دشمن ہے اور وہ سیکولرازم کو نقصان پہنچانا چاہتے ہیں۔ یہ سب ان کو معلوم ہے۔ مگر میں یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ ہماری مرکزی حکومت جو اپنے آپ کو ایک سیکولر پسند جماعت سے تعلق رکھنے والی حکومت کہتی ہے۔ آخر اس کی کیا پالیسی ہے۔ وہ کیوں خاموش تماشائی بنی رہی۔ حالانکہ اس تعلق سے مختلف قسم کے خدشات تھے۔ خود ہمارے لوک سبھا میں

جناب ڈپٹی چیرمین صاحبہ —

دل کا یہ فسانہ ہے کہ ہر بات بیان کردوں
حالات یہ کہتے ہیں کہ لب اور زبان سی لوں
لوگو وفا اور کس پر کروں اعتبار میں
وہ میرے ساتھ رہ کر مجھے لوٹنے کو ہے

محترمہ ڈپٹی چیرمین صاحبہ۔ ۶ دسمبر ۱۹۹۲ء کا واقعہ ہمارے سیکولر ہندوستان پر ایک بدنما داغ ہے۔ یہ واقعہ کوئی اچانک نہیں ہوا بلکہ پچھلے کئی دنوں سے یہ برننگ ٹاپک بنا ہوا تھا اور ہندوستان کا سیکولرازم دھوکے میں تھا۔ ہندوستان کے سیکولر پسند عوام اور ہندوستان کے مسلمان یہ سمجھتے تھے کہ ہماری جو مرکزی حکومت ہے وہ دستور کی پوری پوری پاسبانی کرتے ہوئے سیکولرازم کا بھرپور مظاہرہ کرے گی اور ہمارے سیکولرازم کو بچائے گی۔

پچھلی جولائی سے انتہائی خطرناک صورت حال پیدا ہو رہی تھی جولائی میں الہ آباد ہائی کورٹ اور سپریم کورٹ کے حکم امتناعی کے باوجود بھی مسلسل وہاں پر چبوترے کا کام ہوتا رہا اور وہاں پر ریاستی حکومت اور مرکزی حکومت دونوں یہ خاموش تماشائی بنی رہیں اور پھر اس کے بعد اس مسئلہ کو حل کرنے کے لیے عالی جناب وزیراعظم کی جانب سے تین ماہ کا ٹائم لیا گیا۔ مگر افسوس ہے کہ تین ماہ کے ٹائم کے بعد اس مسئلہ کو حل ہی کر دیا۔ اس مسئلہ کی سنگینی کو محسوس

Demolitioh of

اپوزیشن کے لیڈر ایل۔ کے اڈوانی اور پھر ہمارے یہاں کے ایک معزز رکن ڈاکٹر مرلی منوہر جوشی جو بھارتیہ جنتا پارٹی کے صدر بھی ہیں انہوں نے جو متھرا اور کاشی سے دورے شروع کیے یہاں سے وہاں تک پبلک کو جمع کرنا شروع کیا اور یہاں تک کہ اڈوانی جی نے پہلی دسمبر کو جو بیان دیا تھا کہ کارسیوا اس وقت تک نہیں رکے گی۔ جب تک کہ رام مندر نہ بن جائے۔ یہ کیا بات ہے۔ میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا یہ دھمکی نہیں تھی۔ کیا اس سے واضح اشارے نہیں ملے تھے اور گزشتہ جمعہ کے دن ہمارے سریش پچوری جی نے جو کہا وہ جو یہ دھرم سنسد کا اجلاس ۴ دسمبر کو ہونے والا تھا وہ اجلاس بجائے ۴ دسمبر کے ۵ دسمبر کو ہوا۔ کیا یہ اشارہ نہیں تھا کہ ان کے عزائم خطرناک ہیں۔ اور اس قسم کی حرکتیں کرنے والے ہیں اور یہ بابری مسجد کا تحفظ ناممکن ہے۔ ان تمام چیزوں کے باوجود ہماری مرکزی حکومت ایک خاموش تماشائی بنی رہی ہے یہ انتہائی افسوس کی بات ہے۔ آپ دیکھیں کہ ۹ گھنٹے تک مسلسل ۶ دسمبر کو انہدامی کارروائی ہو رہی ہے۔ بابری مسجد شہید کی جا رہی ہے۔ دوران ۹ گھنٹوں تک ہماری مرکزی حکومت کا رول انتہائی خاموش رول ہے۔ حالانکہ ایک گنبد شہید ہونے کے بعد کم سے کم دوسرے دو گنبدوں کو بچایا جا سکتا تھا تو ہم یہ کہہ سکتے تھے کہ واقعتاً حکومت نے پوری کوشش کی۔ اور ایک گنبد شہید ہوا دوسرے دو گنبد بالکل محفوظ رہیں۔ دو گنبدوں کے گرنے کے باوجود تیسری گنبد محفوظ نہیں رکھی جا سکتی تھی۔ مگر یہ معنی خیز بات ہے۔ سمجھ میں آنے والی بات نہیں ہے کہ تینوں گنبدیں شہید ہو گئی ہیں۔ پوری مسجد ڈھائی گئی۔ پھر اس کے بعد وہاں کے وزیر اعلیٰ کلیان سنگھ جی استعفیٰ دیتے ہیں اور پھر اس کے بعد یہاں کی حکومت وہاں پر صدر راج قائم کرتی ہے۔ یہ بات سمجھ میں آنے والی نہیں ہے اور انتہائی معنی خیز بات ہے۔ اس سے ہندوستان کے سیکولر پسند عوام اور ہندوستان کے مسلمان یہ سوچنے پر مجبور ہیں کہ کیوں مرکزی حکومت خاموش تماشائی بنی رہی جبکہ صرف وہاں سے ۵ کلومیٹر کے فاصلے پر ایودھیا سے ہماری سیکیورٹی فورسیز موجود تھیں اور ۵ کلومیٹر کا راستہ وہ وہاں پر نہیں پہنچ سکے۔ یہ انتہائی ...

اپ سبھاپتی: خلیل الرحمٰن صاحب اب ذرا آگے کسی دوسرے کو بلائیں۔

شری محمد خلیل الرحمٰن: نہیں ابھی کتنی دیر ہوئی ہے۔ ابھی آپ مجھے بولنے دیجیے۔

اپ سبھاپتی: دیکھیے سب لوگوں کو بانٹ کر ٹائم کا استعمال ہوتا ہے۔ آپ کے ساتھی ہیں

پولیس کے درمیان ہوئے ہیں۔ لیکن میڈم اس میں ہمارے ہندوستانی واقعتاً قابلِ تعریف ہیں۔ کہ وہ لوگ سڑکوں پر نکل کر نہیں آئے۔ بے چارے۔ نہتے مسلمان۔ ایک طرف تو مسجد شہید ہوئی اور پرامن احتجاج کرنے کے لیے جب سڑکوں پر نکل آئے تو انکے سینوں کو گولیوں سے چھلنی کر دیا گیا۔ اور پھر خاص طور پر آپ دیکھیں گے کہ ایک ہی قسم کی یونیفارمٹی رہی کہ گولیاں جو لگی ہیں وہ صرف سینے اور سر پر لگی ہیں۔ میں یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا انکو منتشر کرنے کے لیے آنسو گیس کا استعمال نہیں کیا جا سکتا تھا۔ انکو منتشر کرنے کے لیے کیا لاٹھی چارج نہیں کیا جا سکتا تھا۔ انکو منتشر کرنے کے لیے کیا ہوا میں فائرنگ نہیں کی جا سکتی تھی۔ کیوں انکے سینوں اور سروں کو گولیوں کا نشانہ بنایا گیا۔ ہزاروں مسلمان شہید ہوئے یہ کیا ظلم ہے۔ ایک طرف تو مسجد شہید ہوئی ہے اور دوسری طرف ہزاروں مسلمانوں کی جانیں گئیں۔ مگر اس کے باوجود بھی حکومت نے کوئی خاص انتظام نہیں کیے۔ یہ انتہائی افسوس کی بات ہے۔

اپ سبھاپتی: آپ کا ٹائم ختم ہو گیا۔ بیٹھ جائیے۔

شری محمد خلیل الرحمٰن: میڈم۔ میری سمجھ میں نہیں آ رہا ہے۔ کہ لوگ گھنٹوں بولتے رہے۔ ۲۰ منٹ تھے تو ڈیڑھ گھنٹہ انکو دیا گیا۔ مگر انتہائی افسوس کی بات ہے کہ ...

ہاؤس کے ممبر ہیں۔ انکو ایک ایک دو دو منٹ بولنے کا ٹائم دے دیجیے۔

شری محمد خلیل الرحمٰن: پارٹی کی طرف سے...

"مداخلت"...

اپ سبھاپتی: پارٹی کی بات چھوڑیئے۔ پارٹی کی بات نہیں ہو رہی ہے۔ ہاؤس کے ممبرز کی بات ہے۔

شری محمد خلیل الرحمٰن: آپ مجھے بولنے دیجیے ۵ منٹ اور دیجیے۔ زیادہ نہیں۔ پھر میڈم مسجد ڈھائی گئی یعنی ۶ بجے ۶ دسمبر کی بات ہے مسلسل ۴۰ گھنٹے تک وہاں یہ کارسیوکوں کی طرف سے کام ہوتا رہا۔ وہاں پر پوری مسجد کا ملبہ صاف کیا گیا۔ وہاں پر مندر بنا دیا گیا۔ وہاں پر مورتیاں بٹھا دی گئیں وہاں پر پجاری بٹھا دیا گیا۔ تو میں یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ کس کے توسط سے یہ ہوا۔ کیا آپ کے دور میں نہیں ہوا۔ کیا آپ اس کی اخلاقی ذمہ داری قبول کرنے کے لیے تیار ہیں۔ آپکو اس کی اخلاقی ذمہ داری قبول کرنی ہی پڑے گی اور پھر اس کے بعد دو دن جو پورے ہندوستان میں ہندوستان کی کوئی ریاست نہیں بچی۔ جہاں پر کہ پولیس کی گولی نہ چلی ہو۔ اس دفعہ میں آپکو بتاؤں ہندوستان کی آزادی کے بعد یہ پہلے قسم کے ہندوستان میں فسادات ہوئے ہیں جو کہ صرف مسلمان اور حکومت کی

اُپ سبھاپتی: غصہ مت ہوئیے بیٹھیے اگر میں آپ کے سامنے سب کے نام پڑھوں تو آپ کو اندازہ ہوگا کہ اس پر کتنے لوگ بولنا چاہتے ہیں۔ ایک منٹ۔ آپ ذرا سنیے۔ غصہ مت کریے۔ سوال یہ ہے کہ یہ مسئلہ ایسا ہے کہ ہر آدمی اپنی بات کہنا چاہتا ہے۔ آپکے ہی سب ساتھی ہیں۔ آپکے ہاؤس کے ممبر ہیں۔ اگر آپ اتنی ہمدردی کریں انکے ساتھ اپنے اپنے ٹائم میں سے دو دو منٹ بانٹ لیں تو مجھے لگتا ہے کہ ہر آدمی کو اپنی بات کہنے کا موقع مل جائے گا۔ آپ بھی وہی بات کہیں گے۔ جو دوسرے کہیں گے اور اس سے فرق نہیں پڑے گا۔ تو اگر آپ تھوڑی سی بھی ہمدردی ایک دوسرے کے ساتھ کریں تو مجھے لگتا ہے کہ سب خوش ہو جائیں گے۔ آپ نے اتنا بولا اور ۵ منٹ بولیں گے تو اس سے کوئی فرق پڑنے والا نہیں ہے۔

شری محمد خلیل الرحمٰن: میڈم میں آپکے توسط سے حکومت سے مطالبہ کر رہا ہوں کہ مرکزی اجارت نے ایودھیا سیل قائم کیا تھا۔ اس ایودھیا سیل کا کام کیا تھا۔ کیا ایودھیا سیل اور ہماری مرکزی اجارت کا جو داخلہ ہے اس میں ایک انڈر اسٹینڈنگ چل رہی تھی کہ یا مرکزی اجارت کے داخلہ کو نظر انداز کر کے کمل ایودھیا سیل ہی سب کچھ کرتا رہا۔ میں مرکزی حکومت سے یہ بھی کہنا چاہتا ہوں کہ بابری مسجد ایکشن کمیٹی۔ سنتوں اور سادھوؤں کے درمیان اور حکومت کے درمیان جو گفتگو ہوئی وہ پوری کی پوری پروسیڈنگس۔ اس ہاؤس کی ٹیبل پر رکھی جائے اور جناب وزیر داخلہ۔ میں آپ سے یہ بھی ڈیمانڈ کرتا ہوں کہ مختلف انٹیلیجنس ایجنسیوں کی جانب سے جو آپ کو رپورٹ ملی ہیں۔ وہ پوری کی پوری رپورٹس آپ ہاؤس کی ٹیبل پر رکھیے۔

میڈم جہاں تک مدھیہ پردیش۔ راجستھان اور ہماچل پردیش کی ریاستی حکومتوں کی بےدخلی کا سوال ہے۔ ان ریاستی حکومتوں کی بےدخلی کر کے آپ نے بی۔ جے۔ پی کو اور ہیرو بنا دیا ہے۔ اگر آپ کو بےدخل کرنا ہی تھا تو اسی وقت پہلی۔ دوسری تیسری دسمبر کو یو۔ پی۔ کی ریاستی حکومت کو بےدخل کرتے تو یہ تمام ناخوشگوار واقعات سے بچ سکتے تھے۔

اُپ سبھاپتی: خلیل الرحمٰن صاحب اب میری ابتدا سن کر آپ بیٹھ جائیے۔

شری محمد خلیل الرحمٰن: آپ نے اس طرح کی کارروائی کی اس سے ہندوستان کے دستور میں آپ نے ایک بڑی مداخلت کی ہے۔ آپ نے مجھے بولنے کا موقع دیا میں آپ کا شکریہ ادا کرتا ہوں۔

श्री मुहम्मद मसूद खान : मोहतरमा,...

شری محمد مسعود خاں "اتر پردیش" : محترمہ ...

उपसभापति : पहले यह कहिए कि म यहां से बोल सकता हूं। आप पहले मुझसे इजाजत लीजिए कि मैं आगे से बोलूं कि नहीं।

श्री मुहम्मद मसूद खान : माननीया, मैंने इजाजत वहीं से ले ली।

شری محمد مسعود خاں : مانئیہ میں نے اجازت وہیں سے لے لی۔

उपसभापति : मैंने दी नहीं है अभी।

श्री मोहम्मद मसूद खान : अच्छा, नहीं सुना तो फिर इजाजत ले लेता हूं। मैं यहां से बोलने की इजाजत चाहता हूं।

شری محمد مسعود خاں : اچھا نہیں سنا تو پھر اجازت لے لیتا ہوں۔ میں یہاں سے بولنے کی اجازت چاہتا ہوں۔

उपसभापति : हां, अब दे दी। बोलिए। एक गुजारिश है आपसे कि पांच मिनट ही बोलिएगा।

श्री मुहम्मद मसूद खान : हमारे 18 मिनट से आप इतना काट देंगे?

شری محمد مسعود خاں : ہمارے ۱۸ منٹ سے آپ اتنا کاٹ دیں گے۔

उपसभापति : आपका अकेला नहीं है, यह तीन लोगों में बंटा हुआ है।

श्री मुहम्मद मसूद खान : अच्छा, दो मिनट तो चला गया।

شری محمد مسعود خاں : اچھا دو منٹ تو چلا گیا۔

उपसभापति : नहीं, वह काउण्ड नहीं होगा। आप जब मुंह खोलेंगे तब से काउण्ट होगा। इसलिए पांच मिनट बोलिए।

श्री मुहम्मद मसूद खान : मोहतरमा डिप्टी चेयरमेन साहिबा, मैं सिर्फ आपसे यही कहना चाहता हूं कि मैं सुन्नी हूं, सुनता ज्यादा हूं, बोलता कम हूं। लिहाजा मेरे बोलने में रोकिए मत, बोलने दीजिए।

شری محمد مسعود خاں : محترمہ ڈپٹی چیرمین صاحبہ۔ میں صرف آپ سے یہی کہنا چاہتا ہوں کہ میں سنّی ہوں۔ سنتا زیادہ ہوں بولتا کم ہوں۔ لہذا میرے بولنے میں روکیے مت بولنے دیجیے۔

उपसभापति : फिर आपकी पार्टी से कोई बोल नहीं पाएगा।

श्री मुहम्मद मसूद खान : मोहतरमा,

महसूस हमें होता है यह दौरे तबाही है।
शीशे की अदालत है, पत्थर की गवाही है।

मोहतरमा, 15 अगस्त, सन 1947 के बाद 6 दिसंबर, सन् 1992 का हादसा सबसे बड़ा हादसा है। अगर मैं यह कहूं कि 15 अगस्त, 1947 से भी यह बड़ा हादसा है तो गलत नहीं होगा क्योंकि उस समय मुल्क का पार्टिशन हुआ और फंसादात का एक सिलसिला शुरू हो गया, उस वक्त हमारे पास अदलिया नहीं थी, उस वक्त हमारे पास

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

तजुर्बेकार इंतजामिया नहीं थी, उस वक्त हमारे पास दोनों पार्लियामेंट नहीं थी, लेकिन 6 दिसंबर, 1992 को जो हादसा हुआ तो अदलिया भी थी, इंतजामिया भी थी तजुर्बेकार और दोनों पार्लियामेंट भी थीं। सुप्रीमकोर्ट में बयान हलफी दाखिल की गई कि बाबरी मस्जिद का जरा भी नुकसान नहीं किया जाएगा। दोनों एवानों में यह एतमाद दिया गया कि जरा भी नुकसान नहीं होगा। सरकार की तरफ से भी कहा गया कि जरा भी नुकसान नहीं होगा। पब्लिक स्टेज से कुछ दूसरे रहनुमाओं ने यहां तक कह दिया कि अगर बाबरी मस्जिद पर कोई हथौड़ा चलेगा तो हमारे सिर पर चलेगा। लेकिन, उसके बाद 6 दिसंबर को क्या हुआ? 6 दिसंबर को पूरी की पूरी बाबरी मस्जिद नेस्त-नाबूद कर दी गई। हो सकता है लोगों को उन वादों पर एतबार हो, लेकिन मुझे एतबार नहीं था।

तेरे वादे पर जिए, यह जान झूट जाना।
कि खुशी से मर न जाते अगर एतबार होता।

[उपसभाध्यक्ष (श्रीमती जयन्ती नटराजन) पीठासीन हुई]

मोहतरमा, हमको एतबार नहीं था। हमने 3 दिसंबर को इसी हाउस में मोहतरमा होम मिनिस्टर साहब से सवाल किया था कि 6 दिसंबर को वह मस्जिद को शहीद करेंगे, आप नहीं जानते हों, पूरा सदन जानता है, पूरा देश जानता है कि 6 दिसंबर को यह मस्जिद को शहीद करेंगे, आप सिर्फ हमको यह बता दीजिए कि उस मस्जिद को शहीद होने से आप कैसे रोक पाएंगे? सिर्फ एक क्लेरीफिकेशन उस पर मैंने मांगा था। अफसोस यह कि अगर क्लेरीफिकेशन दिया भी तो उस पर पाबंदी से अमल नहीं हुआ। आज मैं अपने बी.जे.पी. के भाइयों से यह पूछना चाहता हूं कि क्या करना चाहते हो इस देश में? उन मसाजिद को मिसमार करना चाहते हो? उस कौम को फना करना चाहते हो, जिस कौम के लोगों ने जालियांवाला बाग में अपने खून बहाए थे कि मुल्क आजाद हो? उस कौम को आप फना करना चाहते हो, जिसने काले पानी की सजाएं, फांसी की सजाएं और सब सजाएं भोगी थी।

आखिरी बात, मोहतरमा, बताना चाहता हूं कि मुस्लिम शायर अपने हदूद से भी आगे चले गए थे। उन्होंने यहां तक कह दिया था कि गुलाम कौम का सजदा हराम होता है। मस्जिद में उन्होंने कह दिया था कि जब तुम आजादी नहीं लेते हो, तुम्हारा सजदा भी जायज नहीं होता, लिहाजा पहले जंगो-जेहाद आजादी के लिए लड़ो। उस कौम को आप फना करना चाहते हो? उसकी तारीख वाक्यात को मिटाना चाहते हो? आप तारीख पर नजर डालिए। एक बहुत बड़ा बादशाह, जिसको मुगल पीरिएड का बहुत बड़ा बादशाह कहा जाता था, उसने एक मजहब ईजाद किया, लेकिन नहीं पनपा। उसने इलाहाबाद को अकबराबाद कहना चाहा, वह नहीं हुआ। आप किस बलबूते पर तारीख बदलेंगे, नाम बदलेंगे और इबादतगाहों को गिराएंगे? आप यकीन जानिए कि तारीख का यह सच है कि तारीख को मिटाने वाला खुद मिट जाता है और तारीख नहीं मिटती लिहाजा आज जरूरत है कि हम अपने तारीख वाक्यात को न भूलें।

मोहतरमा, एक बात सिर्फ अर्ज करना चाहता हूं कि 15 अगस्त, 1947 को एक कीमती चीज हमारे पास बाकी थी और वह भी एतमाद रहनुमाओं का। पंडित नेहरू का उन लोगों ने एतमाद किया था, उस पर कौम को पूरा भरोसा था। आज हम परेशान हैं अपने जिले में जाने के वास्ते। लोग पूछते हैं कि किस बात पर भरोसा किया जाए। आज वह एतमाद टूट गया। आज एतमाद नहीं है। आप कैसे यह फिजां बहाल करेंगे? आप कैसे मुल्क को तामीर व तरक्की की तरफ ले जाएंगे? जो सबसे बड़ा खतरा हुआ इस देश में,

[श्री मुहम्मद मसूद खान]

वह एतमाद का खो देना हुआ । मैं फिर आपसे अर्ज करना चादता हूं कि एतमाद बहुत बड़ी चीज है । मुझको याद है तारीख का वह पन्ना, जब वारेन हेस्टिंग ने इस मुल्क में जुल्म किया था तो ब्रिटिश पार्लियामेंट में इम्पीचमेंट आफ वारेन हेस्टिंग की हिस्टरी लिखी गई थी । मैं तवक्को करता था कि इस वाक्ये के बाद सब लोग मिलकर न किसी पार्टी का नाम लेते, न किसी की भूल चूक का नाम लेते, न किसी की दगाबाजी का नाम लेते, लेकिन आज पार्लियामेंट से हमको यह हथियार मिल जाता कि सबने मिलकर के इम्पीचमेंट आफ वारेन हेस्टिंग की तरह उन लोगों को इम्पीच किया है जिनके कारण 6 दिसम्बर को यह हादसा हुआ। आज हम किस मुंह से अपने जिले में जाएं, किस मुंह से अपने भाइयों का एतमाद बहाल करें, कुछ तो आप हमको हथियार दीजिए । कुछ तो आप ऐसी फिजां बनाइए, जिस फिजां में हम वह हथियार लेकर जाएं । हमको कोई शिकायत नहीं है, हम इस हक में नहीं हैं कि सैंट्रल गवर्नमेंट टूट जाए, रहे सैंट्रल गवर्नमेंट, लेकिन आप कुछ तो सोचिए कि आपने क्या किया ? आपने हाउस में ऐलान किया और बी०बी०सी० से ऐलान किया गया, मैं भी गवर्नमेंट में था और अगर मैं होता केबिनेट में तो केबिनेट को बैठाए रखता, खिसकने न देता, न जाने कब कौन सा वाक्या हो जाए । आप इंतजार करते रहे कि जब मस्जिद पूरी तरफ से फना हो जाए, तब केबिनेट की मीटिंग हो ? इतना उन लोगों पर भरोसा किया, हम लोगों पर नहीं भरोसा किया जिसने 3 तारीख को साफ शब्दों में कहा था कि अक़बाल, अफ़जाल, आमाल, हर तरह से साबित है कि ये मस्जिद को ध्वस्त करेंगे 6 दिसम्बर को, आप बताइए क्या करना चाहते हैं ? तो मोहतरमा, मैं फिर आपसे यह कहना चाहता हूं कि जो रोल... (समय की घंटी)... होना चाहिए था, 6.00 बजे तक बी०बी०सी० से खबर आ गई, यहां खबर नहीं मिली और उसके बाद फसादात का पहाड़ टूट पड़ा । कानपुर में, मान लीजिए कि हमारे पास वाक्यात है कि जब कानपुर में लोग गए शिकायत करने तो उन अधिकारियों ने कहा कि हमारा कोई ठीक से पता नहीं कि कब तक रहेंगे और जैसा अभी मेरे एक दोस्त बता रहे थे कि मुनज्जम साजिश के तहत कानपुर का साजिश किया गया। भोपाल में हमको किसी ने बताया, पता नहीं कहां तक सही है, कि कार-सेवक जब लौटकर गए तो होम गार्ड्स की वर्दी पहनकर उन्होंने फसादात् कराए। मैं एक चीज़ जानना चाहता हूं, आज मुल्क के सामने सवाल है कि सूरत में कैसे हुआ, बम्बई और महाराष्ट्र में कैसे हुआ ? महाराष्ट्र के आप आंकड़े सामने रख लीजिए, चव्हाण साहब, मैं भी वहां से वाकिफ हूं, आजमगढ़ (यू.पी.) के बहुत से लोग वहां पर हैं, उनको मारने, लूटने और जलाने का एक सारा चार्ट बनाइए तो पता यह चलेगा कि वहां के जो सरकारी अधिकारी थे, उनके अंदर शिव सेना के वे लोग थे जो नहीं चाहते थे कि नान महाराष्ट्रियन बम्बई में रहें, उन्हीं को लूटा गया। मेरे गांव की औरतें और बच्चे, जो कुछ नहीं कर रहे थे, पुलिस वालों ने जबर्दस्ती उनको निकालकर शूट किया, उनकी दुकानों को लूट लिया, जला दिया। इसका क्या जवाब है ? यह क्यों हुआ, कैसे हुआ ? बी.जे.पी. वाले हमारे मुखालिफ थे, बी.जे.पी. से हम उम्मीद नहीं कर सकते थे, उनकी सरकारों से और आपने बी०जे०पी० सरकार को जो डिसमिस किया, मैं कहता हूं कि वह ठीक किया, मगर देर में किया । अगर आप 15 नवम्बर को डिसमिस करके सब चीजें अपने हाथ में ले लेते तो ठीक रहता । आप सोचेंगे और सरकार में भी रहेंगे ? सरकार में तो वक्त से अगर कोई फैसला किया जाता है तो उस पर अमल सही होता है । अगर सोचते रहेंगे कि यह करेंगे, यह करेंगे, यह करेंगे तो जाहिर बात है कि उसका वही हश्र होता है जो आज इस मुल्क के अंदर हुआ ।... (समय की घंटी)... तो मैं एक बात यह कहना चाहता हूं कि आप सिर्फ यह बताइए कि महाराष्ट्र और सूरत में जो टॉप के अधिकारी हैं, वे सस्पेंड हुए हैं या नहीं ? ट्रांसफर कोई चीज़ नहीं है, अगर वे

सस्पेंड हो गए हैं तो बताइए ? सारी जिम्मेदारी उनके ऊपर डालिए, हम तो यह कहते हैं कि मुख्य मंत्री के ऊपर डालनी चाहिए, लेकिन अगर किसी वजह से आप नहीं डालना चाहते तो उन अधिकारियों पर सारी जिम्मेदारी डालिए ।

इसी के साथ आखिरी बात कहकर मैं अपनी बात समाप्त करूंगा । उत्तर प्रदेश में जो जिले अयोध्या के करीब थे, उन्होंने कर्फ्यू नहीं लगाया, उन्होंने पूरी तरह से जिले को कंट्रोल कर लिया । खुद मेरे जिले में जब 6 तारीख को यह वाकया हुआ तो मैंने यह कहा कि आज पार्लियामेंट में जाना ठीक नहीं, आज मेरी खिदमत की जरुरत मेरे जिले के अंदर है और एक वक्त आया जब कि पथराव और पी० ए०सी० दोनों आ गए तो मैं दोनों के बीच में खड़ा हो गया ।

उनसे मैंने कहा, पी०ए०सी० और एडमिनिस्ट्रेशन से कहा कि एक कदम आगे मत बढ़ो, गुस्सा है, मैं शांत हूं और उनके पास मैं गया । मैंने कहा कि इस गुस्से से कुछ होने वाला नहीं है। इस वक्त अपने जोश को होश में बदलकर काम करना चाहिए । दोनों ने मेरी अपील को मंजूर किया । मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर उत्तर प्रदेश में, फैजाबाद डिविजन में किसी जिले में, किन्हीं अधिकारियों ने बहुत हुस्न, खूबी के साथ मामला बचाया है, तो उनको इनाम देना चाहिए और जिन लोगों ने नहीं किया है, उनको जितनी सख्त सजा होनी चाहिए उतनी सख्त सजा देनी चाहिए । आखिर में, मैं सिर्फ एक बात कहना चाहता हूं । **(व्यवधान)**

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): You will have to finish now. Please conclude.

श्री मुहम्मद मसूद खान: अच्छा, आपकी बात मानली ।

कुछ सम्मानित सदस्य : आखिरी बात तो बोल दीजिए ।

श्री महम्मद मसूद खान : आखिरी बात कुरवान करता हूं ।

شری محمد مسعود خاں: محترمہ۔
محسوس نہیں ہوتا ہے یہ دور تباہی ہے
شیشے کی عدالت ہے۔ پتھر کی گواہی ہے
محترمہ۔ ۱۵ اگست ۱۹۴۷ء کے بعد ۶ دسمبر ۱۹۹۲ کا حادثہ سب سے بڑا حادثہ ہے۔ اگر میں یہ کہوں کہ ۱۵ اگست ۱۹۴۷ سے بھی یہ بڑا حادثہ ہے تو غلط نہیں ہوگا۔ کیونکہ اس سمے ملک کا پارٹیشن ہوا اور فسادات کا ایک سلسلہ شروع ہو گیا اس وقت ہمارے پاس عدلیہ نہیں تھی اس وقت ہمارے پاس تجربہ کار انتظامیہ نہیں تھی اس وقت ہمارے پاس دونوں پارلیمنٹ نہیں تھیں لیکن ۶ دسمبر ۱۹۹۲ کو جو حادثہ ہوا تو عدلیہ بھی تھی انتظامیہ بھی تھی تجربہ کار اور دونوں پارلیمنٹ بھی تھیں۔ سپریم کورٹ میں بیان حلفی داخل کی گئی کہ بابری مسجد کا ذرا بھی نقصان نہیں کیا جائیگا۔ دونوں ایوانوں میں یہ اعتماد دیا گیا کہ ذرا بھی نقصان نہیں ہوگا۔ سرکار کی طرف سے بھی کہا گیا کہ ذرا بھی نقصان نہیں ہوگا۔ پبلک اسٹیج سے کچھ دوسرے رہنماؤں نے یہاں تک کہہ دیا کہ اگر بابری مسجد پر کوئی ہتھوڑا چلائے گا تو ہمارے سر پر چلے گا۔ لیکن اس کے بعد ۶ دسمبر کو کیا ہوا۔

†[ ]Transliteration in Arabic Script.

۶ دسمبر کو پوری بابری مسجد نیست و نابود کر دی گئی۔ ہو سکتا ہے لوگوں کو ان باتوں پر اعتبار نہیں تھا...

تیرے وعدہ پہ جئے ہم تو یہ جان جھوٹ جانا
کہ خوشی سے مر نہ جاتے اگر اعتبار ہوتا

(اپ سبھا ادھیکش شریمتی جینتی نٹراجن پیٹھا سین ہوئیں)

محترمہ۔ ہم کو اعتبار نہیں تھا۔ ہم نے ۳ دسمبر کو اسی ہاؤس میں محترم ہوم منسٹر صاحب سے سوال کیا تھا کہ ۶ دسمبر کو وہ مسجد کو شہید کریں گے آپ نہیں جانتے ہوں پورا سدن جانتا ہے پورا دیش جانتا ہے کہ ۶ دسمبر کو یہ مسجد کو شہید کریں گے۔ آپ صرف ہم کو یہ بتا دیجیے کہ اس مسجد کو شہید ہونے سے آپ کیسے روک پائیں گے۔ صرف ایک کلیری فیکیشن اس پر میں نے مانگا تھا۔ افسوس یہ ہے کہ اگر کلیری فیکیشن دیا بھی تو اس پر پابندی سے عمل نہیں ہوا۔ آج میں اپنے بی۔جے۔پی کے بھائیوں سے یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا کرنا چاہتے ہو اس دیش میں۔ ان مساجد کو مسمار کرنا چاہتے ہو۔ اس قوم کو فنا کرنا چاہتے ہو جس قوم کے لوگوں نے جلیانوالا باغ میں اپنے خون بہائے تھے کہ ملک آزاد ہو۔ اس قوم کو آپ فنا کرنا چاہتے ہو جس نے کالے پانی کی سزائیں۔ پھانسی کی سزائیں اور سب سزائیں بھوگی تھیں۔

آخری بات۔ محترمہ بتانا چاہتا ہوں کہ مسلم شاعر اپنے حدود سے بھی آگے چلے گئے تھے۔ کہ غلام قوم کا سجدہ حرام ہوتا ہے۔ مسجد میں انھوں نے کہہ دیا تھا کہ جب تک تم آزادی نہیں لیتے ہو۔ تمہارا سجدہ بھی جائز نہیں ہوتا۔ لہذا پہلے جنگ و جہاد آزادی کے لیے لڑو۔ اس قوم کو آپ فنا کر دینا چاہتے ہو۔ اس کے تاریخی واقعات کو مٹانا چاہتے ہو۔ آپ تاریخ پر نظر ڈالیے۔ ایک بہت بڑا بادشاہ جس کو مغل پیریڈ کا بہت بڑا بادشاہ کہا جاتا تھا۔ اس نے ایک مذہب ایجاد کیا لیکن نہیں پنپا۔ اس نے الہ آباد کو اکبر آباد کہنا چاہا وہ نہیں ہوا۔ آپ کس بل بوتے پر تاریخ بدلیں گے نام بدلیں گے اور عبادت گاہوں کو گرائیں گے۔ آپ یقین جانیے کہ تاریخ کا یہ سچ ہے کہ تاریخ کو مٹانے والا خود مٹ جاتا ہے اور تاریخ نہیں مٹتی۔ لہذا آج ضرورت ہے کہ ہم اپنے تاریخی واقعات کو نہ بھولیں۔

محترمہ۔ ایک بات صرف عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ۱۵ اگست ۱۹۴۷ کو ایک قیمتی چیز ہمارے پاس باقی تھی اور وہ بھی اعتماد رہنماؤں کا۔ پنڈت نہرو کا ان لوگوں نے اعتماد کیا تھا۔ اس پر قوم کو پورا بھروسہ تھا آج ہم پریشان ہیں اپنے ضلع میں جانے کے واسطے۔ لوگ

لوگ پوچھتے ہیں کہ کس بات پر بھروسہ کیا جائے۔ آج وہ اعتماد ٹوٹ گیا آج اعتماد نہیں ہے۔ آپ کیسے یہ فضا بحال کریں گے آپ کیسے ملک کو تعمیر و ترقی کی طرف لے جائیں گے۔ جو سب سے بڑا خطرہ ہوا اس دیش میں وہ اعتماد کا کھو دینا ہوا۔ میں پھر آپ سے عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اعتماد بہت بڑی چیز ہے مجھ کو یاد ہے۔ تاریخ کا وہ پنّا جب وارن ہیسٹنگ نے اس ملک میں ظلم کیا تھا تو برٹش پارلیمنٹ میں امپیچمنٹ آف وارن ہیسٹنگ کی ہسٹری لکھی گئی تھی۔ میں توقع کرتا تھا اس واقعہ کے بعد سب لوگ نہ کسی پارٹی کا نام لیتے نہ کسی کی بھول چوک کا نام لیتے نہ کسی کی دغابازی کا نام لیتے لیکن آج پارلیمنٹ سے ہم کو یہ ہتھیار مل جاتا کہ سب نے مل کر امپیچمنٹ آف وارن ہیسٹنگ کی طرح ان لوگوں کو امپیچ کیا ہے جنکے کارن ۶ دسمبر کو یہ حادثہ ہوا۔ آج ہم کس منہ سے اپنے ضلع میں جائیں کس منہ سے اپنے بھائیوں کا اعتماد بحال کریں۔ کچھ تو آپ ہم کو ہتھیار دیجیے۔ کچھ تو آپ ایسی فضا بنائیے جس فضا میں ہم وہ ہتھیار لے کر جائیں۔ ہم کو کوئی شکایت نہیں ہے۔ ہم اس حق میں نہیں ہیں کہ سنٹرل گورنمنٹ ٹوٹ جائے۔ رہے سنٹرل گورنمنٹ۔ لیکن آپ

کچھ تو سوچئے کہ آپ نے کیا کیا۔ آپ نے ہاؤس میں اعلان کیا اور بی۔ بی۔ سی سے اعلان کیا گیا۔ میں بھی گورنمنٹ میں تھا اور اگر میں ہوتا کیبنٹ میں تو کیبنٹ کو بٹھائے رکھتا کھسکنے نہ دیتا۔ نہ جانے کب کونسا واقعہ ہو جائے۔ آپ انتظار کرتے رہے کہ جب مسجد پوری طرح سے فنا ہو جائے تب کیبنٹ کی میٹنگ ہو۔ اتنا ان لوگوں پر بھروسہ کیا۔ ہم لوگوں پر نہیں بھروسہ کیا۔ جس نے ۳ تاریخ کو صاف شبدوں میں کہا تھا کہ اقوال۔ افعال۔ اعمال۔ ہر طرح سے ثابت ہے کہ مسجد کو دھرست کریں گے ۶ دسمبر کو آپ بتایئے کیا کرنا چاہتے ہیں۔ تو محترمہ میں پھر آپ سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ جو رول ... "وقت کی کھنٹی" ..... ہونا چاہیے تھا۔ ۶ بجے تک بی۔ بی۔ سی۔ سے خبر آگئی یہاں خبر نہیں ملی۔ اور اس کے بعد فسادات کا پہاڑ ٹوٹ پڑا۔ کانپور میں مان لیجیے کہ ہمارے پاس واقعات ہیں کہ کانپور میں لوگ گئے شکایت کرنے تو ان ادھیکاریوں نے کہا کہ ہمارا ٹھیک سے پتہ نہیں کب تک رہیں گے۔ جیسا ابھی ہمارے دوست بتا رہے تھے کہ منظم سازش کے تحت کانپور کا سازش کیا گیا۔ بھوپال میں ہم کو کسی نے بتایا پتہ نہیں کہاں تک صحیح ہے کہ کارسیوک جب لوٹ کر گئے تو—

ہوم گارڈس کی وردی پہن کر انھوں نے فسادات کرائے۔ میں ایک چیز جاننا چاہتا ہوں۔ آج ملک کے سامنے سوال ہے کہ سورت میں کیسے ہوا۔ بمبئی اور مہاراشٹر میں کیسے ہوا۔ مہاراشٹر کے آپ آنکڑے سامنے رکھ لیجیے چوان صاحب۔ میں بھی وہاں سے واقف ہوں اعظم گڑھ اور یو۔پی کے بہت سے لوگ وہاں پر ہیں انکو مارنے لوٹنے اور جلانے کا ایک سارا چارٹ بنائیے تو پتہ یہ چلے گا کہ وہاں کے جو سرکاری ادھیکاری تھے انکے اندر شیو سینا کے وہ لوگ تھے جو نہیں چاہتے تھے کہ نان مہاراشٹرین بمبئی میں رہیں۔ انہی کو لوٹا گیا۔ میرے گاؤں کی عورتیں اور بچے جو کچھ نہیں کر رہے تھے پولیس والوں نے زبردستی انکو نکال کر شوٹ کیا۔ انکی دکانوں کو لوٹ لیا جلا دیا۔ اس کا کیا جواب ہے یہ کیوں ہوا کیسے ہوا۔

بی۔ جے۔ پی والے ہمارے مخالف تھے بی۔ جے۔ پی سے ہم امید نہیں کر سکتے تھے انکی سرکاروں سے۔ اور آپ نے جو ڈی۔ سی۔ پی کو ڈسمس کیا میں کہتا ہوں وہ ٹھیک کیا مگر دیر میں کیا۔ آپ اگر ۱۵ نومبر کو ڈسمس کر کے سب چیزیں اپنے ہاتھ میں لے لیتے تو ٹھیک رہتا۔ آپ سوچیں گے اور سرکاریں بھی رہیں گے سرکار میں تو وقت سے اگر کوئی فیصلہ کیا جاتا ہے تو اس پر عمل صحیح ہوتا ہے۔ اگر سوچتے رہینگے کہ کریں گے یہ کریں گے یہ کریں گے تو ظاہر بات ہے کہ اس کا وہی حشر ہوتا ہے جو آج اس ملک کے اندر ہوا... "وقت کی گھنٹی"... تو میں ایک بات یہ کہنا چاہتا ہوں کہ آپ صرف یہ بتائیے کہ مہاراشٹر اور سورت میں جو ٹاپ کے ادھیکاری ہیں۔ وہ سسپینڈ ہوئے یا نہیں۔ ٹرانسفر کوئی چیز نہیں ہے۔ اگر وہ سسپینڈ ہو گئے ہیں تو بتائیے۔ ساری ذمہ داری ان کے اوپر ڈالیے۔ ہم تو یہ کہتے ہیں کہ مکھیہ منتری کے اوپر ڈالنی چاہیے۔ لیکن اگر کسی وجہ سے آپ نہیں ڈالنا چاہتے تو ان ادھیکاریوں پر ساری ذمہ داری ڈالیے۔

اسی کے ساتھ آخری بات کہہ کر میں اپنی بات سماپت کروں گا۔ اتر پردیش میں جو ضلع ایودھیا کے قریب تھے۔ انھوں نے کرفیو نہیں لگایا۔ انہوں نے پوری طرح سے ضلع کو کنٹرول کر لیا۔ خود میرے ضلع میں جب ۶ تاریخ کو یہ واقعہ ہوا۔ تو میں نے یہ کہا کہ آج پارلیمنٹ میں جانا ٹھیک نہیں۔ آج میری خدمت کی ضرورت میرے ضلع کے اندر ہے اور ایک وقت آیا جب کہ پتھراؤ اور پی۔ اے۔ سی۔ دونوں آ گئے۔ تو میں دونوں کے بیچ میں کھڑا ہو گیا۔ ان سے میں نے کہا۔ پی۔ اے۔ سی۔ اور ایڈمنسٹریشن سے کہا کہ ایک قدم آگے مت بڑھو۔ غصہ ہے۔

میں شانت کرتا ہوں اور ان کے پاس میں گیا۔ میں نے کہا کہ اس غصہ سے کچھ ہونے والا نہیں ہے۔ اس وقت اپنے جوش کو ہوش میں بدل کر کام کرنا چاہیے۔ دونوں نے میری اپیل کو منظور کیا۔ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اگر اتر پردیش میں۔ فیض آباد ڈویژن میں کسی ضلع میں۔ کن ہی ادھیکاریوں نے بہت حسن و خوبی کے ساتھ معاملہ بچایا ہے۔ تو ان کو انعام دینا چاہیے اور جن لوگوں نے نہیں کیا ہے ان کو جتنی سخت سزا ہونی چاہیے۔ اتنی سخت سزا دینی چاہیے۔ آخر میں، میں صرف ایک بات کہنا چاہتا ہوں... مداخلت...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): You will have to finish now. Please conclude.

شری محمد مسعود خاں : اچھا آپکی بات مان لی۔

کچھ معزز ممبران : آخری بات تو بول دیجیے۔

شری محمد مسعود خاں : آخر بات کو قربان کرتا ہوں۔

SHRI P. UPENDRA (Andhra Pradesh): Madam Vice-Chairman, what has happened at Ayodhya on December 6 is the most shameful event in India's history, which has brought down the prestige of the country and destroyed all the values that this country has stood for. It is obvious that the Prime Minister trusted the assurances of the leaders of both the BJP and RSS, and he was betrayed. I also happened to talk to Mr. Shekhawat on December 4, and he also assured that nothing untoward would happen on December 6 and only a symbolic kar seva would be there.

It is very clear, Madam, that the BJP had resorted to the most reckless action, supported by its front organisations, and Mr. Advani's behaviour was as reckless as it was in 1990. But, in spite of that, we held him in high esteem and we believed him when he assured that nothing serious would happen on that day. Even when he said in Azamgarh on December 2 that the kar seva would be done with shovels and pickaxes, still he denied it and the Home Minister also certified that Mr. Advani never meant it. But it was a preplanned action, as borne out by certain circumstantial evidence.

The first is, how can construction material, the masons and engineers could come there within minutes and finish the work in such a record time? The second is, on December Mr. Advani was supposed to have called the kar sevaks to block the road to Ayodhya to prevent the Central forces from going there. I do not knew whether it is brone out by the video tape which is said to be in possession of the Government. Mr. Moreshwar Save, the Shiv Sena M.P., is on record saying that 5,000 kar sevaks were trained in the Chambal valley before they came to Ayodhya. And there are certain statements in the South Indian papers by the kar sevaks who have returned —those who had gone from Andhra and elsewhere—saying that it was all preplanned and they went fully trained for the job.

Also, I am surprised that the BJP has hesitated to condemn this action. Though Mr. Atal Bihari Vajpayee is on record, in one of the interveiws, that it was a miscalculation and misadventure on the part of the BJP. he also refrained from condemning the action: He has only said that it was the worst miscalculation and

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

[Shri P. Upendra]

misadventure and that the voice of noderation was overruled by hard liners in his party. And he has also admittel that his party had failed to honour the solemn assurances given to the Prime Minister, the Supreme Court and Parliament that the mosque would not be touched. He also said, "We are sorry that the Prime Minister believed us." There are on record the assurances given by the Leader of the Opposition, Mr. Sikander Bakht, here that the Mosque would never be touched now or in future. Inspite of all these assurances, the BJP and its cohorts resorted to this reckless action.

The BJP now says that they could not control the crowd. Even assuming that that they are correct when they say that they could not control the crowd, what does it indicate? The BJP is supposed to be a very disciplined party. Either they have lost control over their own workers or discipline has eroded in their parties or they have unleashed such forces which cannot be controlled even by them. Both are very dangerous for them as well as for this country.

In the aftermath of the event, hundreds, in fact, thousands died all over the country for no fault of theirs. The heart-rending stories we read in the newspapers and hear from eye-witnesses, are very shameful as far as this country is concerned. I feel, Madam, it is not only the BJP which has to be blamed, but all of us owe the responsibility for this. I particularly blame the Central Government, the Union Government, and particularly the Home Minister for not taking adequate precaution in this respect.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: What about the Prime Minister?

SHRI P. UPENDRA: The Prime Minister, I have said, has been betrayed. ...(*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Please let him complete. Please din't interrupt.

SHRI P. UPENDRA: He allowed himself to be ...(*Interruptions*) I do not know. There are some Hindi words for that. I do not want to mention them. But it has been mentioned like that. The Prime Minister repeatedly assured both the Parliament and the National Integration Council about this. Even before the Supreme Court they gave a promise asserting that the Mosque would be protected at any cost.

Can you believe that a mighty Government, with lakhs of personnel in the armed forces, military and paramilitary forces, could not protect a single mosque there? How can you assure to the world that there is government in this country?

You have spoiled an opportunity also when the BJP and other organisations agreed to refer the matter under article 143 to the Supreme Court. You could have seized that opportunity and referred the matter to the Supreme Court so that at least you could have got some respite in the matter.

You had 195 companies of paramilitary forces there. The Home Minister is on record that the forces were kept in total readiness. Readiness for what? Readiness for inaction? You kept them 8 km. away in the cantonment at Faizabad. You also said that the Rapid Action Force could reach the spot within eight minutes, eight cracking minutes, but even after 36 hours they did not reach there. Article 355 gives enough powers to you to deploy the forces there, even without the State Government's permission. You sent these companies inspite of the protest of the State Government, without their asking for it. What was the fun in keeping them so far away. 8 km. away, when you had intelli-

gence reports to suggest that there was likely to be damage to the structure?

Also, you said in this House itself that there was a contingency plan ready. What was that contingency plan? Not a single helicopter hovered over the structure. Not even a helipad was kept ready there. You could have kept ...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mr. Upendra, you have to conclude.

SHRI P. UPENDRA: You could not do even that. The minimum precaution you have not taken. There were adequate intelligence reports also at your disposal. On the basis of the intelligence reports you submitted an affidavit before the Supreme Court on December 1 saying that there was likely to be damage to the structure and asking that trerefore the Court should give enough, requisite orders. You had the intelligence reports with you. In pite of that. no precaution was taken.

There were rehearsals there. Even the newspapers on the 6th carried the photographs of the kar sevaks pulling down some structure with ropes, that was done on the 4th and the 5th. Inspite of that, you did not take any precaution.

As regards the State Government, the less said the better. There cannot be greater perfly than this. No State Government ever behaved like this, giving false evidence before the Supreme Court and giving false assurances to the National Integration Council. The Chief Minister had the temerity to absent himself from the National Integration Council when the subject relating to his State was being discussed. And all this was tolerated. Of course. there were demands for dismissal of that Government, but we felt it was unconstitutional. So, some of us did not encourage the proposal that a duly elected Government should be dismissed. There we cannot blame you. But whatever powers you had and whatever precautions you had to take, you did not fulfil those obligations. I don't want to go into the actions of the judiciary. At least the Supreme Court showed some alertness at the end, but the judiciary all along had been very trady in setting these matters. When you blame the BJP. I would also like to ask one question to all our friends, very eminent leaders belonging to various parties coming from Uttar Pradesh. If BJP could mobilise one lakh persons there, all these leaders, including the two ex-Pirme Ministers and so many other leaders coming from Uttar Pradesh, could have mobilised enough people to stop this kind of vandalism and also to protect the mosque.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mr. Upendra. please make your conclusion now.

SHRI P. UPENDRA: I am just on the last point.

I fully justify the arrests the Government has resorted to, because whoever was present there supervising this kind of a destruction has to face the law. This was a criminal act and Mr. Advani himself owned up the guilt when he resigned as Leader of the Opposition. Therefore, there is no point in criticising the arrests. I also support the banning of the organisations which are responsible for this. Though the ban by itself may not work, eytt it will have a psychological effect in the country. So, I feel the banning was absolutely necessary. But I differ from the Government on the point of dismissal of the three duly elected State Governments. This was difinitely an over-reaction. In fact, you haxe given a big handle to the BJP to agitate on this

[Shri P. Upendra]

account and I feel it was quite undemocratic. So, we opposed the invocation of Article 356 for this kind of an action. Finally..

(*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mr. Narayanasamy, please sit down. There is no time. Please let him finish.

SHRI V. NARAYANASAMY: Do you justify the actions of the Ministers concerned, who were doing all this vandalism? (*Interruptions*).

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): You will have a right to reply. Pleahe sit down.

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): What was your Government doing then Your Government was simply sleeping so far. (*Interruptions*).

श्रीमती रेणुका चौधरी : : मंत्री भी बनकर गए थे आपकी कैबिनेट में...
(व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Mr. Narayanasamy, please sit down. Please don't stall the discussion. The Home Minister will reply. We have very little time left. Let all the Members have an opportunity to speak. (*Interruptions*) I plead with you, please don't interrupt.

SHRI P. UPENDRA: Before I concude, I would like to give three suggestions to the Home Minister.

One is that there is a talk about rebuilding of the mosuqe and also the temple. I suggest that the Government should allow a little more time for the tempers to cool down. It should wait for some time to decide upon the area where the temple and the mosque should be constructed, because the dispute is likely to persist. Therefore, we want you to be very careful in the matter before deciding upon the constructions. I also feel that till this matter is settled, no Pooja should be allowed in the new structure. I say this because some people are saying that the court has given order for the *status quo*. *The status quo* is meant for the entire structure. That would hold good to the Babri Masjid structure or whatever you call it and the idols inside that. That structure was demolished. The *status quo* does not apply to the new structure. Therefore, no Pooja should be allowed so that the matter is not complicated.

Finally, I plead that more compensation should be given to the victims of the riots and also the journalists who suffered in that incident and the photographers whose cameras were broken. On account of that also compensation should be given to the journalists and the photograpers.

2.00 P.M. **श्री राम गोपाल यादव :** (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष जी मुझे दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि इस देश में राजनीतिक स्वार्थ के लिए और अलोकप्रियता से बचने के लिए जो तथ्य हैं उनको भी सही तरीके से देश के सम्मुख प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है। अयोध्या में जिस जगह बाबरी मसजिद थी वह राम जन्मभूमि थी या नहीं यह अनिश्चित है. लेकिन यह निश्चित है कि वहां एक मस्जिद थी। यह भी निश्चित है कि 1949 में एक रात में वहां मूर्तियां रख दी गई थी। प्रश्न यह उठता है कि जिस चीज के बारे में जिन तथ्यों के बारे में अनिश्चितता हो हिन्दुस्तान की सरकार निरन्तर उसको राम जन्म भूमि के नाम से क्यों लिखती आ रही है। किसी के घर में दूसरा घुस आए तो उसको क्या कहते हैं— अनअथोराइज्ड आकुपेंट। जिन्हें आप राम लला कहते हैं वह मस्जिद में अनअथोराइज्ड आकुपेंट नहीं है क्या। जो कार्यवाई अनअथोराइज्ड अकुपेंट के साथ होनी चाहिए कानूनी कार्रवाई, वह नहीं की गई। यह सारी समस्या का मूल कारण है। हटा देना चाहिए था। आप क्यों डरते हैं। आप मस्जिद को मस्जिद नहीं कह सकते, आप जबदस्ती मूर्तियों को हटाने की बात नहीं कह सकते। आप धर्म निरपेक्षता और सेक्युलरिज्म की बात कहते हैं। मैं आपसे कहता हूं आप सही बात नहीं कह रहे हैं। देश के सामने इस सदन के माध्यम से सही बात नहीं कह रहे हैं।

जहां तक 6 दिसम्बर का प्रश्न है, घटनाएं जो 1990 में हुई और जो 1992 में हुई उनमें बहुत समानता है । दो दिन पहले मुफ्ती मोहम्मद सईद बोले थे । वह 1990 में देश के गृह मंत्री थे । मैं सदन के पटल पर, सदन के माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि उस वक्त भी जो रथ यात्रा प्रारम्भ की गई थी वह देश के तत्कालीन प्रधान मंत्री को राय से सहमति से हुई । इस वक्त भी जो अयोध्या में हुआ वह देश की केन्द्रीय सरकार के मौन सहमति से हुआ । उसकी खामोशी के चलते हुआ । अन्तर सिर्फ यह था कि केवल उस वक्त मुलायम सिंह सहमत नहीं थे । अगर मुलायम सिंह से केन्द्रीय सरकार ने पूरा सहयोग किया होता तो यह निश्चित था कि जो तब कहा गया था कि बाबरी मस्जिद पर कोई परिंदा पर नहीं मार सकता तो नहीं मार सकता था । फिर भी मुलायम सिंह के प्रबन्ध के चलते इन्होंने बाबरी मस्जिद को छूने की कोशिश की । वह गुम्बद पर चढ़ तो गये लेकिन उतर नहीं सके । यह रिकार्ड है । इस बात का समाजवादी पार्टी और उसके नेताओं को कभी अफसोस न था, न है और न कभी रहेगा चाहे उनको मौलाना मुलायम कहें, मुल्ला मुलायम कहें, चाहे हिन्दू मानें या न मानें, चाहे हिन्दू वोट दें या न दें । लेकिन इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारे नेताओं ने हमारे राज्याध्यक्षों ने, हमारे शासनाध्यक्षों ने अपने उत्तरदायित्व का पालन नहीं किया । नतीजा यह हुआ कि हिन्दुस्तान के माथे पर हिन्दुस्तान की धर्मनिरपेक्षता पर एक ऐसा कलंक लग गया जिसको कभी मिटाया नहीं जा सकता ।

मैं कुछ सुझाव एक-दो मिनट में आपके माध्यम से गृह मंत्री जी के सामने रखना चाहूंगा । अगर यह सच मान लिया जाए कि उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश नहीं दिया था तो क्या वे अधिकारी इस बात से बच सकते कि राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद 30 घंटे तक उनको किसने रोक रखा था ? क्या हिन्दुस्तान के गृह मंत्री का निर्देश था कि गोली न चलाई जाए, यह सारी कारवाई होती रहे । मेक शिफ्ट टेम्पल बन गया ? किस के दौर में बना किस के जमाने में बना, मैं चाहूंगा इसकी जांच होनी चाहिए । मैं यह भी चाहूंगा कि पिछले 16 महीने के शासन के दौरान उत्तर प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने जिस तरह से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ताओं को पुलिस में और अन्य जगहों में भर्ती किया है जो आगे चल कर देश की साम्प्रदायिक एकता के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं, उनकी जांच होनी चाहिए । उन अधिकारियों की जांच होनी चाहिए जिनकी बैकग्राउंड आर०एस०एस० की है । अगर ऐसा नहीं होता है तो निश्चत रूप से यह देश के लिए घातक होगा । ऐसा नहीं है कि जो पुलिस पर आरोप लगता है सारे पुलिस वाले इस तरह के हों ऐसा नहीं है कि सारी पी० ए०सी० इस तरह की है । इसी पुलिस और पी०ए०सी० ने 1990 में बाबरी मस्जिद की रक्षा की थी । अगर नेतृत्व गलत होगा, लीड करने वाला गलत होगा तो उसी दिशा में लोग चलेंगे । अभी दो दिन पहले लीडर आफ दी अपोजीसन ने मोरेलिटी की बात की थी। मुझे कभी-कभी आश्चर्य होता है कि बहुत बुजुर्ग लोग हैं, सीनियर लोग हैं, कभी-कभी हम जैसे छोटे आदमी की बात उनको बुरी लग सकती है । माफी के साथ मैं कहना चाहूंगा कि जब भारतीय जनता पार्टी नैतिकता की बात करती है तो इसे उसी तरह से लिया जा सकता है जैसे कोई वेश्या पति व्रत धर्म का उपदेश देती हो । इनके मुंह से नैतिकता की बात अच्छी नहीं लगती है जाने कितने लोग. . . (**व्यवधान**)

श्री संघ प्रिय गौतम : महोदया, मेरा पाइन्ट आफ आर्डर है। वेश्या भी औरत होती है, ह्यूमन बिइंग होती है यह उसका अपमान है। यह शब्द इनको नहीं कहना चाहिए. . . (**व्यवधान**)

श्रीमती सत्या बहिन : ये लोग तो वेश्या से भी ज्यादा पतित हैं. . . . (**व्यवधान**) ।

श्री संघ प्रिय गौतम : मैं आपकी बिरादरी के लोगों की महिलाओं की, बात कह रहा हूं ।

श्रीमती सत्या बहिन : मैं यह कहना चाहती हूं कि. . . (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARANJAN): Please do not ..(Interruptions). Sa'yaji please sit down. Now conclude, Mr. Yadav. I am going to call the next speaker.

श्री राम गोपाल यादव : मैं सिर्फ इतनी ही बात कहना चाहता हूं कि... **(व्यवधान)** ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): No. You will have to please conclude because there is not much time.

श्री राम गोपाल यादव : हमने यह पढ़ा था कि चेयर बैंक बैंचर्स को प्रोटेक्शन देती है। लेकिन मैं देख रहा हूं कि जिनको 20 मिनट मिले थे वे 40 मिनट बोले और जिनको तीन मिनट मिले उनको एक सेकेण्ड भी ज्यादा समय नहीं दिया जाता है। यह मैं लगातार देख रहा हूं।

That is why I am sitting. I have nothing to say.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Smt. Renuka Chowdhury.

श्री ईश दत्त यादव (उत्तर प्रदेश) : महोदया, इनको अभी बोलने दीजिये।

श्री राम गोपाल यादव : यह कोई तरीका नहीं है।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I am sorry. The House has very little time. I cannot permit every single Member. (*Interruptions*) He has spoken for seven minutes. I am sorry.

श्री ईश दत्त यादव यह बहुत अहम मसला है, इसलिए उनको पूरा समय दीजिये।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): I know. But I annot help that. Now I am sitting in the Chair and I can only do what I am supposed to do. (Interruptions). I have called Mrs. Renuka Chowdhury. Please sit down.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Madam, the 6th of December witnessed the demolition of the disputed structure, Ram Janmabhoomi-Babri Masjid. The tragedy lies in the this that we say this name in one breath, we refer to it as the Ram Janmabhoomi-Babri Masjid and today, we have divided this and we have failed to learn to see through what were the two eyes of secularism. We have failed to learn to have a collective vision. It is wrong not just for the reasons that have been cited by this Parliament, not for the abuses that have been made by the various parties that have taken part in this, but it is wrong because it is a total abdication of our moral and functional responsibilities. The functional responsibility is this. The Bharatiya Janata Party gave an assurance that certain things would not take place and the y failed to fulfil it. They quickly backtracked and tried to atone for it by getting their leaders to resign. I do not know if that is It costs me an extra effort to make this deemed enough or sufficient. But then, the moral responsibility lies with the Central Government. Madam, through you, I wish to point out that the manner in which it was structured, the social and politica climate, particuarly in the 1980s, had been in the hands of the ruling party. We have the decade of the 1980s out standing in the memory of India. We had the Operation Blustar in Junjabi; we had the Assam Agitation; we had the Operation BBluestar in Punjab; we had the Operation Woodrose, we had the in the Capital of this nation. I finl this grisly business of head-count extermely distasteful but we cannot run away from reality and hence the counting goes on. The state in which this nation gds itself today is the direct consequence of misrule in J&K. To continue thelist,in 1986, the Congress arranged for a court of local magistrate to have the locks of the Ram Janmabhoomi-Babri Masjid opened. The farce of the Shah Banoan inhuman chrade that was played on this nation. In 1989, the then Leader of the Congress and the then Prime Minister conducted Shilanyas anl lauched his campaign from Ayodhya and then spoke of Mam Raj. Memories are both short and inconvenient. Dimen-

sion of miral responsibility—this was a negotiated process-the 6th of December, 1992. It was a negotiated process. Everybody sat across the table to negotiate to see that we would overcome this hurdle collectively and peacefully and the Prime Minister was the principal negotiator in this very negotiation. He negotiated the 6th December. It was with his tacit consent and approval that whatever happened happened. It is a matter of great regret that till today neither the Government nor the Prime Minister of this country has said anything other than voicing that he, the Prime Minister, was betrayed. I fail to see how he can betray himself. He betrayed the NIC who reposed confidence and faith in him that he will take the necessary measures. He betrayed the other parties who empowered him to do what he thought fit to resolve this problem and yet again, the Prime Minister betrayed this nation. I say again, because to help refresh your memories, in 1984, this very Prime Minister was the then Home Minister. It was expected that in the face of this agitation we would have had statesmanship, we would have had leadership and we would have talked of giant men. Instead, what we witnessed was the following:

The Government failed to respond adequately. It was expected that there would be violence in the country. I salute the people of this nation because the true spirit of secularism amongst India and this violence was able to contain itself. It did not contain itself because of the police bullets, it did not contain itself because of the awesome presence of the Armed forces. It contained itself because an Indian empathises with an Indian and hence I salute the people that the people did not give in to petty politicking of a handful of our politicians who are trying to take this nation astray. The Government failed to protect the honour of this nation. I do not want to dwell, because it is so hurtful, on the image that we have left internationally of what happened in Bangladesh, what happened in Pakistan and what happened in the U.K. In response to this, we witnessed unbelievable insensitivity. The Government speaks of building the mosque. Then it backed out, then it retracted. The Home Minister says, "six months". The Defence Minister says, "one year" and the Prime Minister says nothing. The Government has banned the organisations after giving them four days' notice and then there was nothing about it after that. The next step of the Government is largely to meet it's own internal differences. It dissolved the State Governments which have been duly elected. This is an old habit, die-hard, of the Congress. At one time, Andhra Pradesh was also victim of this. The people of this nation will not stand by and watch you commit the constitutional folly and cause blaspheme on what has been practised democratically for so many years in this nation. The path that the Congress has adopted for itself is of self-destruction and it is of least importance to me—the political outcome of the fall-out of your political fortunes. What you require is mercy killing, euthanasia. All support systems-artificial and otherwise-have been cut off from you. Please wake up. The Prime Minister has to resign. No individual is worth the price that this nation is paying. it costs me an extra effort to make this demand.

My party did not contest this man's election in my State. We talked of Telugu pride. The nation is above Telugu's pride. The time has come, if we are sincere about assuaging the sentiments. if we are talking of a secular set-up, if we are talking of the norms and decencies of our democracy, when the Prime Minister should step down. Wit a single step you will be able to undo what you are repeatedly, foolishly doing... (*Interruption*)...

SHRI V. NARAYANASAMY: Your alignment with BJP is proved now.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: I am not asking for comments. I have a warning for the BJP also. The BJP have unleashed, they have opened the bottle—I am concluding—they have opened the bottle... (*Interruption*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Let her finish.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: They have allowed a genie to escape. Whether this genie will control you or whether you will control the genic is a matter confined only to the BJP because even you will meet the same fate as the Congress because in secular India no saint or fakir will rule independent India, the nation in which I have been born and I will die seeing this country in that spirit. I will also address myself to Parliament.

भाई, मुर्दों की चिताओं पर सियासी रोटी सेंकना बंद कर दीजिये ।

We are all *jimmewar.*

हम सब जिम्मेवार हैं इस बात के और कम से कम आज के दिन सच कहने की कोशिश तो हम करें । कह सकें या नहीं कह सकें, कमजोरी हो सकती है, यह अलग बात है, लेकिन कोशिश तो हम करें ।

We all have brought about this situation. It is time for us to look at the truth and learn to speak the great experiment called 'truth' and fire this revolver | of revolution called 'truth'. We have all done it. We isolated the Muslims. We ask for the minority-vote. Tody, the BJP has taken another community vote.

और क्या कर सकोगे, आप इस देश को बता दीजिये । हम आज के दिन सिर्फ बेलट बाक्स की तरफ नजर उठा कर देख रहे हैं और बेंट बाक्स की ऐसी गुलामी कर रहे हैं कि इस देश की, भारत मां की बेइज्जती पर तुले हुए हैं । आजाद भारत कहते हैं, भारत मां कहते हैं । कौन सी कौम में लिखा है कि अपनी मां की बेइज्जती करो ? यह मैं आपसे पूछ रही हूं ।

I am concluding. The true victims of this tragedy are the unknown Indians. The true victims of this tragedy are the women and children on whom this terror and crime has been unleashed. As a woman, I am not concerned about which party sits in Government. I am concerned about the security of my people. I am concerned about the welfare of children. I am concerned about the future of my dreams. I am concerned that I am sharing this nation. I am a daughter of a soldier. I was brought up to believe that my enemy was outside the country. not within. I am taught to fight to protect the border of my nation;; not within. I have been brought up to believe that you speak the truth. The only religion I know is this Flag.

जब मैं बचपन में थी तो मेरी मां ने मुझ कोहैं लोरी नहीं सुनाई थी ।

I woke up hearing the National Anthem I went to sleep hearing the National Anthem because in the Services we venerate the Flag, we venerate the Himalayas, we venerate the rivers of this nation. I have not learnt to discriminate an Indian against an Indian. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Shri Satish Pradhan. (*Interruption*) No; I have to finish it. I have called Mr, Satish Pradhan.

SHRI SATISH PRADHAN (Mhahrashtra):

Madam Vide-Chairman. this is mv maiden speech. Much is being said about and attributed to Shiv Sena inside the House as also outside. As one of the representatives of Shiv Sena in this august House. I would like to set the record straight and put the facts in right perspective regarding this Avodhya incident and Shiv Sena's views on this. I would urge upon you Madam, not to put my time limits and allow me to complete what I want to say.

Madam, many speakers have already expressed their opinion on Ayodhya incident in this House, but I somehow feel they are not on the right track. I am saying so because we are discussing what transpired in Ayodhya on 6th of this month. We are also discussing the past Ayodhya situation in the country specially the orgy of killings across the states.

My party, Shiv Sena is of the firm cpinnion that while discussing this Ayodhya agair it is necessary to go back to the historical backgrounl of this in order to understand the things in their real perspective.

We talk of Hindutva and stress the necessity to project and attain Hindutva but why? Hindutva is our word for what we call nationalism. By Hindutva we imply pure nationalism and nothing else. The media including newspapers and the public in general have not understood this correctly and hence lot of ill-will and misunderstanding.

Madam, I want to cite historical example. Mahatma Gandhi, Sardar Vallabhai Patel. Pt. Jawahar Lal Nehru, Barrister Modh. Jinha and Liyaqat Ali—they all and other fought the British empire unitedly with the Tri-colour in their hands. They all used to sing together the song. "Vande Mataram..." But it is very unfortunate that there are some people today who are refusing to sing "Vande Mataram..." Where will such people lead this Country to?

In the name of secularism, we are adjusting with such people as are insulting our nationalistic traditions and heritage. It is such acts of these people which are creating doubts in our minds about the intentions of such people.

Madam, In the country and abroad, cricket and hockey matches are played bteween Indian team and the teams from Pakistan. If India loses and Pakistan wins the match, there are some people in the country who distribute sweets and celebrate the defeat of our national team. When we see such behaviour of people in our own country, at times one wonders if we are living in India or Pakistan. And such pattern of behaviour and acts by some segments of our population vitiate the atmosphere and result in builling tensions among groups of people,

We are talkng about the demolition of disputed structure in Ayodhya on December 6. But it is astonishing to note that no one is willng to lalk about the history behind the dispute.

After Independence, we have destroyed many monuments and structures built in this country by the British rulers, Like one in Mumbai, the 'Kala Ghoda', the Black Horse with an English man riding on it It was one of the most beautiful works from archaelogical point of view which wa removed. In Delhi, the name of Willington Hospital was changed to Ram Manohar Lohia Hospital. Why did we do all this? To restore our sense of national honour and self-respect, When we see a road in Delhi named after Aurangazeb, who imposed 'Jijiya' Tax on Hindus, we suddenly get a sting of a scorpion bite.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Your time is over,

SHRI SATISH PRADHAN: No, Madam. I asked for ten minutes,

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): You have already taken 6 minutes, you have to conclude now.

ONE HON. MEMBER: अच्छा बोल रहे हैं, बोलने दीजिए ।

SHRI SATISH PRADHAN: अपने मुझे बोलने के लिए रोक दिया तो मैं रुक जाऊंगा। लेकिन जो विचार मैं व्यक्त करना चाहता हूं, जो विचार मैं सदन के सामने रखना चाहता हूं, वह रह जायेगें।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): The time is allotted according to the strength of the parites and this is all which is allotted o you. I am helpless in this matter, You have to conclude now.

SHRI SATISH PRADHAN: This is a question of tradition, (*Interruptions*) ..

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Everybody's speech is impirtant. There is no question of comparative importance. This is queston of time, So kindly conclude witrin a minute, there is time constraint.

SHRI SATISH PRADHAN: I wish to draw your attention towards the large-scale violence that took place in Mumbai after the Ayodhya incident, I live in distrct Thane and there was not a single incident that took place in Bhiwandi of Thane district, considered to be a trouble-spot. I deliberately wish to highlight this to tell you why no incident took place in Bhiwandi. We had taken precautions so that such incidents do not happen there. I will request our Hon'ble members to ensure that adequate precautions are taken in their constituencies so as not to allow recurrence of such incidents.

Who was behind the riots in Mumbai? According to the statement given by the DCP. Mumbai, people were incited to indulge is violence, They were Mulla Maulvis. Tht DCP has also revealed that arms and ammunitions worth Rs. 50 lakhs had been smuggled into Mumbai and Thane districts from Pakistan. The Indian Express has also reported similar news or arms smuggling from Pakistan..

It is time we give a serious thought to these matters. What has the Central Government decided to do further in this matter?

In many of the mosques. the arms and ammunition are being piled up. We have brought this to the notice of the government on several occasions.

In the riots this time, police were fired at by people from he mosques in Mumbai. As a result many jawans and inspectors of police were killed. After this the police sought permission to fire in the direction of mosques, but the government refused permission. Till the last moment, permission was not granted by Police Control Room in Mumbai. As a consequence many police personnel have lost their lives.

Everyone must ponder over this particular point in Mumbai. I am not in a position to give you all the details due to paucity of time.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): Now please sit down Mr. Pradhan, you have taken ten minutes, please conclude now.

SHRI SATISH PRADHAN: We should do some serious thinking on all this with a clam and composed mind. After the incident of December 6, there began the 'politics of revenge' After the incident of December 6, what was required to be done was not to find faults with BJP but to find a way out to avert the repercussions of the inciden. There are many intellectuals in the House. They should ponder on this subject. But, we are only trying to find faults with each other..

To dismiss the governments and to impose ban on some organisation is not a solution at all. Even to resport to firing is no solution. We are practising politics and vowing by Mahatma Gandhi. But we tend to forget that it was Mahatma Gandhi who beave the message of peace and non-violen-

ce. Mahatma Gandhi used to offer his other cheek if he was hit or slapped on one. But that too we have forgotten. People today think in terms of revenge.

Many leaders do make it a point to pay visits to the riot-effected areas. Here too, there are disparities. These visits as a matter of fact are confined to Muslim colonies only and not the ones inhabitated by Hindus. No leader goes to offer condolences or to express solidarity with the affected families in the Hindu colonies.

No one is really prepared to isten to the woes of Hindus. The net consequence of this wilful neglect of the Hindus by political eadership will result n a serious explsion and we may not be able tobearits impact. I only pray that this will not happen. And to avoid such athingwe must do something.

The Central Government is talking of rebuilding the Masjid at the disputed site. But this very government has not even mentioned about rebuilding of hundreds of temples destroyed by Muslims in Jammu and Kashmir. Let's all give a deep thought to the discriminatory treatment being meted out to the Hindus by his governmen in this country.

With these words I conclude.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTI NATARAJAN): Mr. Pradhan, please sit down. I am callin gthe next speaker. Mr. Gujral.

SHRI INDER KUMAR GUJRAL (Bihar): Madam Vice-Chairperson, I will not take long because I don't intend repeating here... (*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTI NATARAJAN): May I have order in the House, please? Mr. Gujaral is speaking.

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: I will not take your time, Madam, and that of the House is repeating what my hon. friends have said yesterday and today. The incidents of 6th December have put all of us, if in nothing else, in an introspective mood. We must think about it and come to some conclusion as to what happened. So far as the incident is concerned, I was reading in the Press today—I do not know if it is correct—that one of the hon. Ministers of the Government had the entire incident videoed for six hours. If it is videoed, I don't see any reason as to why the Ministry of Information and Broadcasting has not used it because that is something which the nation must know, what is right, what is wrong and what has happened. I think it is worth knowing. One of the interesting aspects reported in the Press is that the videotaping says, "the activities of the demolition-squad continued till 11.30 in the night," that is, the new structure that was put up was continued till 11.30 p.m. I would like the hon. Minister to tell us if what the Press has reported is correct or not. I am not also going to say as to why the Government was so gullible. They did accept the assurances given to it by the State Government. I hope the Minister, when he talks about the whole thing, will also let us know in detail as to what the agreement arrived at was, who the party to the agreement was, why the agreement was arrived at...

THE MINISTER O HOME AFFAIRS (SHRI S. B. CHAVAN): Which agreement?

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: The agreement between the Government and the leaders like Rajubhai. And these two gentlemn are on record havign said that the agreement was on three points. I would like the Minister to tell us what those points are rather than my saying it. Anyhow, the main point is, as I said a while ago while talking about the fast of Shri Atal Bihari Vajpayee, that the riots that have taken place during the last week or so, are realy heart-shaking and nerve-shaking and particuarly to persons like me wo have lived through the 1947 riots also, it is a terrible thing to recall and remember those things. Mr. Atal Bihari Vajpayee, I am glad, has come

back to Parliament. Mr. Atal Bihari Vajpayee, while going on fast, had raised some very interesting points to which I would like to address myself. But before I come to that, I must say that I regard Mr. Atal Bihari Vajpayee as a person who is balanced, who has a background which makes him sober and he is one whom we all consider as one of the balanced public men. While giving his interview to *Eyewitness* yesterday, he has rightly called himself a 'liberal' and he said that a liberal leader like him is not alowed to address. I do not want to say what he meant by that. But I want to stress the word "liberal". He has rightly called himself a liberal and I think that is where I share an anxiety with him. In the present context, in the BJP, it is a liberal outlook that has been marginalised and that is why Mr. Atal Bihari Vajpayee sees himself as a marginalised person. He does not now make policies. He does not now decide as to what type of an alliance should be taken. He is not consulted because as the party goes on becoming more radicalised, men like him who are decent, men like him who are liberal, men like him who are balanced and men like him who have a world vision before them, feel that they are marginalised and I think that is where the point comes in. I think all of us who are discussing along with the BJP friends here, many of whom are very respectable friend sat the personal level also, when we are talking to them or talking about them, we must understand that a stage has come when the BJP has ceased to be a political party. It is now a front organisation, a Parliamentary ront—call it the RSS, call it the Sangh Parivar because the Sangh Parivar has reorganised itself on various fronts. They have a Students' Front. They have a front which deals with labour. They have a front, rightly so, and I have no objection to that. But these are not the BJP fronts These are the RSS fronts... (*Interruptions*) ...

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: I do not... (*Interruptions*) ... I do not agree with that.

AN HON. MEMBER: Who asked you to agree?

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: The point to be kept in mind, therefore, is, is that which is now the Parliamentary Front. If it is a Parliamentary Front, it voices its decisions which are taken elsewhere and not by the leadership here and that, I think, should keep us anxious, if nothing more. Mr. Atal Bihari Vajpayee, in his interview *to Eyewitness* yesterday has also said that the RSS has now suspended its activities; therefore, those members of the BJP who are associated with the RSS should be released. I think that is where a big question mark-arises. What were those activities which had been suspended? What were the RSS doing that they had decide to suspend? Was it only the khaki knicker wearing? Wat it only the Sakha in the morning or was it something more iabolical than that? That is where I think we have to think in depth. I would like to ask my friends who represent the RSS here as to what is the philosophy of the RSS adn whether they have suspended that. Have they thought that the philosophy of division is no more valid? I think that is where the entire issue arises. I am not in favour of keeping the people in jail. I am not in favour of banning the parties. But, at the same time, there is such a thing as ntaional responsibility. The national responsibility is that the same freedom cannot be given to those who us freedom forums to try to domolish freedom itself. That is where all of us have to look at.

I am not happy ever to talk about Mr. Churchill. But I think here is something which makes me anxious because one of the very leading journals of the world. *The Economist*, has quoted Churchill as saying... (Time-bell rings) ... You will have to give me a few minutes. Churchill said, "India is a geographical term. It is no more a united nation than the Equator". The journal further says, "For the past 45 years the governments of Independent India have done their best to prove Churchill wrong". It further says:

"Does the destruction by Hindu zealots on December 6th of the 16th-Century mosque in the town of ayodhya

now mean those efforts have been in vain? Is secular India, ever proud to call itself the world's largest democracy, about to fragment along bloody lines drawn by race and creed?"

This is the question even the leading journals are posing to us. And that is the question, I think, we have to reply. And that is where the philosophy of the RSS again comes in.

Again it says: "All rational Indians..." —and I repeat—"All rational Indians, whatever their religion, should realise that secularism keeps their country on the safe side of the brink."

And that is where we have to think over it. The issue, therefore, Madam, to my mind is that the friends in the BJP or elsewhere may have any difference of opinion about secularism—I am not a votary of words; call it secularism, call it pseudo-secularism, call it whatever you like—but one question does arise: Whatever way we define, do we realise that India is a composition of diversities? Do we realise that in India people do have different faiths? Do we realise that in India we speak different languages? Do we realise that in India we have also different histories? The history of Tamil Nadu is not the same like the history of Punjab. We all have different histories. And if we are going to re-write history, what parts of history are we going to re-write? Are we going to re-write only what happened in the north of India? What shall we do with the history of the east of India? What shall we do with the history of the south of India? And what shall we do with the history of Kerala which was very bold and very courageous and very patriotic? These are the things which we have to ask ourselves. Editing history helps nobody. During my long tenure in Moscow, Madam, I have lived in a nation which does not exist any more. It may have been due to several reasons. But one of the reasons why the Soviet Union has broken up today is that they were editing history. Editing history has never solved any problem. And also they did not realise that cultures of different diversities have to be accommodated. They were trying to Russianise everybody—one language, one culture, and one way of life—and the result was what we have seen. That is where the question arises whether in India we want to co-exist or we do not want to co-exist. And if we want to co-exist, can we co-exist in any other fashion, in any other institution than the democratic equality? If democratic equality is not our commitment, then the question will arise: What is our objective? Do we want to keep India together? Do we want to keep India's diversities unified? And many in this House like me have participated in the freedom struggle. (*Time bell ring*) I am sorry, Madam, you have to give me sometime...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN): We are running out of time, Mr. Gujral. You have already spoken for 10 minutes. You can now make your concluding remarks

SHRI INDER KUMAR GUJRAL: Madam, I was saying about the diversities of India that many people like me who had participated in the freedom struggle knew the vision of free India. And that was unity of diversities. It was not yesterday, it was not in 1947 when the Constitution was written that we thought of unity of diversities. We thought of unity of diversities in 1931 in the Karachi Congress session, we thought of unity of diversities in 1921 when Gandhiji took charge of the situation. We thought of unity of diversities in the time of Tilak and Gokhale. All that the history is saying is that we realise that we should keep all diversities together. We never talked of one language. We never talked of one culture. We never talked of one way of life. No. We have diversities. We have histories of diversities. And we have to keep them together. It is in this context, therefore, the question arises: What is the responsibility of the State? And what is the responsibility of all of us, who, in a way, constitute the State, whether we sit on this side or that side? In the midst of all these anxieties, I feel that we have very little options. And, I think, when you are launching a struggle today,

[Shri Inder Kufar Gujral]

it is not a struggle only to keep India together. It is also to think of what we have to safeguard. One of the things we have to safeguard is the image of India abroad. It has taken us fifty years to build that image, and since I had the privilege of representing India both as an Ambassador and for some time as the Foreign Minister of this country, I would like you to kindly keep in mind as to how the others are looking at us. I am not talking of Pakistan; you can ignore it. How is the West looking at us? How is China looking at us? How is Japan looking at us? How are the Buddhist countries looking at us? I will not quote the newspapers and the periodicals because I think all of us read them. But I think the image of India is to be kept in mind. I therefore urge particularly those who believe in Shri Atal Bihari Vajpayee and not in the RSS; Atal Bihari Vajpayee school, is different from the RSS school, because he calls himself liberal. Therefore, those in the BJP who believe in liberalism, who believe in coexistence, who believe in equality and democracy must sit back and think as to what type of India we are trying to make, and whether we are really fed up with our freedom, whether we think that we had enough of freedom and let us give it up, and have we now come to a stage when we think that we must go back to the dark ages when a unified India cannot be sustained? These are the questions which I think my friends in the BJP must answer.

I will take only one more minute to say and to address myself to the Government. I will not take time to recall where the Government has failed because the Government has failed because the Government has failed this is a fact. I was looking at my own utterances in this House. I will not re-read it. On the 3rd of December when my hon. friend. the Home Minister had made a statement, I had told him even at that time not to be so gullible, not to get taken in, and here is something that I had told him even at that time that his statement was very pathetic. He did not like my saying so but I like now whan he looks back, he must be agreeing that he did make a pathetic statement. He tried to give a certificate that Mr. Advani had said the right thing and we must not misunderstand him. I had said-at that time—give me half a minute to say so—"What has another friend of ours, Mr. Joshi, a Member of this House, the President of the party" —and I am quoting again—"a highly responsible man said? He has very categorically stated that Sadhus are above law Has the Government taken note of it? what does it mean? He has given a clear warning and if you do not listen to that, how do we realise that the Government has really discharged its duties?" Activities of their people at that time continued till late in the night.

[The Vice-Chairman (Shri V. NARAYANASAMY) in the Chair]

The Government was paralysed, and I do not know what should one say if the Government gets paralysed in the crisis. I am not using harsh words because I am not given to it. But I am only reminded of one Urdu couplet and I will close with that. The poet had said:

न इधर-उधर की तू बात कर,
ये बता कि कारवां क्यों लुटा

हमें राहजनों से गिला नहीं,
तेरी रहबरी का सवाल है ।।

श्री आनन्द प्रकाश गौतम (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, दो दिन से यह सदन 6 तारीख की घटना पर विचार रख रहा है। इस देश के तमाम लोगों ने और सदन में बैठे विभिन्न दलों के नेताओं ने निश्चित रूप में इस घटना की निंदा की है और 6 दिसम्बर, 1992 को जिन लोगों के द्वारा इस प्रकार की घटना घटित होने के लिये वातावरण तैयार किया गया, वे स्वयं ही इस बात को मानते हैं कि यह घटना गलत हो गई। केवल गलत को गलत कह देने से बात नहीं बनती। इसके पीछे अगर हम देखें तो निश्चित रूप से उनकी साजिश इस प्रकार की रही होगी कि जिस संविधान की कसम

खा करके हम लोग इस सदन में आये हैं उस संविधान के रचियता बाबा साहेब डाक्टर अम्बेडकर के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर वहां पर कार सेवा होगी, पूजा-अर्चना होगी और देश के कोने-कोने से तमाम लोगों को वहां पर इकटठा करना, निश्चित रूप से यह प्रमाणित करता है कि उनकी सुनियोजित साजिश रही होगी कि हम इस देश के संविधान को नहीं मानते। आज यह सवाल केवल हमारे देश से संबंधित सवाल नहीं है, यह पूरे विश्व की मानवता को प्रभावित करता है, आज का प्रश्न है। किसी भी देश में जहां लोकतंत्र की एक मिसाल कायम है विश्व में, वहां पर कानून का शासन रह पायेगा या नहीं रह पायेगा, इंसान के मानव अधिकार सुरक्षित रहेंगे या नहीं रहेंगे, ऐसा वातावरण इस देश में पैदा करने के लिये कौन जिम्मेदार है, हम सब लोग इस पर विचार कर रहे हैं। जिस प्रकार से हमारी केन्द्र की सरकार उन लोगों पर यह जिम्मेदारी सौंप रही थी कि किसी भी वर्ग की धार्मिक भावनाओं को आहत होने से वह बचाये, उनके धार्मिक स्थल को कोई नुकसान न पहुंचे, यह जिम्मेदारी भारत सरकार उत्तर प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी की सरकार की जिम्मेदारी पर छोड़कर निश्चित हो करके बैठ रही थी, जबकि वह बार-बार यह कहते थे कि हम कारसेवा करेंगे, मंदिर वहीं बनायेंगे, इस प्रकार की बातें पूरे देश में फैली हुई थी। जो उन्होंने अपना बयान हलफी अदालत के सामने मुख्य मंत्री जी ने दिया था, उसमें माननीय गृह मंत्री जी ने जो बयान दिया है उसमें आया है कि--राज्य सरकार ने आगे कहा है कि कुछ धार्मिक अनुष्ठान करने के लिये कारसेवा एक प्रतीकात्मक अवसर होगा, जिसका दुरुपयोग किसी निर्माण संबंधी गतिविधि को चलाने के लिये नहीं करने दिया जायेगा।

मैं कहना चाहता हूं कि जो बयान हलफी दी थी कि विवादित स्थल पर कोई निर्माण नहीं होगा, लेकिन वह बाहर बार-बार यह कहते थे कि हमने निर्माण की बयान हलफी दी है, विनाश की बयान हलफी नहीं दी कि हम कुछ भी बिगाड़ सकते हैं। ऐसी कोई बयान हलफी दे करके हमने अदालत के सामने कोई वायदा नहीं किया था। इस प्रकार की बातें वह कहते थे। लेकिन हमारी भारत सरकार शायद यह समझती थी कि हम उनको जिम्मेदारी देकर के उसको वह पूरा करेंगे। लेकिन जो देश के रहने वाले साधारण नागरिक हैं वह लोग भी यह समझते रहे थे कि जो स्वयं उसको नष्ट करने के लिये कसम खा चुका हो, संकल्प ले चुका हो और उसी को हम उसकी जिम्मेदारी दे रहे हैं। कहावत है कि किसी आदमी ने प्लेट भरकर जलेबी रख दी और कुत्ते से कहा कि इसकी रखवाली करना। जबकि वह उसके नेचर से वाकिफ है, उसके कार्य-कलापों से वाकिफ है कि वह ऐसा कैसे कर सकता है। (व्यवधान) यह कहावत है। जायसवाल जी ने उसको दुरुस्त कर दिया। मेरे कहने का मतलब यह है कि जो उसके चरित्र से जानकार हो, उसके करेक्टर को जानते हों और उसी पर हम निर्भर करें तो यह लगता है कि कहीं न कहीं कोई साजिश आपस में जरूर रही होगी। दूसरे, यह भी लगता है कि हमारी केन्द्र की सरकार की इसमें कहीं न कहीं आपस के समझौते की बात जाहिर होती है। जब आपने उसको अधिगृहीत कर लिया और उसके बाद बराबर यह आया है कि उसके 36 घंटे तक कारसेवा जारी रही, तो आपने उसमें कौन-सा काम किया? निश्चित रूप से आप उसको बचाने में असफल रहे हैं। इस दुष्परिणाम से हम लोगों की भावनायें आहत हुई हैं, उससे सारा देश आज सांप्रदायिकता की लपटों में झुलसने लग गया है देश के किसी न किसी कोने से रोज इस बात की खबर आती है कि एक बहुत बड़ी घटना घट गई, कुछ लोग लोग आहत हुये, कुछ लोग मारे गये, कुछ बेगुनाह मारे गये, निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं। इसकी जिम्मेदारी किस

[श्री आनन्द प्रकाश गौतम]

पर है ? हमारे भाजपा के साथी बार-बार बाहर ये भाषण देते हैं कि बाबरी मस्जिद के स्थान पर मंदिर रहा होगा, वहां पर राम लला की मूर्ति थी। मंदिर गिराकर मस्जिद बनाई गई है इसलिये वह वहां पर मंदिर बनाना चाहते हैं । मैं उन लोगों से कहना चाहता हूं कि क्या इतिहास की गलतियों को दोबारा दोहराया जायेगा, हम उसका बदला लेंगे ?

महोदय, इतिहास में इस प्रकार की भी घटनायें हैं हमारे ही देश में जब हिन्दू राजाओं के राज्य में बौद्ध मंदिरों को गिराया गया, बौद्धों का सिर काटने के लिये हिन्दू राजाओं ने आदेश दिये थे और इनाम देने की बात कही थी। क्या उस इतिहास को हम दोहराना चाहते हैं ? इससे काम नहीं चलने वाला है । शैवों और वैष्णवों में भी आपस में टकराहट होती रही है लेकिन आज उसका बदला चुकाने का अवसर नहीं है ।

हमारा देश एक धर्मनिरपेक्ष चरित्र का देश है। क्या हम उस चरित्र को बचा पायेंगे, क्या हम एक दूसरे को एक साथ जोड़ पायेंगे, आज इसका सवाल है । किस प्रकार से हम करें? कानून से, भावनाओं को बदलकर, दिलों के जख्मों पर मरहम लगाकर, कैसे करें, आज यह सवाल उठा हैं । मैं यह कहना चाहता हूं कि केन्द्रीय सरकार के गृह मंत्री ने जो बयान दिया है, उसमें उन्होंने कहा है कि सरकार इस बात का प्रबंध करेगी कि गिराए गए ढांचे का पुर्ननिर्माण हो । सरकार ने निर्णय लिया है कि राम मंदिर का निर्माण करने के बारे में उचित कदम उठाए जायेंगे। लगता है कि यह भी कुछ हवा में बात हो रही है। कैसे बनायेंगे मंदिर, कैसे बनेगी मस्जिद, इसका कोई नक्शा, कोई योजना बनी है ? कहां बनायेंगे ? कौन सी जमीन पर बनायेंगे, वह जमीन सरकार की है या नहीं है, क्या करेंगे ? एक हवा उड़ा दी। जब इस बात की पूरे विश्व में और पूरे देश में निंदा हुई कि केन्द्रीय सरकार भी अपने कर्तव्य में पूरी नहीं उतरी, संविधान को बचा नहीं सकी, न्यायालय के आदेशों का अनुपालन नहीं करा सकी, चारों तरफ से बदनामी हुई, यहां तक कि सत्तारूढ़ दल के अंदर भी यह आवाज उठी कि सरकार ने गलती की है तो सरकार ने एक और नाटक रचा और हमारे भाइयों से कहा कि अविश्वास का प्रस्ताव लाओ ताकि विश्वास की दृढ़ता बन सके। क्या होना है सब जानते हैं कि यहां पर पार्लियामेंट में घोषणा हो जाएगी कि पूरे के पूरे लोग विश्वास करते हैं नरसिंह राव जी के नेतृत्व में। यह इस सरकार की एक साजिश सी लगती है। तो इससे काम चलने वाला नहीं है (समय की घंटी) चूंकि बार-बार घंटी बज रही है इसलिये मैं अपनी बात को दो-तीन मिनट में खत्म कर दूंगा।

आज जो परिस्थिति पैदा हुई है, मेरा कहना है कि अगर हम पुराने इतिहास को देखें तो हमारे यहां ऐसा इतिहास रहा है कि मस्जिदें हिंदू लोगों ने बनवाई और मंदिर मुसलमान लोगों ने बनवाये हैं । मैं आपको एक छोटा सा उदाहरण देता हूं। अयोध्या से मिला हुआ जिला बाराबंकी है, वहां पर देवा शरीफ एक ऐसा वाजिद अली शाह का मजार है जिसे हिन्दू राजा ने बनवाया। कन्हईपुर एक ऐसा गांव है जिसमें कार सेवकों द्वारा वहां के घर जला दिये गये । वहां दो मस्जिदें हैं और एकाध हिन्दू वहां मुश्किल से होगा, पचासों घर मुसलमानों के हैं। वहां के एक मुसलमान ने अपना पूरा मकान देकर एक भव्य मंदिर बनवाया है, जिसे हम लोग अभी देखने गये थे । ऐसे-ऐसे उदहारण हमारे देश में रहे हैं लेकिन आज धार्मिक उन्माद को फैलाकर राजनीति की रोटी को सेंकने वाले लोग इस देश में उत्पन्न हो गये हैं जो किसी न किसी तरह से सत्ता प्राप्त करके पुराने यथास्थितिवाद को लाना चाहते हैं जिससे लोगों में अशांति और घृणा का वातावरण पैदा हो । ऐसी चीजें वह पैदा करना चाहते हैं।

मैं यह कहना चाहता हूं कि ऐसे वातावरण को समाप्त करने के लिये अच्छा तो यह होता कि केन्द्रीय सरकार मस्जिद-मंदिर नहीं बनवाती बल्कि भारतीय जनता पार्टी के लोग आगे आते और वह कहते कि हमसे गलती हुई है, प्रायश्चित के रूप में हम मस्जिद बनवायेंगे, तब घाव भरते लेकिन वे शायद इस रास्ते पर नहीं आयेंगे । तो मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारी जो केन्द्रीय सरकार है उसको कम से कम इतना तो करना चाहिये कि कानून के दायरे में एक न्यायिक जांच आयोग बैठाना चाहिये ताकि यह निश्चित हो सके कि देश भर में जो दंगे फैले हैं उसका जिम्मेदार कौन है और अगर यह प्रमाणित हो जाय कि यह किसकी जिम्मेदारी है तो उसको किस कानून के अन्तर्गत सजा दी जायेगी यह भी निश्चित करना चाहिये ।

अन्त में एक और बात कहकर मैं अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं कि जो वर्तमान परिस्थितियां हैं उनमें सैन्य बल, पुलिस बल और जो भी बल हमारे पास मौजूदा हालत में हैं, इनसे ये जो दंगे उठ रहे हैं ये समाप्त होने की स्थिति में नहीं है । आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार एक ऐसा दंगा निरोधक दल बनाये जिसमें समाज के सभी वर्गों का आनुपातिक प्रतिनिधित्व हो, समाज के सभी लोग उसमें शामिल हों और उसका उपयोग दंगों को रोकने में किया जाये और एक अच्छा सा वातावरण पूरे देश में बनाया जाय और एक दूसरे से मिलकर, जगह-जगह जाकर, अलग-अलग क्षेत्रों में जाकर हम लोग बात करें तभी इस प्रकार की घटनाओं को रोक सकेंगे ।

मुझे विश्वास हैं और मैं आशा करता हूं कि सरकार इसमें खुले मन से सामने आयेगी । सरकार की लुकीछिपी वाली बातों से काम नहीं चलेगा और यह नहीं चलेगा कि आप सत्ता में बने ही रहें या न बने रहें क्योंकि आज प्राथमिकता देश को बचाने की है, सत्ता को बचाने की जो हमारी प्राथमिकता है इसको हमें पीछे धकेलना पड़ेगा । इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं । धन्यवाद ।

3.00 P.M.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Shri Bhupinder Singh Mann. The time for each Member is about five minutes. You try to conclude within that.

श्री भूपेन्द्र सिंह मान (नाम–निर्देशित) : उपसभाध्यक्ष महोदय, हमने अपने आप को संविधान दिया हैं जिसमें यह कहा गया है हैं कि हम सैक्युलर रहेंगे और हर एक देशवासी को यहां जीने का अधिकार होगा, स्वाभिमान के साथ हर एक को यहां रहने का अधिकार होगा; हर व्यक्ति के बजाय सारे समूह जो धर्म के नाम पर जो समूह हैं उनको भी जीने का अधिकार इसमें हैं । लेकिन जो स्वाभिमान की प्रतीक यहां चीजें जिनमें बाबरी मस्जिद एक प्रतीक बन गया था मुसलमान समुदाय के स्वाभिमान का, उसको गिराने के लिए जो यहां कहा जा रहा हैं कि कुछ लोगों को विश्वास दिया गया था उन विश्वासों को तोड़ा गया हैं । लेकिन बी.जे.पी. तो इलेक्शन ही इस बात पर लड़ी थी कि वह मंदिर बनायेंगे, तो क्या इसमें शक था कि मंदिर बनाने के लिए कौन सी जगह होगी ? जब मंदिर बनाने के लिए विधान सभा की इलेक्शन लड़ी गई थी उस बात से इस बात की नींव नहीं रखी गई थी कि मस्जिद गिराई जाएगी ? उस वक्त इस देश का कानून, इस देश का संविधान जिसमें सेक्युलर का शब्द हैं, वह कहां गया हुआ था, वह कहां छिपा रहा ? मैं समझता हूं कि इस संविधान के शब्दों के अर्थ अब तक हम सब एक जैसे नहीं समझ पा रहे हैं । कुछ लोग सेक्युलर शब्द का अर्थ अपने तरह से, अपने मतलब से लगाते हैं। जो उनको अच्छा लगता हैं वह लेते हैं । एक ही शब्द का मतलब हम अलहदा अलहदा

[श्री भुपेन्द्र सिंह मान]

तौर पर ले रहे हैं। क्या सरकार के तौर पर सेक्युलर शब्द का अर्थ एक है ? यह अलहदा अलहदा है। कांस्टीट्यूशन का शब्द का मतलब अलहदा अलहदा है तो मैं समझता हूं कि संविधान जो हमने अपने आप को दिया है, इतनी बेरहमी से उसका निरादर किया गया है, उसको तोड़ा गया है, उसकी पालना नहीं की गई। हमने धारा 51 में यह कहा है कि हम विधान को पूरे तौर पर मानेंगे। अब सवाल यह उठता है कि जो लोग इलेक्शन का प्ली लेकर यह कह रहे थे जिसका मतलब यह था मस्जिद तोड़ेंगे। जिनके शब्द यह थे कि हम मन्दिर बनायेंगे। किसी का गला नीचा करके अपना स्वाभिमान ऊंचा करना इस विधान में नहीं है। हां, हम खुद अपने में स्वाभिमान हैं, सेल्फ रिस्पेक्ट रखते हैं लेकिन दूसरे का गला नीचा करके नहीं। ऐसा सेल्फ रिस्पेक्ट इस विधान का असूल नहीं है, ऐसा मैं समझता हूं। कोई भी पार्टी चाहे वह ऐसी हो जिसने इलेक्शन नहीं लड़ना हैं या ऐसी जिसने इलेक्शन लड़ना है उसके संबंध में साफतौर से हो जाना चाहिए कि जो पार्टी की विधान की धारा को एक चित्त से नहीं मानती उसको विधान को यहां बाहर इधर-उधर करके उसके शब्द को मान लेने का कोई अधिकार नहीं है। महाराष्ट्र में शेतकारी संगठन ने हिन्दू शिव सेना को डिरिकोगनाइज्ड किया जाए एज ए पालिटिकल पार्टी यह इलेक्शन कमीशन को रिट पेटीशन दायर की। यह कहा कि यह एक कम्युनल पार्टी हैं। वह ऐसी बातें करती है जिसका विधान के साथ संबंध नहीं है। उसका अभी तक कोई निर्णय नहीं हो पाया। इससे विधान कमजोर पड़ रहा है दिन प्रति दिन कमजोर पड़ता जा रहा है और कमजोर पड़ने की वजह से जो विधान की विरोधी ताकतें हैं वे सिर उठा रही हैं। यह सरकार का फर्ज है कि वह विधान की बात करे न कि वोट की बात करे या कमजोर की बात करे। किस को कौन सी अच्छी लगती है, कौन सी बुरी लगती हैं यह सरकार का कर्तव्य होता है। सरकार र या न रहे विधान रहना चाहिए। य सरकार का कर्तव्य होना चाहिए। लेकि अगर सरकार का मुद्दा यह है कि सरकार रहे विधान रहे या न रहे तो मैं समझता हूं हम जो सब यहां बैठे हैं, उसके बारे में सोचते हैं उनके लिए भी यह जिम्मेदारी हो जाती है कि वह देखे विधान रहेगा तो हम सभी हैं। अगर विधान है तो एक सरकार नहीं है तो दूसरी सरकार आयेगी या तीसरी सरकार आयेगी। अगर विधान नहीं रहेगा तो सरकारें भी नहीं रहगी और हम जिस शक्ल में यहां बैठे हैं यह भी नहीं होगा।

कार सेवा के शब्द अपने आप में कार्य करने का शब्द है। उसमें हाथ से काम करने का शब्द है। उसका मतलब ही यह है। क्या मतलब है यह मानने का अच्छा लगता है। कार सेवा का स्पष्ट मतलब यह है कि हाथों से काम करना, स्वयं सेवी तौर पर काम करना, बिना पैसा लिये काम करना। क्या कार सेवा जो वहां होनी थी उसके लिए हमें पता नहीं था कि क्या होने वाला है। स्पष्ट था कि जो कह रहे थे कि हमें कार सेवा करनी है, कार सेवा में हमने मन्दिर बनाना है। कहां बनाना है स्पष्ट था कि मस्जिद गिराकर बनाना है। इस संबंध में सरकार विधान को बचाकर रखने में असफल रही हैं। इस बात को सरकार को बिल्कुल स्पष्ट तौर पर मानना चाहिए और जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि हां, हम विधान को बचाने के लिए, विधान की रक्षा करने में बुरी तरह फेल हुए हैं इस फेल्योर की जिम्मेदारी लेते हुए यह कहना चाहिए कि क्योंकि हम बचा नहीं सके इस विधान को इसलिए जो बचा सकता है वह आगे आये। इन हालात में कितने दंगे हुए जगह-जगह दंगे हुए, बहुत दर्दनाक घिनौनी हालत पैदा हुई, रोंगटे खड़े करने वाली बातें की गई। उसकी जिम्मेदारी क्या उन लोगों पर दोगे जो आपस में लड़ मर रहे थे मैं समझता हूं यह जिम्मेदारी उन लोगों की है जिन्होंने ऐसा माहोल पैदा करने होने दिया जिनसे लोग लड़ते-मरते रहे और हमारी ताकत बनती रहे। हमारी सरकार चलती रहे। यह वही कलोनियम रिजिम की पालिसी आगे बढ़ रही है जिसमें अंग्रेज कहता था बांटों

और राज करो। अगर सिख और हिन्दू बांटे जा सकते हैं और आपरे न ब्लू स्टार कर दिया जाए इसमें कोई हर्ज नहीं है बस सरकार बनी रहनी चाहिए। अगर मस्जिद गिराकर हिन्दू और मुसलमानों को बांट दिया जाए तो कोई हर्ज नहीं हैं हमारी सरकार बचनी चाहिए। यह कनालियम रिजिम की नीति नहीं चलनी चाहिए। यह दश भारतवासियों का है, यह दश यहां के देशवासियों का है। अगर ऐसी सोच रहेगी तो यह सोच हमें आगे जाने नहीं देगी।

जिस देश के लिए हम यह कहते थे कि बाकी सभी जो परम्परायें हैं उनसे हमारी परम्परा ऊपर हैं, हमारा देश सबसे ऊपर है और इसीलिए हम यह कहते थे कि——

मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम, वतन हैं हिंदूस्तां हमारा।

तो इस बात को कहने के लिए, मन में उतारने के लिए, सच मानने के लिए, इसमें पोलिटिक्स और वोट की राजनीति को छोड़ कर असली वोट की राजनीति करनी है तो इकनोमिक मुद्दों पर आइये। करो आर्थिक मुद्दों की बात और जो असली मुद्दे हैं उनकी बात करो। क्यों देश में कम्यनल मुद्दों और वोट की राजनीति करते हो। इसलिए मैं समझता हूं कि विधान को बचाने के लिए जो फेल हुए हैं, जो फैल्योर हुई है, इतना घोर अन्याय हुआ है विधान के साथ, हमने विधान के प्रति जो शपथ खाई है, यहां आकर खाई है, उसका सम्मान करना चाहिए। जो लोग विधान को बचा नहीं पाये हैं, मैं समझता हूं कि उन्हें फिराक दिली से कह देना चाहिए कि हम विधान को बचाने में फेल हुए हैं, जो विधान को बचा सकता है बचा ले। इस देश की हालत ऐसी हो गई है कि हम विधान को नहीं बचा पाये हैं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आखिरी बात कह कर यह कहना चाहता हूं कि सरकार का एक अंग पुलिस है जो दश में कानून और व्यवस्था को लागू करती है। हमें पता चला है कि पुलिस फोर्सेज में भी कम्युनल फोर्सेज जगह-जगह पर आ गई हैं। जिस विधान की हम बात करते हैं उसके तहत ये दश की सेवा कर रही हैं। उनमें भी अगर ऐसी बात आती है तो इन कम्युनल फोर्सेज को कड़े हाथों से लिया जाना चाहिए और इस देश को बचाना चाहिए। इन शब्दों के साथ फिर मैं आखिर में कहना चाहता हूं कि जो लोग सेक्युलेरिज्म की बात छोड़ कर यहां आते हैं, उनके मन में सेक्युलेरिज्म नहीं है, लेकिन फिर भी वे सेक्युलेरिज्म का मुखौटा पहन कर यहां बैठते हैं उनको पहले ऐसा नहीं करना चाहिए, लेकिन फिर भी वे ऐसा करते हैं। कम से कम विधान और कानून का डर तो नहीं होना चाहिए। विधान निरभव है, निडर है और निर्भय होना चाहिए। उसको किसी के साथ डर नहीं होना चाहिए। उसके लिए सभी एक होने चाहिए। विधान ऐसा होना चाहिए कि जैसे वह परमात्मा का प्रतीक हो। उससे किसी का भय, डर और विरोध नही होना चाहिए। ऐसे विधान को हमें आदर, मान और सत्कार देना चाहिए। इन शब्दों के साथ मैं यहां पर सभी बैठे हुए सदस्यों को धन्यवाद देता हूं जो आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया।

SHRI PRAKASH YASHWANT AMBEDKAR (Nominated): I have gone through the statement made by the hon. Home Minister. To my utter surprise the statement is a bundle of contradictions. On the one hand the statement says 'to protect the federal structure of the Constitution the Government has been inactive' and on the other hand after the 6th December incident, the Government says that 'it has no option but to act'.

SHRI N. K. P. SALVE: What is the contradiction?

SHRI PRAKASH YASHWANT AMBEDKAR: The contradiction is that right from 22nd November, not one State, but, if my information is right, nearly three States along with all three intelligence agencies, had stated before the Home Minister that the *kar seva* on the 6th was not going to be peaceful.

[Shri Prakash Yashwant Ambedkar]

Some of the States, which I would not like to mention, had gone further and stated that the plans had been prepared. Ultimately on the 6th of December what we saw was that the information given by the State Governments and the intelligence departments was put into action by the RSS-BJP combine. Then, we find that the Government is in panic. The Government say that they want solidarity. I do not know what kind of solidarity they want. I will not deal with that incident because according to me that is a past matter. The wishes and the minds of the people have been divided. The religious minorities in this country re feelng afraid. If we see after the 6th December incident, not even a single minority religious leader has said anything except condemning it They have come forward making an offer: "Look here, Government, we are ready to offer you our support." They are keeping silent. I say silence is the best answer or silence is speaking itself.

Mr. Vice-Chairman, I will address myself to what lies ahead. That is one of the most important things. Some of the honourable colleagues have referred to 6th December and why they have chosen that date. I find there is a rationality in its. Let us first understand what the RSS ideology is. Unless and until we understand the ideology of the RSS, we will not be in a position to achieve or save democracy which we want.

I am saying this because I am from that school of though which all along has been fighting and resisting the forces which are represented by the RSS combine. I am not against any community. I am not against any caste. What we have been fighting now and what my grandfather had said in the Cosstituent Assembly was we are going to face a life of contradictions. He said: "In the political arena we might have equality". But what we are concerned with today are the social inequalities which continue in this country. I will not go into the incident, how it has happened and why they have taken this stand. The ideology of the RSS is basically what I call Brahminism. I am not against the Brahmin community nor am I against the power and the prestige which goes with the Brahmin community. But what I understand by Brahminism is a negation of sovereignty, equality and brotherhood. What is the basis of Brahminism? The basis of Brahminism is the *manu smriti*. *Manu smriti* is in the heart of tre RSS. The reason for choosing 6th December was on this day this country had laid the architect of the Constitution to rest. It is on this day the Parliament pays homage to the statute which is placed outside the Parliament. On the one hand, we were paying our homage to the architect of the Constitution and on the other hand, the RSS wanted to make it a day of rejoice. This has been a contradiction and that is why they have chosen this date. This is their ideology and this is what we have to fight. We have to basically understand that these are anti-democratic forces. As they are anti-democratic forces, they are not going to listen to your Parliament. They are not going to listen to your courts. They are not going to listen to any sort of agreement that you are going to make because they want to use this Parliament, this democratic process, for coming to power. We might be able to corner the BJP in this House. But let me tell you, outside this Parliament, we have been cornered by the BJP. That is the reality. And that reality has come about, as I have been mentioning in this House quite often, because the generation that is born after Independence has no line of thinking. It has been indoctriated by the BJP-RSS line of thinking. It is time that action was taken. I would like to know from the hon. Home Minister, in the wake of the forces they are usin, in the wake of the anti-Muslim stand which they are using to unite Hindus, in the wake of their using the places of worship for their plans, whether the Government is going to place all the archaeological records of Ayodhya, of Varanasi, of Mathura, before this House so that we may know what exactly the position is. Unless and until we

know the archaeological position, people are going to be carried away because there were temples. History tells us that there were temples. And, if we are not able to say what kind of temples were there—whether they were temples which belonged to the Jains, whether they were temples which belonged to the Buddhists, whether they were temples which belonged to the Charvaks —with the kind of preaching, with the kind of tactics which they are using, they may be able to succeed. I appeal to the hon. Home Minister to look into this. They have been talking about Mathura; they have been talking about Kasi. The Archaeology Department had made a survey. Their reports should be placed before the House.

Sir, I come to the last part of it. Today, the communities are divided. With the Hindus on one side and the Muslims on the other side, they are divided. There is no dialogue going on between them. We were hoping that the Prime Minister would take a lead and ask these communities to sit together and at least think over what has happened in the past. But what we have seen is, nothing has been done. If I refer to some of the speeches that have been made by the Ministers, I have only one line to draw from them. If all these Ministers had the information as to what was going on and what would happen and what we hear from the press is true, then we stand over here accusing the Prime Minister of being a party to what has happened on the 6th of December. I do not know what the Minister or the Ministers want to say or convey. But if that is so, I feel that the Prime Minister has on option. In the teachings of Buddha, there is one Angulimal who said that whoever passed by him would be murdered. Either the head or a finger of the murdered would be tied round a string. Angulimal used to hang that string round his neck and say, "Look here, these are the people I have killed." I am afraid the Prime Minister is sitting on two riots. One is of 1984 in which nearly 3000 people, Sikhs, were killed. And today, after the 6th of December, when nearly 2,000 people have been killed, I may say that Angulimal was lucky enough to find Buddha who preached him that the humanity is the most important thing and he left that path. I hope that the Prime Minister will find some Bhuddha who will say, if the nation has to be saved, he must resign. Thank you.

PROF. SAURIN BHATTACHARYA (West Bengal): Mr. Vice-Chairman, had I not represented a party, albeit a small one in this House, perhaps, I would have foregone the humiliation of speaking in the manner in which many of us who belong to smaller groups of all parties have to speak. But so far so good. Now the point at issue is that what happened on the 6th of December at Ayodhya showed that both the sides—meaning the *Sangh Parivar* and the Central Government including the Prime Minister, the Home Minister and others—the Prime Minister with his unsparing efforts in the language of the Home Minister, the Home Minister in his usual communicative way by letter diplomacy —came out with flying colours. The *Sangh Parivar* came out truly in flying colours because of the fact that the ambition of their life was fulfilled when they brought down Babri Masjid at Ayodhya. It was for this that they had been fighting so long with deceit, with fraud and with violence unmitigated. Only today there is a news item in the press that it was in the knowledge of the Home Minister that trained people were going to Ayodhya to bring down the Babri Masjid and on the 1st of December, the Home Minister addressed the Chief Minister of Uttar Pradesh stating: "We have with us a very disturbing report that the experienced people are flocking to Ayodhya in order to bring down the Babri Mosque. Please take action so that it cannot happen." During these five days, many more letters went but there was calculated defiance and indifference on the part of the Uttar Pradesh Chief Minister who is

[Prof. Saurin Bhattacharya]

a part of the *Sangh Parivar.* Then, when this demolition took place, perhaps, my good friend, Mr. Sikander Bakht, the Leader of the Opposition in this House was not there nor the "Fast unto death" leader of the BJP, a very well respected leader in many parts of the country and in Parliament also, Mr. Atal Bihari Vajpayee. Mr. Lal Krishna Advani, our esteemed Member, Dr. Murli Manohar Joshi, the President of the BJP, Ashok Singhal, the Joint Secretary of the VHP, Vinay Katiyar and others, were all present, some to applaud, some to sit through silently. This has been their role on 6th December 1992 at Ayodhya. The secularism in India was given the worst hit by the *Sangh Parivar* Secularism has no meaning for them. I think, Mr. Bhupinder Singh Mann was very correct when in his blunt way he put the question to all of us, how these parties which did not make any secret of their intentions have been allowed to take their seats in the Legislative Assemblies, in Parliament and form Governments because their communalism is opposed to the Constitution. Who gave them the power to have such rights? This is the moot question. That is a national failure. That is a national lapse. Side by side, no party was free. If kar seva is not legal, how can 'symbolic kar seva' be legal? If kar seva should be symbolic, why was it not made clear by the Supreme Court that kar sevaks should be in token number, not in hordes, not in multitudes, not in lakhs. Our Home Minister waits till lakhs of kar sevaks assembled there. This is of no use. Even 195 battalions of paramilitary forces assembled there. They were not allowed to function, they were not asked to function, they were not asked to raise a single finger in order to defend the Babri Mosque. Here, the two sides were equally at fault, but, for the moment, the BJP with its rampage in the midst of communal riots all over the country which has just subsided but not routed out should be opposed. It is our first task to oppose the BJP and its politics and also to warn the Congress Governments that they will have to go away together with the BJP as an accomplice of this monstrous action that has taken place on that faithful day. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Shri Jagmohan. Your time is only five minutes.

SHRI N. K. P. SALVE: Sir, when do we expect the Home Minister to reply?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): There are six or seven speakers left. Therefore, each one will be getting five minutes.

SHRI S. B. CHAVAN: What is the total time allotted for this debate?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The total time allotted is six hours.

SHRI S. B. CHAVAN: It is almost ten hours. Everybody who is presiding there goes on adding three or four names. I don't know... *(Interruptions)*....

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: Sir, it is an aspersion on the Chair. It is the right of the Chair to allow the Members to speak.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI M. M. JACOB): Sir, I am repeating, if the Home Minister is going to reply at 4.00 P.M...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): If all the Members cooperate with me, it will be easy for me to ask the Home Minister to reply at 4 O' clock......

SHRI S. B. CHAVAN: You have to ask the Members to restrain.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): From my side I find the Chirman in the morning said that the allotted time was six hours and Members who had not spoken last time when their party-Members spoke will be allowed to speak. Now Independent Members are speaking and from som parties some names are there; I will consider them and if the time is permitted, I will allow them to speak.. ..(*Interruption*)....

SHRI B. V. ABDULLA KOYA (Kerala): Sir, some Members are deprived of speaking.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Koyaji, your name is there. You will be called.

श्री ईश दत्त यादव (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष जी, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है। मेरा निवेदन है कि इस देश में इससे बढ़ करके, जो छह तारीख को घटना हुई, उसके बाद हुआ, ऐसी भंयकर घटना कभी नहीं हुई होगी और भगवान न करे कि इस तरह की दुबारा कोई घटना हो।

देश के सामने और संसद के सामने यह गम्भीर प्रश्न बना हुआ है कि इस देश में जनतंत्र रहे कि न रहे। इस लिये मेरा निवेदन है कि जो माननीय सदस्य इस पर अपनी राय जाहिर करना चाहते हैं, सबको बोलने का आप अवसर दें, भले हीं पांच मिनट दें।

मान्यवर, मैं आपके माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूं कि चेयर पर आप बैठे है, आप विराजमान हैं। चेयर की एक मर्यादा होती है। जो मैंने सुना गृह मंत्री जी ने कहा ..(**व्यवधान**)।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): It is only a suggestion; it is not a point of order. (*Interruptions*)...

श्री ईश दत्त यादव: महोदय, यह कंटेंपट है। मेरा निवेदन सुनिये। गृह मंत्री जी ने कहा है.. (**व्यवधान**) गृह मंत्री जी ने यह कहा है कि, 'every person who is presiding there is adding some names.'

मैं आपके माध्यम से यह कहता हूं कि यह इस सदन का और इस चेयर का अपमान है इसलिये गृह मंत्री जी इस शब्द को वापस लें। यह आपका डिसक्रीशन है और आपका विवेक है कि सदन का कौन मेंबर कब बोले और किस क्रम में बोले। गृह मंत्री जी ने आपको एक तरह से चेयर कों धमकी दी है। इसलिये मैं मांग करता हूं कि आप गृह मंत्री जी से कहें कि वह अपने इन शब्दों को वापस लें। (**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): No, he has not threatened the Chair. Don't take it in that way.

श्री ईश दत्त यादव: सब को बोलने का अवसर दीजिये। यह गंभीर विषय है। गृह मंत्री जी को भागना नहीं चाहिये।

SHRI S. B. CHAVAN: Sir, I didn't mean any disrespect to the Chair. But at the same time we have to function under the decision taken by the Business Advisory Committee; otherwise, what is the Business Advisory Committee for? All Members collected, we took a decision and six hours, including the reply, was the time-limit fixed for this. (*Interruptions*)...

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: The Home Minister used, "every person in the Chair is adding three or four names". (*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Now, that matter is closed. The hon. Minister has explained that. That matter is closed now. Let us not waste our time on that. *(Interruptions)*...

SHRI V. GOPALSAMY: Mr. Vice-Chairman, in the Business Advisory Committee meeting what was decided was what was said by the Home Minister. It was indicated that there was no extension of the House. Now, there is a talk in the Parliament that the House may get extended for one day. So, if the House is extended, why can't the time allotted also be extended? *(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): No, no. The Chair will inform you when the House is extended. *(Interruptions)* Mr. Jagmohan.

SHRI JAGMOHAN (Nominated): Sir, I will cut short my speech in the light of what is being discussed What I have to say, I will say very briefly. I have not got up to dissect the events or apportion blame. I have got up to invite your attention to the basic fact which is the root cause of our crises, including the one that we are discussing.

What has happened is really the collective failure of the Indian polity, of the Indian administration, of the Indian judiciary and of the Indian mind and milieu. The current tragedy of India is the tragedy of contemporary ethos. It shows that just, enlightened and effective institutions cannot be built on diseased and deformed social and cultural base. Without healthy and strong foundational plans, the superstructure is bound to totter as it is doing now.

Unfortunately, since our tryst with destiny in August, 1947, we have been building political institutions without caring for the fundamental forces that govern the life of the nation, without simultaneously setting in motion a potent and pervasive reform movement which could have washed away all the dust and dros that we had accumulated during the long period of our decay and decadence. At the most crucial turning point in our history, we failed to understand that a new edifice could not be built on rickety and motheaten foundation.

We entertained a vision, I am quoting Panditji—a vision of building a mighty nation, mighty in culture and mighty in action, mighty in culture and mighty in peaceful service to humanity". This is very important. But we did nothing to create the necessary commitment to translate that vision into reality and provide spiritual or cultural underpinnings to our national objectives. Instead, we allowed ourselves to be overwhelmed by the culture of superficiality, softness and selfishness. Deception and hypocricy seeped into all-our constitutional concepts and made them vulnerable to easy manipulations.

The result is the concept of secularism was debased and despiritualised by the power-crazy and compromising mind of Indian power structure. Justice, equity and truth were sucked out of it. The concept was reduced to a *mantra* the repeated recitation of which was believed to propitiate the goddess of power. Commitment was not to the cause but to expediency. I have some illustrations but I will skip over because of the time factor. Let us, therefore, honestly and dispassionately take stock of the situation, carve out a new path, acquire a deep commitment, and initiate a vigorous reform movement which give meaning and content to our polity, our administration our judiciary and other institutions. Without a new vision, India cannot be reborn. It has to rediscover its lost soul or have a tryst with destiny. In the light of what I have said, would the hon. Home Minister indicate whether Government would attend to the larger

issues involved? Secondly, are the administrative cracks that have so often appeared in recent times proposed to be repaired. and if they are proposed to be repaired what is the modus operandi? Thirdly, how do Government view the type of masterly inactivity exhibited by the Allahabad High Court? What does the Government think about the Supreme Court's own error of judgement in not fixing a limit on the number of Kar Sevaks for the symbolic function and asking for affidavit with regard to a future event? I have heard of affidavits with regard to my past, to the best of my knowledge and belief. But how can I say that to the best of my knowledge and belief I will do this? I can swear today that I have passed my BA examination. But I cannot give an affidavit saying that I will pass my MA examination. How does the Government propose to safeguard, the interests of officers, particularly of the All India Services, who have followed the well established procedure of following the orders of their superiors in regard to executive matters? These are the three specific issues on which I request the Home Minister to enlighten us.

SHRI B. V. ABDULLA KOYA: Mr. Vice-Chairman, Sir, on the 6th December whatever occurred has occurred Thousands of people, men, women and children were either murdered or severely injured or became homeless for no fault of theirs. Their tears and prayers did not help them. Perhaps, this is the second tragedy in our country after the murder of our beloved Father of the Nation—Mahatma Gandhi. All of us are guilty one way or the other. But the really guilty are those who try to find fault with somebodyelse and try to escape. The country has been left at the mercy of a few thousand mad and frenzied people. These people do not believe in secularism, peace and brotherhood but only in achieving power by any means, by any undesirable means. It is high time that we identified and isolated them. The Central Government should rectify their mistake of handing over the safety of the so called rats who are at the mercy of the cats. People like Mr. Advani and Vajpayee should learn the lesson that truth and compassion and love are not the monopoly of one community alone but the precious possessions of our country. Masjid and mandir should exist shoulder to shoulder and the worshippers with namaz marks, sindoor marks and cross should walk arm in arm. That is what Islam taught us. That is why my two late lamented leaders, Bafakay Thangal and Ismail Sahib. taught us, through our political organisation. And we have been doing it that why very strictly. There are examples: in a remote village Angadipuram in Kerala, a masjid and a temple are standing side by side. When the Hindus wanted some space for the temple, our leaders agreed to that and it was because of the Muslim community's mercy that the two places of worship coexist. There are examples of such a thing in our capital city of Trivandrum. Our Digmasjid is adjacent to a temple and you can also see a church there. Nothing will happen there and wonderfully, people are worshipping co-existently. If this could be followed there, I would say that our elder brothers, the Hindu brothers, also can think of that. That is all. Thank you, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Shri Shiv Pratap Mishra, you have only five minutes and then I will ring the bell.

श्री शिव प्रताप मिश्र (उत्तर प्रदेश) : उपासभाध्यक्ष महोदय, अयोध्या में धार्मिक उन्माद के नाम पर जो कृत्य हुआ, उस पर अपने विचारों से इस महा-सदन में सभी ने व्याख्या की। किसी ने आरोप-प्रत्यारोप करके प्रधान मंत्री जी के लिये, किसी ने गृह मंत्री जी के लिये कहा और किसी ने

[श्री शिव प्रताप मिश्र]

तो यह कहा कि उच्चतम न्यायालय को लाने की क्या जरूरत थी। सभी ने अपना मत व्यक्त किया। लेकिन, मैं यह कह सकता हूं कि यह धर्म के नाम पर धार्मिक कृत्य नहीं था बल्कि यह धर्म के नाम पर अधार्मिक कृत्य था। कुछ लोगों ने कहा कि बाबरी मस्जिद में नमाज नहीं होती थी, मैं नमाज की बात नहीं कहता, लेकिन यहां नमाज का नहीं भावना का महत्व है। वहां पर हिन्दू लोग उसे मंदिर मानते थे और मुसलमान लोग उसे मस्जिद मानते थे। यह राष्ट्रीय एकता का प्रतीक था। जिस तरह से कबीर दास जी ने कहा था—

अरे, यह दोनों राह न जानी।
पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ,
पंडित भया न कोय।
ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।

कबीर जी ने जो कहा था, उस तरह से उनके विचारों के अनुसार यह वह स्थान था, जिसे तोड़कर हिन्दू और मुसलमान और तमाम लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाई गई है और जिससे राष्ट्रीय एकता एकदम क्षुण्ण हो गई है। इसलिये मैं बताना चाहता हूं कि यह धार्मिक कृत्य क्यों नहीं था क्योंकि हमारे पुराणों और धर्म-शास्त्रों के अनुसार वहां पर स्थान की महिमा थी, मंदिर की महिमा नहीं थी।

"तस्मात स्थानात—ऐशाने
रामजन्म प्रवर्तते।
जन्मस्थानमिद प्रोक्तम्
मोक्षादिफलसाधनम्॥

स्कन्दपुराण वैष्णव खंड (18)

यह हमारे पर्व पुराण में है कि उस स्थान का पहले से ही महत्व है, उस स्थान पर जाने से ही वहां पर कल्याण हो सकता है। वहां पर मंदिर की बात नहीं थी। मैं यह बताना चाहता हूं कि वैदिक ऋषियों को और वेदान्त के जानने वाले जो हमारे सन्त-ऋषि है उनको भी जब ज्ञान प्राप्त हुआ था तो वह मंदिर में नहीं हुआ था। "एकं सद् विप्रा बहुधावदन्ति! देवगण बहुत है, लेकिन उनका तत्व अर्थात परम सत एक ईश्वर है। यह ज्ञान किसी मंदिर में नहीं हुआ था, यह गुफाओं में हुआ था, कन्दराओं में हुआ था। इसी तरह से मैं बताना चाहता हूं कि प्राफेट मोहम्मद को, पैगम्बर को गारेहेरा में कुरान नाजिल हुआ था, जिसमें यह कहा गया था कि कुलहू अल्लाहो असद् (कह दो अल्लाह एक है) रब्बील आल मीन, वह सब जगह है। किसी मस्जिद में पैगम्बर को कुरान नाजिल नहीं हुआ था। इस समय समाधान की आवश्यकता है। हमारे धर्म की बात जब सोची जाय तो राम को जन्म लेना शब्द ही कहना, मैं मानता हूं कि यह उपयुक्त नहीं है क्योंकि राम के लिये कहा गया था कि "भए प्रकट कृपाला, दीन-दयाला, कौशल्या हितकारी।" राम किसी गर्भ से जन्म नहीं लिये थे, अवतार लिये थे।

"अजो नित्यं शाश्वतोऽयं पुराणो"

राम अवतार के पहले भी थे, अवतार के समय भी थे, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे। राम, ब्रह्म और अल्लाह एक ही हैं। जिस तरह तमाम नदियां समुद्र के जल में समुद्र को प्राप्त करने से मिल जाती हैं, उसी तरह से सभी धर्म एक ही सत्य, एक ही ईश्वर को जानने के लिये अग्रसर होते हैं लेकिन रास्ते को एक लक्ष्य बनाकर उसमें हिंसा करना, उससे राष्ट्र को तोड़ देना, उससे प्राणियों को दुख देना, जो कहा गया है हमारे हिन्दू धर्म में जो मैंने कहा कि अधार्मिक .. (**समय की घंटी**) ... मैं वहां का रहने वाला हूं अवध का और दो मिनट में यह बात नहीं कही जा सकती है।

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः
शरणं सुहृद्।

प्रभवः प्रलयः स्थानंनिधानंम
बीजमव्ययम्॥

मैं सबका मित्र हूं, सबका पालक हूं और तमाम ब्रह्मांड की उत्पत्ति, पालन और संहार का भी कारण हूं और जो बचता है, वह भी मैं ही हूं। ईश्वर एक है, उसके जो मार्ग के झगड़े हैं, उसको जिस तरह से मुद्दा बनाकर ये हत्यायें की गई, राष्ट्र को अस्थिर किया गया, इसको मैं नहीं मानता और इसका मैं विरोध करता हूं। जो काम अल्लाह करता है, वही ईश्वर करता है, केवल नाम पर्यायवाची है।

यानिइमानि भूतानि जायन्ते।
यानि जातानि प्रभवन्ति
यंत् प्रत्यम संविशन्ति तद्ब्रह्म ॥

वह ब्रह्म, ईश्वर और अल्लाह एक है जिस तरह मैंने बताया, लेकिन जो मंदिर और मस्जिद की बात है, वह उसकी स्मृति के लिए स्थाई तौर पर हमारे पैगम्बर, हमारे ऋषियों, हमारे शास्त्रों के अनुसार बनाई गई थी, लेकिन उसमें विवाद करके और उससे धर्म के नाम पर एक सम्प्रदाय को करना और सम्प्रदाय में देश का विभक्त करना, यह धार्मिकता नहीं है। लेकिन उस पर भी मैं कहना चाहता हूं, मैं गृह मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि यह समाधान का समय है। कुछ आदमी कुछ बोल रहे हैं, कुछ आदमी कुछ बोल रहे हैं, उससे उसका समाधान नहीं हो सकता है। ... (**समय की घंटी**)...अभी मैंने तीन दिन पहले पढ़ा समाचार-पत्रों में कि जिसके दो से अधिक संतान होगी, वह संसद में नहीं आ सकता। पहले यह भी मैंने नियम सुना था कि हरिजनों के साथ कोई भोजन नहीं करता था लेकिन जब कांग्रेस ने भारत को स्वतंत्र किया तो आज यह पाप माना जाता है। इसीलिए मैं गृह मंत्री जी को कहना चाहता हूं कि जो वह मस्जिद या मंदिर का निर्माण करें तो मस्जिद ऐसी बनाएं जिसमें नमाज़ हो सके और मंदिर ऐसा बनाएं जिसमें विवाद समाप्त हो जाए। फिर मैं कहना चाहता हूं कि वोट लेने के लिए आप अपने सिद्धान्तों को न छोड़िए। जैसे आजादी के बाद सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था कि "अगर आवश्यकता हो देश को एक रखने की तो यहां 20 साल तक चुनाव न किए जाएं।" आप चुनाव कराएं या न कराएं, जब राष्ट्र ही नहीं रहेगा तो यहां जम्हूरियत कैसे रहेगी, जब जम्हूरियत नहीं रहेगी तो आप चुनाव किसका कराएंगे?

दूसरे जो प्रधान मंत्री जी पर आक्षेप आया, वह आप पर आया। आप लोगों ने संविधान का उल्लंघन नहीं किया। Parliament is the maker of law and the Supreme Court is the interpreter of law.

आप ही का, यह पार्लियामेंट का बनाया हुआ कानून है, सर्वोच्च न्यायालय तो केवल उसकी व्याख्या करता है। तो आप अपनी बात कैसे काट सकते हैं। जब सुप्रीम कोर्ट और उच्चतम न्यायालय ने फैसला दिया ..(**समय की घंटी**).. और वहां पर अपना पर्यवेक्षक भेजा और उस पर्यवेक्षक की बात आप नहीं मानते हैं, तो अपना बनाया हुआ कानून भी आप नहीं मानते हैं। इसलिए संविधान का जो आपने पालन किया है, लेकिन इसमें एक धर्मनिरपेक्षता–सेक्युलरिज्म का जो ट्रांसलेशन किया गया है, वह गलत है। उसको यह कहा जाना चाहिए–सर्व धर्म सापेक्ष सिद्धांत। यहां से धर्म जाने वाला नहीं है। यहां कोई सुबह उठा तो सूरज की पूजा, रात को कोई उठा तो चन्द्रमा की पूजा, नहाने गया तो जल की पूजा, आम तोड़ने गया तो वृक्ष की पूजा, नाग पंचमी के दिन सांप की पूजा, अखाड़ा लड़ना हुआ तो हनुमान जी की पूजा और संगीत करना हुआ तो सरस्वती जी की पूजा, तो संसार का कोई व्यक्ति धर्म को नहीं मिटा सकता। ....(**व्यवधान**) लेकिन यह रास्ते हैं और इस रास्ते से केवल एक पाया जा सकता है।

महादेवानाम् असुरत्वमेकम्।

वह ईश्वर हर प्राणी में व्याप्त है, वह ईश्वर एक है, वही ईश्वर अल्लाह है, वही सब चीज है। अगर सब विवादों और राष्ट्रों के मतभेद को छोड़कर

[श्री शिव प्रताप मिश्र]

उसकी शरण में चले जाओ तब जाकर शांति मिल सकती है। भगवान श्रीकृष्ण ने इन मार्गों को देखा तो इसमें बड़ा विवाद हो सकता है। तो अन्त में उन्होंने क्या कहा—धर्म एक है, ईश्वर की शरणागति।

"सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

अगर धर्मो से विवाद होता है तो *सब धर्मों को छोड़ दो और सब धर्मो* को छोड़कर मेरा स्मरण करो और मुझ में शरण लो, मैं सब पापों से मुक्त कर दूंगा। धन्यवाद।

श्रीमती सुषमा स्वराज : उपसभाध्यक्ष जी, शुक्रवार की सुबह जो चर्चा 6 दिसम्बर और उसके बाद की घटना पर शुरू हुई, वह चर्चा आज समापन की तरफ बढ़ रही है। शुक्रवार की सुबह गृह मंत्री के वक्तव्य के तुरन्त बाद मेरी पार्टी के नेता माननीय सिकन्दर बख्त जी ने हमारी पार्टी का दृष्टिकोण रखा और उसके बाद जैसा अपेक्षित था, चर्चा का प्रवाह दूसरी ओर मुड़ गया। कमोबेश सभी दलों के साथियों ने अपनी बात एक से स्वर में रखी और सारी चर्चा का केन्द्र बिन्दु यह धारणा रही कि अयोध्या में 6 दिसम्बर को जो भी घटा वह भारतीय जनता पार्टी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद् की सोची-समझी योजना का परिणाम था। उपसभाध्यक्ष जी, आज जो पारस्परिक अविश्वास का माहौल देश में बना हुआ है, जिसकी झलक सदन में भी बराबर मिलती है उसके चलते मुझे मालूम है कि जो बात मैं कहने जा रही हूं उस पर बहुत कम साथी यकीन करेंगे। तो भी मैं इस बात को यहां इस लिए दर्ज कराना चाहती हूं कि आज दो निष्पक्ष संस्थाओं द्वारा अयोध्या कांड की जांच के आदेश दिए जा चुके हैं। सी.बी.आई. इसकी जांच कर रही है और एक विशेष आयोग इस जांच के लिए बना है। जांच आयोगों के सामने जरूर इस तरह के तथ्य आएंगे जो मेरी बात को सही साबित कर सकेंगे।

उपसभाध्यक्ष जी इस सारे ढांचे को ढहाने के लिए कोई पूर्व नियोजित कार्यक्रम था या नहीं, इस पर तो आज एक सवालिया निशान लगा हुआ है। लेकिन एक बात मैं पूरे विश्वास के साथ, पूरी दृढ़ता के साथ इस सदन में कहना चाहती हूं कि अगर थोड़ा भी यकीन मुझ पर मेरे साथियों को है, तो वह मानलें कि 6 दिसम्बर को जो घटा उसका पता तो दूर उसकी भनक तक लाल कृष्ण आडवाणी जी या कल्याण सिंह को नहीं थी। इस बात का सबूत उन दोनों के द्वारा दिया गया इस्तीफा है। आप कह सकते हैं कि कल्याण सिंह को मालूम था कि उनकी बर्खास्तगी लाजमी है इसीलिए उन्होंने इस्तीफे का नाटक रचा। आप कह सकते हैं कि आडवाणी जी को मालूम था कि उनका दल उन्हें दोबारा चुन लेगा इसलिए उन्होंने इस्तीफे का ड्रामा कर दिया। लेकिन उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से कहना चाहती हूं कि इस बात को इन संदर्भों में इतना हल्का करके न नापें। एक बार अगर आप इसको साफ रोशनी

4.00 p.m. में देखने की कोशिश करेंगे तो समस्याओं के समाधान की तरफ बढ़ेंगे। इस्तीफे से जाना या बर्खास्तगी का बाना ओढ़कर, जाना, इन दोनों में बुनियादी अंतर है अगर यह योजना कल्याण सिंह की रही होती तो मैं दृढ़ता से कहती हूं कि वे इस्तीफे के बजाय बर्खास्तगी से जाना पसंद करते क्योंकि कार-सेवक ऐसा चाहते थे। ढांचे को ढहाने वालों के सामने वे शहीदी का बाना ओढ़ना पसंद करते। कार-सेवक नहीं चाहते थे कि कल्याण सिंह इस्तीफा दें और इस्तीफे से अपनी असहमति उनके कर्म के प्रति प्रकट करें। कार-सेवक नहीं चाहते थे कि आडवाणी इस्तीफा दें और कार-सेवकों को हतोत्साहित करें। वे चाहते थे कि वे बर्खास्तगी करके शहीदी का बाना ओढ़कर जाएं। अगर कल्याण सिंह जी और आडवाणी जी की

उस ढांचे को ढहाने की योजना रही होती तो बजाय इस्तीफा देने के उपसभापति जी, वे शिखंडी की तरह अट्टहास करते और कहते कि देखा हमने सबको मूर्ख बनाया। अगर यह योजना उनकी रही होती तो बजाय इस्तीफा देने के वे कार-सेवकों के साथ खड़े होकर उनके सुर में सुर मिलाकर कहते कि ये साढ़े चार सौ साल का कलंक देखा हमने साढ़े चार घंटे में ढहा दिया।

महोदय, मैं यह बिल्कुल नहीं कह रही हूं कि उस ढांचे से कल्याण सिंह या आडवाणी जी को कोई मोह था। मैं यह भी नहीं कह रही हूं कि वे उस ढांचे को कलंक नहीं मानते थे। किसी भी हमलावर का विजय चिह्न किसी के लिए गौरव का प्रतीक नहीं हो सकता लेकिन वे इस ढांचे को ढहाने के पक्षधर नहीं थे और इसीलिए मैं कहती हूं कि जब उन्होंने प्रधानमंत्री को वचन दिया, जब उन्होंने संसद में वचन दिया, जब उन्होंने न्यायपालिका के सामने हलफनामा दिया तो उनके मान में कोई दुविधा नहीं थी, वे पूरी तरह आश्वस्त थे कि वे उस ढांचे की सुरक्षा कर सकेंगे और जब वे उस आश्वासन को पूरा नहीं कर पाए तो उन्होंने उसकी नैतिक जिम्मेदारी ओढ़ करके इस्तीफा दिया है। मैं आपके माध्यम से गुजारिश करूंगी, चूंकि मेरी पार्टी की तरफ से केवल सिकन्दर बख्त जी बोले हैं और तमाम बातें हमारे खिलाफ कही गई हैं इसलिए मैं सदन के तमाम साथियों से दरख्वास्त करूंगी कि मुझे दस मिनट का समय दें... (व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Madam, you were given five minutes and your time is over. The hon. Home Minister has to reply now.

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं वही कह रही हूं, मैं गृह मंत्री जी से दरख्वास्त करूंगी कि वे आपसे रिक्वैस्ट करके कम से कम मुझे दस मिनट का समय दे दें... **(व्यवधान)** यहां बहुत उत्तेजक भाषण हुए हैं, मैं अपनी बात उत्तेजना में नहीं वेदना में कह रही हूं और एक बात कह दूं कि मैं जो बात कह रही हूं उससे माहौल बिगड़ेगा नहीं, मैं वह बात कह रही हूं जिससे आप समस्या के समाधान की तरफ जाएंगे। इसलिए आप कृपा करके मुझे 10 मिनट का समय दें।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): No, not ten minutes. I gave you five minutes and your time is over. Please conclude.

श्रीमती सुषमा स्वराज : बार-बार एक आरोप लगाया जा रहा है कि उत्तर प्रदेश की सरकार ने कोर्ट की अवमानना की। लगातार हर व्यक्ति यह बात कह रहा है। लेकिन मैं अपने साथियों से बड़े अदब के साथ एक बात कहना चाहूंगी और खासकर साल्वे जी से जो बहुत फाईन डिस्टिंक्शन जानते हैं कि कोर्ट की अवमानना करना या कोर्ट के आदेश की अनुपालना न करा पाना, दोनों चीजों में बुनियादी अंतर है। कोर्ट की अवमानना की जड़ में कोर्ट के प्रति अनादर का भाव रहता है। अदालती आदेश की अवमानना करने वाला व्यक्ति कोर्ट को हिकारत की निगाह से देखता है या उसके अस्तित्व को नकारता है लेकिन कोर्ट के आदेश की अनुपालना न करने की जड़ में लाचारी और बेबसी होती है और इस लाचारी का सामना पहली बार किसी भारतीय जनता पार्टी द्वारा शासित किसी राज्य की सरकार को करना पड़ा है ऐसा नहीं है। बीसियों उदाहरण इस देश में मौजूद हैं जहां विभिन्न दलों की राज्य सरकारों के सामने इस तरह की लाचारी सामने आई है और स्वयं केंद्र सरकार ने भी इस तरह की लाचारी का सामना किया है। बनारस का वह निर्णय कब्रिस्तान का जो शिया और सुन्नी के झगड़े का है, उस मामले में सुप्रीम कोर्ट का आदेश आज तक तामील का इंतजार कर रहा है केवल शांति भंग होने के डर से उस आदेश की तामील नहीं हो पाई। केरल सरकार के पास आज तक एक सम्मन पड़ा है शाही इमाम की गिरफ्तारी का लेकिन वह तामील नहीं कर पाई क्योंकि शांति भंग होने का खतरा है। दूर क्यों जाएं, कावेरी विवाद का मसला सुप्रीम कोर्ट ने तय किया गृह मंत्री जी, आप उसकी तामील नहीं करा पाए, यहां आपकी सरकार है

और राज्य में आपके अपने दल की समर्थित सरकार है । अभी मंडल आयोग की सिफारिशों का निर्णय आया लेकिन सरकार अभी भी रास्ता ढूंढने की कोशिश कर रही है, तमाम राजनीतिक दलों से उस पर सहमति बनाने की कोशिश कर रही है ।

कल्याण मंत्री (श्री सीताराम केसरी) : उस पर ऐक्शन शुरु कर दिया है ।

श्रीमती सुषमा स्वराज : मेरा कहने का मतलब यह है कि इस तरह की लाचारी और बेबसी केन्द्र सरकार के सामने भी आई है अब एक बात मैं पूछना चाहती हूं आपसे, कि आपका एक वक्तव्य आया, जो फैसलों की घोषणाएं आपने दूरदर्शन पर और बाहर कीं, उन्हीं फैसलों को आपने इसमें दोहराया । मैं पूछना चाहती हूं, ये चार फैसले भारतीय जनता पार्टी के नेताओं की गिरफ्तारी, कुछ संगठनों को सांप्रदायिक कहकर उन पर लगाई गई पाबंदी, हमारी तीन राज्य सरकारों की बर्खास्तगी और सबके ऊपर वहां दोबारा से मस्जिद बनाने का ऐलान, ये हेकड़ी भरे फैसले आपको समस्याओं के समाधान की तरफ ले जाएंगे या समस्याओं के नए रूप में उलझाकर आपके सामने खड़ा करेंगे ?

आपने आडवाणी जी की गिरफ्तारी की, जिस एफ०आई०आर० के आधार पर की उसके अंदर का मसौदा पढ़ा आपने ? एक आरोप लगाया उन पर कि मंच पर खड़े होकर वह नारा लगा रहे थे "एक धक्का और दो बाबरी मस्जिद तोड़ दो"। मैं पूछना चाहती हू आडवाणी जी इसी सदन के सम्मानित सदस्य रहे हैं, बहुत से मेरे साथी उनके साथ रहे होंगे उनके कुलीग के तौर पर, आपके लाख मतभेद हों उनसे आप लाख उनको कुछ भी कहते हों, यहां तो पागल तक कह दिया गया था उनको लेकिन क्या एक भी मेरा साथी अपनी आत्मा पर हाथ रखकर यकीन से यह कह सकता है कि आडवाणी जी ये नारा खड़े होकर लगा सकते हैं ? इतने हल्के आरोप पर आपने गिरफ्तारी की और संगठनों पर पाबंदी, वे संगठन जो कल तक आपके साथ बात करते थे, वे संगठन जिनके नेता कल तक राष्ट्रीय एकता परिषद के सदस्य थे, इस एक घटना के कारण वे इतने सांप्रदायिक हो गए कि आपने उन पर पाबंदी लगा दी ।

मैं तो नेहरू जी को क्वोट करना चाहती थी। एक किताब है "लिविंग इन ए न्यू इरा" द्वारकाप्रसाद मिश्र, जो आपके मुख्यमंत्री रहे हैं, उनकी आप यह किताब पढ़िए उसमें उन्होंने नेहरू जी को क्वोट किया है कि--

"अगर आप इस देश में किसी भी विचारधारा का काट करना चाहते हैं तो उसका समाधान संस्थाओं पर प्रतिबंध लगाना नहीं, उसके साथ वैचारिक लड़ाई लड़ना है"

लेकिन आपने इन पर प्रतिबंध लगाया। तीन सरकारों की बर्खास्तगी की, क्यों ? क्या असंवैधानिक काम किया था हिमाचल प्रदेश की सरकार ने, राजस्थान की सरकार ने या मध्य प्रदेश की सरकार ने ?

अगर चतुरानन मिश्र यहां होते तो मैं पूछती, वह कह रहे थे कि वहां पुलिस के संरक्षण में गोली चलाई गई। मैं पूछना चाहती हूं गृह मंत्री जी से कि महाराष्ट्र में क्या हुआ ? मीठा-मीठा गप्प और कड़वा-कड़वा थू यह नीति कैसे चलेगी। क्योंकि महाराष्ट्र और गुजरात में कांग्रेस शासित सरकारें हैं इसलिए उनके सौ गुनाह भी माफ और उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल में भाजपा की सरकारें हैं इसलिए बेगुनाही के बावजूद ये दोनों काम एक साथ नहीं चलेंगे। ये नीति आपको कहीं नहीं ले जाएगी और फिर वहां मस्जिद बनाने का ऐलान, मैं पूछना चाहती हूं, यशवंत सिन्हा यहां बैठे हुए हैं, बहुत आर्टिकुलेट ढंग से उन्होंने एक बात कही थी कि विवादास्पद जगह पर विवादास्पद ढांचा बनाने का मतलब विवाद को नए सिरे से जन्म देना है लेकिन मैं आपसे पूछना चाहती हूं आप वहां पर मस्जिद बनाने का ऐलान करके कौन से समाधान की

तरफ जा रहे हैं। लोग कहते हैं विश्वासघात हुआ है प्रधानमंत्री के साथ, वह आहत हैं इसलिए वे इस तरह के फैसले ले रहे हैं।

मैं आपसे कहना चाहती हूं बड़े अदब के साथ कि प्रतिकूलता में ही धीरज की परीक्षा होती है। जरूर आहत हैं प्रधानमंत्री। मैं मानती हूं कि वे आहत हैं लेकिन अनुकूल और सामान्य परिस्थितियों में तो कोई भी आदमी धीरज रख सकता है परन्तु प्रतिकूलता ही कसौटी है धीरज को रखने की। ये मस्जिद बनाने की घोषणा उसी सोच का परिणाम है जिस सोच के चलते ये ढांचा ढहाया गया।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : प्राईम मिनिस्टर ने किसी भी मौके पर ये नहीं कहा कि मस्जिद बनाई जाएगी। उन्होंने विवादित ढांचा कहा.... (**व्यवधान**)

†[شری محمد افضل عرف م۔ افضل: پرائم منسٹر نے کسی بھی موقع پر یہ نہیں کہا کہ مسجد بنائی جائیگی۔ انہوں نے وواوت ڈھانچہ کہا۔ ..

"مداخلت"]

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं आपकी बात मान लेती हूं कि उन्होंने विवादित ढांचे के पुनर्निर्माण की बात कही है। मैं ये कहना चाहती हूं कि विवादित ढांचे के पुनर्निर्माण की घोषणा उसी सोच का परिणाम है जिस सोच के चलते यह ढांचा ढहाया गया। ढहाने के पीछे क्या सोच थी, यही सोच थी ना कि यहां हमारा मंदिर था, एक हमलावर ने आकर ढहा दिया, जब तक इस मस्जिद को दोबारा नहीं ढहाया जाएगा तब तक न्याय नहीं होगा। आज वही सोच आप ले रहे हैं कि क्योंकि यहां मस्जिद थी और क्योंकि वह ढहा दी गई इसलिए उसको दोबारा बनाए बिना न्याय नहीं होगा... (**व्यवधान**)

[**उपसभापति पीठासीन हुई**]

उपसभापति : आपका समय खत्म हो गया, अब आप बैठ जाइए... (**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं यह कहना चाहती हूं कि कुछ उन्मादी युवकों की सोच, शासकों की सोच से मेल नहीं खा सकती। शासकों से लोग कुछ गंभीर सोच की अपेक्षा रखते हैं। ऐसा मत मानिए कि सब कुछ समाप्त हो गया। लोग कई बार बहुत निराशा और हताशा की बात करते हैं और कहते हैं सब कुछ खत्म हो गया, अंधकार हो गया। कोई प्रकाश की किरण नहीं दीखती। लेकिन मैं आपको कहना चाहती हूं उपसभापति महोदया, आप मेरी इस बात को जो दो लाइन में कहना चाहती हूं जरूर एप्रिशिएट करेंगी। ऐसा नहीं है। ऐसे तो वाक्यात होते हैं। ऐसे फेजेज हर देश की उम्र में आते हैं। हिन्दुस्तान में तो ऐसे वाक्यात बहुत देखे हैं और उन्हीं में से नई राह निकली है। उसी के लिए ये दो लाइनें कही गई :

जहां पर बंद होते हैं सभी ये रास्ते

आकर, वहीं से फूट पड़ती है नई राहें जमाने की।

आज वह नई राहें फूटने का समय आ गया है। फूटेंगी, निश्चित फूटेंगी। मैं आपको सुझाव देती हूं। वह नई राहें आयेगी और उसी अंधकार में से प्रकाश की किरणें उदय होंगी। (**व्यवधान**) आप यह ढांचा पुनः बनाने की बात छोड़ दीजिए। एक काम करिये और उसमें एक समय सब की सहमति भी थी... (**व्यवधान**) सभी ने यह माना था कि यदि यह साबित हो जाए कि यहां मन्दिर था तो यह ढांचा हिन्दुओं को मन्दिर बनाने के लिए दे दिया जाएगा और मस्जिद कहीं और बनेगी। आज आपके पास जमीन है, आज आपके पास कब्जा है, आपके पास पुरातत्वज्ञाता है। कुछ समय पहले शिया भाइयों ने हलफनामा भी दाखिल किया था

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

और एक बार शहाबुद्दीन साहब ने भी यह बात कही थी कि बाबर के पाप की गठरी हम अपने सिर पर क्यों लादें। इस शीर्षक से उनकी एक खबर भी छपी थी। मैं यह कहना चाहती हूं कि आप पुरातत्ववेताओं को बुलवाइये देश-विदेश के पत्रकारों की टीम बुलवाइये, अपने दूरदर्शन को ले जाइये और वहां पर और खुदाई करवाइये। अगर वहां पर मन्दिर के अवशेष मिलते हैं तो आप यह जमीन हिन्दुओं को सौंप कर मन्दिर बनवाइये। लेकिन इसी के साथ बहुत ही नजदीक में एक मस्जिद का निर्माण हो जिसका नाम सदभावना मस्जिद हो। मैं आपको रास्ता देती हूं . . . (**व्यवधान**)

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी (उत्तर प्रदेश) : अगर वहां मन्दिर साबित नहीं हुआ तो बताइये . . . (**व्यवधान**)

†[مولانا عبیداللہ خاں اعظمی: اگر وہاں مندر ثابت نہیں ہوا تو بتایئے۔۔۔ "مداخلت"]

SHRI S. JAIPAL REDDY (Andhra Pradesh): You canot make a conditional offer. You make an unconditional offer on behalf of your party. (*Interruptions*). Sushmaji is a responsible Member of this House. She is speaking on behalf of the BJP. Will she stand by the judgement of the Supreme Court in this regard? How can it be a conditional offer?

माननीय सदस्य : सत्य से मुंह छिपाना चाहते हैं। (**व्यवधान**)

श्रीमती सुषमा स्वराज : उपसभापति जी, जो जयपाल रेडडी जी ने कहा है मैंने सुझाव ही यदि के साथ रखा है तो उसमें जवाब निहित है। मैंने सुझाव यदि के साथ शुरू किया है। . . . (**व्यवधान**) . . .

SHRI S. JAIPAL REDDY. Do not dabble and quibble. (*Inerrtuptions*). You are again dabbling and quibbling which is characteristic of the BJP.

श्रीमती सुषमा स्वराज : थोड़ी दूर पर ही एक मस्जिद बनवा दीजिए और उस सदभावना मस्जिद पर आने वाला एक-एक पैसे का खर्चा हिन्दू दे। (**व्यवधान**)

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : मुसलमान भिखारी नहीं हो गया है कि आप से पैसा ले। (**व्यवधान**)

†[مولانا عبیداللہ خاں اعظمی: مسلمان بھکاری نہیں ہو گیا ہے کہ آپ سے پیسے لے۔۔۔"مداخلت"]

श्रीमती सुषमा स्वराज : एक-एक पैसे का खर्चा हिन्दू दे और हिन्दू स्वयं कार सेवा करके उस सदभावना का निर्माण करे। ऐसा नहीं है कि सब राहें बंद हो गई हैं। आज इस संसद से एक नई तारीख की शुरुआत हम कर सकते हैं और मैं चाहूंगी कि गृह मंत्री जी इस सुझाव पर रिएक्ट करें और एक नई तारीख की शुरुआत करें। धन्यवाद। (**व्यवधान**)

उपसभापति : मैं हाउस को कांफिडेंस में लेना चाहती हूं। बहुत से नाम मेरे पास हैं। सवाल यह है कि यहां पर गृह मंत्री जी को भाषण भी करना हैं। केसरी जी बोलना चाहते हैं, मिस्टर धवन का नाम है, सिद्दीकी साहब, ओबैदुल्ला आजमी जी, कमला सिन्हा जी सब का नाम है। (**व्यवधान**) पांच मिनट में कोई बोलता नहीं है। कम से कम मैं गलतबयानी का काम चेयर से नहीं करूंगी। आप लोग पांच मिनट कहते हैं और कोई 20 मिनट से पहले चुप नहीं होता फिर झगड़ा शुरू हो जाता है। (**व्यवधान**) I will not tell a lie and I won't be a hypocrite.

15 मिनट में कोई बोल नहीं पाता हैं। (**व्यवधान**)

Let us not talk unnecessarily.

†[ ]Transliterations in Arabic Script.

मौलाना ओबेदुल्ला खान आजमी : मैं आपसे वादा करता हूं कि पांच मिनट में खत्म कर दूंगा । बड़ा अहम मसला है। **(व्यवधान)**

†مولانا عبیداللہ خاں اعظمی: میں آپ سے وعدہ کرتا ہوں کہ پانچ منٹ میں ختم کر دوں گا۔ بڑا اہم مسئلہ ہے۔۔۔"مداخلت"۔

उपसभापति : आप सुबह बोल चुके हैं। **(व्यवधान)** आजमी जी एक मिनट सुन लीजिए। जो नहीं बोले हैं। **(व्यवधान)** मेरा कुछ नहीं है कि मैं नही बोलने दूंगी। यह हाउस किन्हीं नियमों पर चलता है। इसीलिए कह रही हूं और मैंने सुबह सब को यह कहा कि कृपया अगर संक्षेप में बोलें तो आपके सब भाई बंधु बोल सकते हैं। आप सुबह बोल चुके हैं । आपके बदले में समद साहब को पहले इजाजत दूंगी।

श्री संघ प्रिय गौतम : मैडम, मैंने भी नाम दिया है ।

उपसभापति : मैं तो सब के नाम लिख दूं, लेकिन मेरे लिखने से हाउस का समय बढ़ नहीं जाता है... **(व्यवधान)** । आप बहस न करें । 5 मिनट उनको बोलने दीजिये ताकि जल्दी-जल्दी से मामला खत्म हो... **(व्यवधान)**...। मुझे कोई एतराज नहीं है आप 2 बजे रात तक बैठिये । सब को बोलने दूंगी, इधर से भी और उधर से भी । समद साहब, आप 5 मिनट में खत्म कीजिये ।

श्री अब्दुल समद सिद्दीकी (कर्णाटक) : हम आज बदबख्त दौर से गुजर रहे हैं । भा.ज.पा. या संघ परिवार ने जो किया उस पर जितना रंज किया जाय, जितना मदीद इजहार गम का किया जाय और जितनी बड़ी सजा उनको दी जाय वह कम है । लेकिन सवाल यह है कि क्या हमारे देश में कोई हुकूमत है और क्या इस देश में इंसानों और सिविलाइज्ड इंसानों का बनाया हुआ कानून है या जंगल का कानून रह गया है? अफसोस इस बात का है कि जो डिमोल्यूशन हुआ, मस्जिद शहीद कर दी गई, वह एक साजिश का नतीजा थी । उस साजिश में बिना शुबहा देश के प्राइम मिनिस्टर शामिल और शरीक थे । मैं उनकी जहनियत को बताऊं । आपने बड़ी तरक्की की है । चीफ मिनिस्टर से प्राइम मिनिस्टर बन गये हैं । यह तरक्की इनके जहनियत में भी हुई है । कभी ये कहा करते थे कि मुसलमानों के कान कतर दिये जाएंगे । उनके कान में शीशा पिघला कर डाला जाएगा । उसकी इंतिहा देख ली गई है मस्जिद के डिमोल्यूशन में। सवाल यह है कि अगर भोपाल में, मध्य प्रदेश में जुल्म हुआ है, हजारों मुसलमान शहीद हुए हैं तो क्या महाराष्ट्र में नहीं हुए हैं, कर्णाटक में नहीं हुए हैं, गुजरात में नहीं हुए हैं? वहां के लिए कौन जिम्मेदार है? क्या कर्णाटक की जिम्मेदारी भी आडवाणी के सिर पर डाल देंगे? क्या महाराष्ट्र की जिम्मेदारी भी आडवाणी के सिर पर डाल देंगे? क्या कर्णाटक और आन्ध्र प्रदेश में जो हुआ है उसकी जिम्मेदारी आडवाणी के सिर पर डाल देंगे? अगर देश में कोई हुकूमत आज भी है तो क्या मैं होम मिनिस्टर से यह पूछूं कि क्या आप दिल्ली के उस हिस्से में गये हैं जहां पर सैकड़ों लोगों का खून बहा है? क्या आप भोपाल गये हैं, क्या आप बम्बई गये हैं? क्या वहां आपने रिएक्ट किया है? अगर आप 12 बजे भी रिएक्ट कर लेते 6 दिसम्बर को तो मस्जिद को तोड़ने से रोका जा सकता

†[ ]Transliteration in Arabic Script.

था। आपकी रोकने की नियत भी नहीं थी। आपने एक छोटा-सा काम मस्जिद को तोड़ने से रोकना का भी नहीं किया। आखिर आप करना क्या चाहते हैं ? आपने आज इस देश के मुसलमानों को धकेल कर 1947 में खड़ा कर दिया है और नवजवानों को इस हद तक धकेल दिया है कि उनके सामने कोई रास्ता नहीं रह गया है। आपने उनको मिलिटेन्सी की तरफ धकेल दिया है। क्या यह नेक और अच्छा काम हुआ है ? अगर इसकी जिम्मेवारी इस देश के प्राइम मिनिस्टिर और होम मिनिस्टिर की नहीं है तो फिर क्या हम इस देश के प्राइम मिनिस्टर के आफिस में जो चपरासी है उससे पूछें ? अगर आप जिम्मेवारी नहीं ले सकते हैं तो हट जाइये, इस्तीफा दीजिये। उसके बाद हमसे पूछिये। हमने क्या किया था ? अपको याद होगा, 1989 में यही परिस्थिति थी तो वी० पी० सिंह ने अपनी हुकूमत छोड़ दी थी इसी मसले पर। आपने देश में कत्ले आम कराया मुसलमानों का। आप बताइये और मोमेनपुरा, गुलबर्गा जाइये या मोमेनपुरा और नागपुर जाइये जहां मुसलमानों की अपनी लोकेलिटी के अन्दर मुसलमान इस दुख से परेशान हाल अपने दुख का इजहार करने के लिए जमा हुए थे। न वहां किसी हिन्दु का घर था, न कोई टेम्पल था, जिसको खतरा था लेकिन आपने उनको गोलियों से भून दिया। सैकड़ों नौजवान शहीद हो गये। क्या कसूर था उनका ? दूसरी तरफ जब अयोध्या की तरफ लोग जाने लगे कार सेवा के लिये तो सिंघल ने कहा था कि अगर हमको असल मायने में कार सेवा करने नहीं देंगे तो हम मुसलमानों की कार सेवा कर देंगे। उस समय होम मिनिस्टर ने क्या रिऐक्ट किया और प्राइम-मिनिस्टर ने क्या रिऐक्ट किया यह हमें बतायें। हजारों-लाखों आदमी वहां चले गये, अयोध्या में और वे हथियारों से लैस होकर गये। उनके पास तलवारें थीं, सब्बल थे, त्रिशूलें थे, ऐसी चीजें उनके पास थीं जिससे वे वहां तबाही ला सकते थे। लेकिन वहां आपने रबड़ की गोली भी नहीं चलाई। आपने वहां रबड़ की गोली नहीं चलाई जब वह चबूतरा बना रहे थे और उस समय का होम मिनिस्टर साहब का और प्राइम मिनिस्टर साहब का बयान हमारे सामने है जिसमें उन्होंने कहा था कि हम निहत्थे साधुओं और कार-सेवकों पर गोली नहीं चलायेंगे ? क्या मुसलमानों के हाथों में राइफलें थीं, क्या उनके हाथों में हथियार थ, जो आपने उन पर गोलियां चलायीं और उनको भून कर रख दिया। इसका कौन जवाब देगा ? इसका खून किस के सर पर होगा, आप बता दीजिये। होम मिनिस्टर साहब आप बता दें, हमारे वह लोग जो यहां बैठे हैं बता दें कि आपकी तसल्ली कितना और खून पीने के बाद होगी ? आपको मैं... (व्यवधान)... खामोश रहकर आप... (व्यवधान)... आप इसके लिये जिम्मेदार हैं। आपने शिवसेना को बैन नहीं किया। शिवसेना के लीडर ने साफ लफ्जों में कहा है कि कार-सेवा हमने की है और मस्जिद हमने तोड़ी है। इसके बावजूद आपने उसको बैन नहीं किया।

†[شری عبدالصمد صدیقی • کرناٹک : ہم آج بد دور سے گزر رہے ہیں۔ بھاجپایا سنگھ پریوار نے جو کیا اس پر جتنا بھی رنج کیا جائے جتنا شدید اظہارِ غم کیا جائے اور جتنی بڑی سزا انکو دی جائے وہ کم ہے۔ لیکن سوال یہ ہے کہ کیا ہمارے دیش میں کوئی حکومت ہے۔ اور کیا اس دیش میں انسانوں اور سویلائزڈ انسانوں کا بنایا ہوا قانون ہے۔ یا جنگل کا قانون رہ گیا ہے۔ افسوس اس بات کا ہے کہ جو ڈیمولیوشن ہوا۔ مسجد شہید کردی گئی وہ ایک سازش کا نتیجہ تھی۔ اس سازش میں بلاشبہ دیش کے پرائم منسٹر شامل اور شریک تھے۔

†[] Transliteration in Arabic Script.

میں ان کی ذہنیت کو بتاؤں۔ آپ نے بڑی ترقی کی ہے۔ چیف منسٹر سے پرائم منسٹر بن گئے ہیں۔ یہ ترقی انکی ذہنیت سے بھی ہوئی ہے۔ کبھی یہ کہا کرتے تھے کہ مسلمانوں کے کان کتر دیے جائیں گے۔ انکے کان میں سیسہ پگھلا کر ڈالا جائے گا۔ اسکی انتہا دیکھ لی گئی مسجد کے ڈیمولیشن میں۔ سوال یہ ہے کہ اگر بھوپال میں مدھیہ پردیش میں ظلم ہوا ہے۔ ہزاروں مسلمان شہید ہوئے ہیں۔ تو کیا مہاراشٹر میں نہیں ہوئے ہیں کرناٹک میں نہیں ہوئے ہیں۔ گجرات میں نہیں ہوئے ہیں۔ وہاں کیلئے کون ذمّہ دار ہے۔ کیا کرناٹک کی ذمہ داری بھی اڈوانی کے سر پر ڈال دیں گے۔ کیا مہاراشٹر کی ذمہ داری بھی اڈوانی کے سر ڈال دیں گے۔ کیا کرناٹک اور آندھرا پردیش میں جو ہوا ہے اس کی ذمہ داری اڈوانی کے سر پر ڈال دیں گے۔ اگر دیش میں کوئی حکومت آج بھی ہے تو کیا میں ہوم منسٹر سے پوچھوں کہ کیا آپ دلّی کے اس حصّے میں گئے ہیں جہاں پر سینکڑوں لوگوں کا خون بہا ہے۔ کیا آپ بھوپال گئے ہیں۔ کیا آپ بمبئی گئے ہیں کیا وہاں آپنے ری ایکٹ کیا ہے۔ اگر آپ ۱۲ بجے بھی ری ایکٹ کر لیتے ۶ دسمبر کو تو مسجد توڑنے سے روکا جا سکتا تھا۔ آپکی روکنے کی نیت بھی نہیں تھی۔

آپ نے ایک چھوٹا سا کام مسجد کو توڑنے سے روکنے کا بھی نہیں کیا۔ آخر آپ کرنا کیا چاہتے ہیں۔ آپ نے آج اس دیش کے مسلمانوں کو دھکیل کر ۱۹۴۷ میں کھڑا کر دیا ہے۔ اور نوجوانوں کو اس حد تک دھکیل دیا ہے کہ انکے سامنے کوئی راستہ نہیں رہ گیا ہے۔ آپ نے ان کو ملیٹینسی کی طرف دھکیل دیا ہے۔ کیا یہ نیک اور اچھا کام ہوا ہے۔ اگر اس کی ذمّہ داری اس دیش کے پرائم منسٹر اور ہوم منسٹر کی نہیں ہے۔ تو پھر کیا ہم اس دیش کے پرائم منسٹر کے آفس میں جو چپراسی ہے اس سے پوچھیں۔ اگر آپ ذمہ داری نہیں لے سکتے ہیں تو ہٹ جائیے۔ استعفیٰ دے دیجیے۔ اس کے بعد ہم سے پوچھیے۔ ہم نے کیا کیا تھا۔ آپ کو یاد ہوگا ۱۹۸۹ میں یہی پرستھتی تھی تو وی۔ پی۔ سنگھ نے اپنی حکومت چھوڑ دی تھی۔ اس مسئلے پر آپ نے دیش میں قتل عام کرایا مسلمانوں کا۔ آپ بتائیے اور مومن پورہ گلبرگہ جائیے یا مومن پورہ۔ اور ناگپور جائیے جہاں مسلمانوں کی اپنی لوکیلٹی کے اندر۔ مسلمان اس دکھ سے پریشان حال اپنے دکھ کا اظہار کرنے کے لیے جمع ہوئے تھے۔ نہ وہاں کسی ہندو کا گھر تھا نہ کوئی ٹمپل تھا۔ جس کو خطرہ تھا۔ لیکن آپ نے ان کو گولیوں سے بھون دیا۔ سینکڑوں نوجوان شہید ہو گئے۔ کیا قصور تھا ان کا۔ دوسری طرف جب ایودھیا

کی طرف لوگ جانے لگے کارسیوا کیلئے تو سنگھل نے کہا تھا کہ اگر ہم کو اصل معنی میں کارسیوا کرنے نہیں دیں گے۔ تو ہم مسلمانوں کی کارسیوا کردیں گے۔ اس سمے ہوم منسٹر نے کیا ری ایکٹ کیا اور پرائم منسٹر نے کیا ری ایکٹ کیا۔ یہ ہمیں بتائیں۔ ہزاروں لاکھوں آدمی وہاں چلے گئے۔ ایودھیا میں اور وہ ہتھیاروں سے لیس ہوکر گئے۔ انکے پاس تلواریں تھیں سبّل تھے۔ ترشولیں تھیں۔ ایسی چیزیں انکے پاس تھیں جس سے وہ وہاں تباہی لا سکتے تھے۔ لیکن وہاں آپ نے ربر کی گولی بھی نہیں چلائی۔ آپ نے وہاں ربڑ کی گولی نہیں چلائی جب وہ چبوترہ بنا رہے تھے۔ اور اس سمے کا ہوم منسٹر صاحب کا اور پرائم منسٹر صاحب کا بیان ہمارے سامنے ہے۔ جس میں انھوں نے کہا تھا کہ ہم نہتے سادھوؤں اور کارسیوکوں پر گولی نہیں چلائیں گے۔ کیا مسلمانوں کے ہاتھوں میں رائفلیں تھیں۔ کیا انکے ہاتھوں میں ہتھیار تھے۔ جو آپ نے ان پر گولیاں چلائیں اور ان کو بھون کر رکھ دیا۔ اس کا کون جواب دے گا۔ اس کا خون کس کے سر پر ہوگا۔ آپ بتا دیجیے۔ ہوم منسٹر صاحب آپ بتا دیجیے ہمارے وہ لوگ جو یہاں بیٹھے ہیں بتا دیں کہ آپکی تسلّی کتنا اور خون پینے کے بعد ہوگی۔

آپ کو میں ... "مداخلت"... خاموش رہ کر آپ ... "مداخلت" ... آپ اس کے لیے ذمّہ دار ہیں۔ آپ نے شیوسینا کو بین نہیں کیا۔ شیوسینا کے لیڈر نے صاف لفظوں میں کہا ہے کہ کارسیوا ہم نے کی ہے۔ اور مسجد ہم نے توڑی ہے۔ اس کے باوجود آپ نے اس کو بین نہیں کیا۔

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu): Shame.

SHRI ABDUL SAMAD SIDDIQUI: Shame on you.

SHRIMATI JAYANTHI NATARAJAN: "Shame on the Shiv Sena," I said.

SHRI ABDUL SAMAD SIDDIQUI: Yes. I say, "Shame on you also." You are a party to it.

उपसभापति : प्लीज़ समद साहब, आप समाप्त कीजिए (**व्यवधान**) ... I have to call other people.

श्री **अब्दुल समद सिद्दीकी** : अगर आप ऐसा करेंगे तो आपकी पार्टी बरबाद और तबाह होगी। इससे आप भी तबाह होंगे, आपकी पार्टी तबाह होगी और देश भी तबाह होगा।

†[شری عبدالصمد صدیقی : اگر آپ ایسا کرینگے تو آپ کی پارٹی برباد اور تباہ ہوگی۔ اس سے آپ بھی تباہ ہوں گے آپ کی پارٹی تباہ ہوگی۔ اور دیش بھی تباہ ہوگا۔]

SHRI R. K. DHAWAN (Andhra Pradesh): Madam Deputy Chairman, I will try to be as brief as possible for two reasons. One is the lack of time, and the other is that my training under Mrs. Gandhi has been

†[ ]Transliteration in Arabic Script.

that if you want to convey your best, you should be as brief as possible. I want to make only three or four points. Many hon. Members have mentioned various things, and I don't want to deal with them.

The first point I want to make is that if this hon. House and all of us in this country want to condemn, really condemn this dastardly act on the 6th of December, which was engineered, sponsored, monitored and administered by the BJP Government of Uttar Pradesh, then, we should approach the Oxford Dictionary people to suggest new words by which we can condemn this dastardly act. There are no proper words in the Oxford Dictionary, which can be used to condemn it.

The second thing is that ever since the occurrence of this incident a thing that has been coming to my mind is that when I was 13 or 14 years old, I remember, I asked my mother, "What is the purpose of life if one has to follow the routine, the same routine, every day, getting up in the morning, doing your job, this and that, repeatng the same thing?" She told me, "My son, the purpose of life is that when you go away from this world, people who will be present at your funeral, should not say two things, that this man ever betrayed anybody and that this man did this thing wrong and that thing wrong." meaning thereby that one should never betray anybody, and one should not do wrong things. So, what the BJP and the BJP Government in UP have done is worse than betrayal. It has no answer.

Much blame has been tried to be apportioned to the Prime Minister that he did not take action or that the Government did not take action. What could the Prime Minister do when such responsible leaders of a political party betrayed this nation, the *Constitution*, the Supreme Court and everybody else? I want to inform you that I was personally present in a meeting with the Prime Minister, where a very, very top functionary of the RSS met the Prime Minister. This meeting was arranged by me with the Prime Miinster at the behest of a common friend. I took the top functionary in my car to the Prime Minister's house. Duing the 20-minute conservation that this top *functionary* of the RSS had with the Prime Minister, he went on repeating only one thing, "Mr. Prime Minister. this **kar seva** will be a symbolic **kar** seva. There will be no damage to the Mosque, to the structure or to anything else." .

I have not been able to sleep when I think of that type of functioning of the RSS. what he told the Prime Minister and what they have done to the naion.

AN HON. MEMBER: I would not like to name him. It was the top RSS functionary who met the Prime Minister. I took him in my car. He ns fully aware of it. (Interruptions)

SHRI KRISHAN LAL SHARMA (Himachal Pradesh): What did the Prime Minister tell him?

प्राइम मिनिस्टर ने भी कुछ कहा होगा, कुछ जवाब दिया होगा ?

SHRI R. K DHAWAN: The Prime Minishter believed that top RSS functionary. (Interruptions) Do you mean to say that the Prime Minister should have told him that he did not believe him, that you will betray the nation? That is what you want to say? These top RSS leaders betrayed the nation. They have betrayed the country. And when these Governments were removed, they are saying it is contempt of the Constitution. It remind mt of an incident. Abraham Lincon in one book on the court cases had said that a youth had murdered both his parents. He was tried. When the sentence was

[Shri P. K. Dhawan]

to be pronounced, at the last moment, he pleaded mercy on the ground that he was an orphan. So, this is what the BJP has done. They have orphaned the nation, they have orphaned the system, they have orphaned the Constitution. And now they are saying why their Governments have been dismissed. By a parallel, what Abraham Lincon wrote so many years ago, these people are doing now.

There is another thing which has been coming to my mind. On the 14th of this month when the nation was still out of the trauma of agony and sorrow and shame, the BJP leaders Mr. Advani and Mr- Joshi were reported to be vey cheerful in the Agra jail. This is what the newspapers reports say- This is what the BJP leaders who have visited them say or their family members say. They have reported they are very cheerful. I would like to ask my friends from the BJP side what for these leaders are cheerful. Are they cheerful for having demolished the mosque of the structure or for the riots or arsons that were taking place in the country or for the persecution of the Hindus in the Muslim countries? They are cheerful for what? I have gone through the jails, when Mr. Advani was part of the Government at the Centre I know we had to go through what. And they are the cheeful angels. They do not have even a sign of shame, sorrow or anguish on their face. They are very cheerful because of the in sulting happenings in the country.

SHRI V. GOPALSAMY: Because they were arrested, they are cheerful.

SHRI R. K. DHAWAN: While talking of history. 400 years ago in a less civilised society at that time—I do not know whether that is a fact or not; historians will find out or the inquiry commissions will find out—conceding for the sake of argument that Babar destroyed tre temple and constructed the mosque, now in the 20th century after 400 years what are we trying to do? One mistake had been committed at that time and now we are trying to do another mistake on that ground! What will history think of us after 300 years or 400 years? Will they not compare the BJP or Mr. Advani or Joshi with Babar? Have they ever thought about it? What will history write about us on what is happening now in the country?

Without going any further into the details. I only want to say that what the Prime Minister did and what the Government did was the only possible thing in the circumstances. There was no other choice. If there had been any other Prime Minister of any other party for him also there was no other course open except to believe the BJP and the RSS leadership. I would only say that all of us should ponder over what they have done to the nation and what they have done to the spirit of Hinduism. Sastri Ji while speaking in the morning gave very educative quotes about the spirit of tolerance in Hinduism. I would like to ask what a blow trey have given to it? Just thing over it Search your heart and find out what you have done to the nation.

I would only say four or five things about the BJP Governments. I have just been able to jot them down when I decided to write. If the BJP did not envisage riots and loss of life after demolition of the mosque, then I must say the BJP lacks foresight. If the BJP did not bother to fulfil the promise given to the courts and the Central Government intentially, then it is devoid of moral values. The BJP has no moral values. If the BJP did not think it difficult to manage a five lakh instigated, frenzied mob, then it lacked understanding of

the mass behaviour. You did not know what will happen! You are just giving slogans and are asking people to reach Ayodhya and everywhere and you did not know what happens when five lakh people get together! If you could not think of what would happen, then you are not fit to be called a party. If the BJP did not apprehend international repercussions and reactions, then I must say that it lacks international understanding. They know nothing about what is happening on the international front. And if the BJP did not think this act would make Pakistan take stock of spreading terrorism in this region then I must confess that that party lacks knowledge of Pakistan's policy of terrorism in the region.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Sitaram Kesri.

SHRI V. GOPALSAMY: The Champion of backward classes.

श्री सीताराम केसरी : माननीय डिप्टी चेयरमैन सहिबा, आज सबसे पहले सिकन्दर बख्त साहब से मैं कहूंगा कि एक नहीं जितनी भी मेरी भर्त्सना करें सबके लिए मैं तैयार हूं। आज का दिन मैं मानता हूं कि राष्ट्रीय शर्म का दिन है। विश्वासघात की चर्चा सुषमा जी ने की। उस शब्द के पीछे एक क्षमा है, एक प्रायश्चित है। मगर उस शब्द के पीछे प्रायश्चित, क्षमा, व्यथा और वेदना प्रकट करने के पीछे यह भी निश्चय होता है जैसा मैंने अभी सिकन्दर बख्त साहब को कहा कि जितनी भी भर्त्सना करो हम तैयार हैं। तुम्हारी आंख के आंसू के साथ मेरे आंसू हैं। उसी तरह से इनको कहना चाहिए था। मगर जहां भी प्रायश्चित पर दण्ड और प्रहार चलता है सत्ता का तो कहती है कि प्रधान मंत्री डीमारेलाइज्ड हैं इसलिए ऐसी बात कर रहे हैं। यह गलत है। सत्ता को कठोर दण्ड देना होगा और कठोर कदम उठाना पड़ेगा।

एक बात मैं और साफ कर देना चाहता हूं। मैंने अपने दल के नेताओं से पहले भी कहा और आज भी मैं कहता हूं, सत्ता का काम मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च बनाने का नहीं है। मगर चूंकि मस्जिद ढहाया गया है इसलिए बनाने की आवश्यकता है। मगर मैं साफ कहता हूं, मैं इस बात में यकीन नहीं करता और मैं यह भी बताना चाहता हूं कि वैचारिक मतभेद हैं। सवाल मन्दिर और मस्जिद का नहीं है। यह घटना मैं देख रहा हूं अपने जीवन में 1929 से जिस दिन से मैंने राजनैतिक जीवन में प्रवेश किया। दो विचारधाराओं का टकराव है।

मेरे कुछ मित्रों ने आडवाणी जी के भाषण पर या कल्याण सिंह जी के भाषण पर यह कहा कि फादर आफ द नेशन ये नहीं कहते हैं। अभी वी० पी० सिंह ने भी कहा कि फादर आफ द नेशन ये नहीं कहते हैं। मैंने कहा कि ये नहीं कहेंगे। इन्होंने स्वराज्य की लड़ाई नहीं लड़ी है। इन्होंने आजादी की लड़ाई नहीं लड़ी है। हम स्वतंत्रता सेनानियों के, हम देशभक्तों के, जो हमने स्वराज्य की लड़ाई लड़ी है, उनके फादर द नेशन हैं। इनके फादर आफ द नेशन नहीं हो सकते।

आपको एक बात और कहना चाहता हूं डिप्टी चेयरमैन साहिबा, आडवाणी साहब और अटल बिहारी वाजपेयी जी जिस दिन सत्ता में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जाता था तो गांधी जी की समाधि पर जब कसम खाने के लिए गये तो उस दिन इनके फादर आफ द नेशन थे। मेरे सिकन्दर बख्त साहब गम्भीरता से सोचिए। राष्ट्रीय शर्म और संकट की घड़ी है। सोचना होगा यह घटना आसान नहीं है। यह सिर्फ विश्वासघात की घटना नहीं है। जिस दल में एसे लोग हों जो यह कह दें कि विश्वासघात हो गया है और अंतर्राष्ट्रीय घटना घट जाए और उस पर हम इत्मीनान कर लें तो यह संभव नहीं है। यह सच है कि कांस्टीट्यूशन का अपमान किया गया है, यह सच है कि सेक्युलरिज्म को जलाया गया है। यह सच है कि विश्वास को तोड़ मरोड़कर

[श्री सीता राम केसरी]

रखा गया है। यह सच है कि राष्ट्र की छवि पर तमाचा मारा गया है। जिसने स्वराज की लड़ाई नहीं लड़ी हो। सेक्युलरिज्म का जन्म आजादी की लड़ाई की कोख से हुआ है। उसकी उपेक्षा करना मूर्खता है। हमारे बहुत सारे भाई भूलते हैं। हमारी गलतियां हैं, मगर भयंकर गलती है, यह गैर-कांग्रेसवाद की उपज है, एंटि-कांग्रेसिज्म के प्रोटैक्टर हैं। नहीं तो इनको इतनी सीट नहीं मिलतीं।

एक बात और मैं अपने लोगों से कहता हूं कि देखो इनके श्री राम में और हमारे हे राम में बड़ा भारी फर्क है। हे राम—गांधी जी को जिस समय गोली लगी थी, तो उन्होंने कहा "हे राम", इनका श्री राम एक सामंत, राजा राम—बनवासी राम नहीं है। यह इनका राम, राजा राम है, बनवासी राम नहीं है, अयोध्या की गद्दी पर बैठने वाला राम है। वह राम नहीं है जिसने बनवासी और सन्यासी बन करके सारे देश का भ्रमण किया। गांधी का राम नहीं है।

इनके राम के मुंह में हजारों बच्चों का खून लगा हुआ है आज। ... (**व्यवधान**)

श्री संघ प्रिय गौतम : महोदया, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है। ... (**व्यवधान**) गांधी जी के राम को यह सही नहीं बता रहे हैं।

श्री सीताराम केसरी : नो प्वाइंट आफ आर्डर... (**व्यवधान**)

श्री शंकर दयाल सिंह : (बिहार) : बनवासी तब भी राम था और राजा बन कर भी राम रहा। उनके ऊपर यह आक्षेप लगाना गलत है। .. (**व्यवधान**)

श्री संघ प्रिय गौतम : सीताराम जी ने ठीक नहीं कहा है—... (**व्यवधान**) गांधी जी भी इसी राम को मानते हैं।

रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम।

श्री शंकर दयाल सिंह : जिनका नाम सीता राम खुद है, वह जो कुछ कह रहे हैं, वह समझ-बूझ कर कह रहे हैं।

श्री सीताराम केसरी : डिप्टी चेयरमैन महोदया, दुख के साथ कहना पड़ता है कि इनके सामने राष्ट्र की अखंडता नहीं थी, सामाजिक समरसता का प्रश्न नहीं था, इनके सामने धार्मिक एकता का प्रश्न नहीं था। यह सिर्फ इस देश में भावनात्मक विभाजन के आधार पर अपनी राजनीतिक गोष्ठी बिठाने का सिर्फ काम है।

मैं मानता हूं कि हमारे लाखों और करोड़ों मुसलमान भाइयों के विश्वास पर जो बड़ा प्रहार पड़ा है, उनकी आंख के आंसू के साथ हमारे आंसू जरूर हैं, वह विश्वास करें न करें, मगर इसका यह अर्थ नहीं, अक्सर यह कहते हैं कि कांग्रेस के लोग तुष्टीकरण की नीति अपनाते हैं। यह भी मै साफ बताना चाहता हूं कि तुष्टीकरण की नीति क्या है।

1947 के विभाजन के बाद इनकी नौकरियों की संख्या 49 प्रतिशत थी, आज 2.8 प्रतिशत है—यह तुष्टीकरण है। अक्सर कहते हैं—एक भाषण सुना मैंने—उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों को चाहिए था उदारता दिखलाना और कहते कि मस्जिद ले लो और हम कहते कि मस्जिद वापस कर दो।

डिप्टी चेयरमैन महोदया, मैं कोई विद्वान नहीं, कोई पढ़ा-लिखा नहीं, कोई बुद्धिजीवी नहीं, किसी स्कूल और कालेज में नहीं पढ़ा हूं, मगर अनुभूति की वाणी होती है। .. (**व्यवधान**)

श्री शंकर दयाल सिंह : मंत्री जी स्वयं कह रह हैं कि मैं बुद्धिमान नहीं हूं, मैं अकलमंद नहीं, मैं पढ़ा-लिखा नहीं, मैं इसको नहीं मानता हूं। वह बुद्धिमान आदमी है।

एक माननीय सदस्य : इस पर आपकी रूलिंग चाहिए।

श्री शंकर दयाल सिंह : वह इसलिए कि इतने दिनों से जो मंत्री रहे केंद्र में और कोषाध्यक्ष रहे ए०आई०सी०सी० के, वह बुद्धिमान आदमी हैं।

श्री सीताराम केसरी : मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि अनुभूति की वाणी होती है। आज तक मैंने सुना कि बहुसंख्यक वरिष्ठ बलवान निर्बलों को उदारता देता है। यह पहली बार मैंने सुना कि अल्पसंख्यक समुदाय के लोग मस्जिद दे दें और हम उदारता दिखला दें। हमारा कर्त्तव्य था, हमारा फर्ज था, हमारी ड्यूटी थी कि अल्प संख्यक भाइयों को कहते कि यह थी एक मस्जिद नहीं, अनेक मस्जिद बनाओ अभी इन्होंने वेदना प्रकट की और फौरन उन्होंने कह दिया कि सरकार ने मस्जिद वही बनाने का फैसला किया तो गलत किया। यही आपके चोर हैं, यही आपके हृदय में दुर्भावना है, यही आपके हीनतर भावना है, यही विभाजन की भावना है। यह शर्मनाक भावना है। कहीं आपकी भावना नहीं हैं। एक बात और मैं कहना चाहता हूं कि जिस विचारधारा ने 30 जनवरी, 1948 को गांधी जी की हत्या की वह व्यक्ति नहीं था, वह विचार था। इनका राम श्रीराम तो है ही, साथ-साथ नाथू राम है . . . (व्यवधान) नाथूराम है। सीताराम होता तो अच्छा ही होता। ऐसा दिन देखने को नहीं मिलता। यह मैं कहना चाहता हूं। सीताराम नहीं है आप। आपके दिल में जो विचार है, इस लिए यह फैसला करना है इस सदन को कि क्या वह विचारधारा नाथूराम का विचारधारा रहेगा या गांधी का विचार-धारा रहेगा। दूसरी बात इसी तरह की विचार की लड़ाई 1952 में हुई थी। प्रभु दत्त ब्रहमचारी ने पं० जवाहर लाल नेहरू को चुनौती दी थी, सेक्युलरिज्म को चुनौती दी थी। इसलिए आज फिर मैं कहता हूं कि इस देश को जवाहर लाल नेहरू के विचार के अनुसार रहना है या प्रभु दत्त ब्रहमचारी के विचार के अनुसार रहना है? इन शब्दों के साथ, अंत में एक शब्द बोलना चाहता हूं कि जब विश्वास था . . . (व्यवधान)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : प्रभु दत्त ब्रहमचारी स्वतंत्रता सेनानी थे। प्रभु दत्त ब्रहमचारी भारत की आजादी की लड़ाई में जेल गए थे। वह स्वतंत्रता सेनानी थे।

श्री सीताराम केसरी : ठीक है, मगर साथ साथ . . (व्यवधान) सुनिए . . (व्यवधान)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : यह मेरी जानकारी है।

श्री सीताराम केसरी : मैं इतना नहीं जानता हूं, मगर (व्यवधान)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : प्रभु दत्त ब्रहमचारी भारत की आजादी की लड़ाई के योद्धा थे। वह अंग्रेजों की हुकूमत में जेल गए थे।

श्री सीताराम केसरी : ठीक है, आप जानते हैं, मैं नहीं जानता। मैं इतना ही जानता हूं कि वह एक हिन्दू कोड बिल के खिलाफ जवाहर लाल जी से लड़ थे और वह प्रतिक्रियावादी थे। इतना ही *जानता हूं। . . . (व्यवधान) यह विचारधारा* . . . (व्यवधान) मैं बता रहा हूं। देखिए एक चीज मैं बताता हूं, तीसरी बात, एक नया चाल इन लोगों ने सीखा है क्या? बंदे मातरम् इनका स्लोगन नहीं है, आजादी की लड़ाई का स्लोगन है। सरदार वल्लभ भाई पटेल हमारे नेता है, इनके नेता नहीं हैं। मैं एक प्रश्न करता हूं, गांधी जी ने विभाजन का विरोध किया, मगर हत्या किनकी हुई गांधी जी की हुई। जिसने विभाजन कराया उनका कुछ नहीं हुआ। उनका उदाहरण है। गांधी जी विभाजन के विरोधी थे, मगर उनकी हत्या हो गई। सरदार वल्लभ भाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आजाद हमारे नेता थे। मगर विभाजन का समर्थन किए उनके खिलाफ इनकी आवाज नहीं है। यह आवाज है गांधी की हत्या हुई, क्यों इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि क्यों नहीं, सब से बड़ी बात यह है कि आप लोगों का एक अलग विचार रहा है। यह विचार संबंध है, विचार से संबंध है, सिकन्दर बख्त साहब यह ख्यालात से संबंध है कि आप लोगों का हमेशा एक ही विचार रहा है और यह विचार के समर्थक रहे हैं। आज जो मस्जिद को धाराशाई किया गया, यह कैसे किया गया? आप सुनियोजित ढंग से किया। आज आप देख रहे है कि दुनियां में इसकी संस्कृति नहीं है। राष्ट्र में इसकी छवि बर्बाद हो गई है तो आप कहने लगे कि हमारा दोष नहीं है। हंडरेड परसेंट दोषी हैं और हंडरेड परसेंट रहेंगे। उनसे मे

[श्री सीताराम केसरी]

निवेदन है कि जिस समय वी०पी० सिंह जी के टाईम में रथ यात्रा प्रारम्भ हुई थी तो वह रथ यात्रा गुजरात में ही रोकनी चाहिए थी।

मगर मैं लालू प्रसाद यादव जी की तारीफ करता हूं कि उन्होंने बिहार में रोक लिया और क्या नतीजा हुआ, तो मैं इतना ही कहना चाहता हूं डिप्टी चेयरमैन साहिबा कि यह जो जालसाजी और यह जो बातें हुई है और यह कहा जाता है एक तरफ कि प्रधान मंत्री की गलती है, दूसरी तरफ यह क्यों दण्ड दे रहे है? आज जिस ढंग से इन्होंने देश में अराजकता की परिस्थिति पैदा कर दी है, जिस ढंग से इन्होंने मस्जिद को धराशायी कर दिया, जिस ढंग से इन्होंने दूसरे धर्मावलंबियों के धर्मस्थल को आघात पहुंचाया जबकि लोकसभा में, राज्य सभा में यह मंजूर किया गया कि 1947 से पूर्व बने हुए मंदिर और मस्जिद या जो भी धर्मस्थल हों, उन पर प्रहार नहीं होगा, मगर उसने प्रहार किया। इसलिए सरकार के लिए यह उचित ही था कि वह जो भी उचित कदम उठाए, वह ठीक है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Shri Subramanian Swamy.

अयोध्या से बाहर न जाइएगा Jayanthi Natarajan came and conveyed the message.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY (Uttar Pradesh): Madam, can Ayodhya be complete without Sri Lanka? I want to know. And without Sri Lanka, Tamil Nadu has to be... (*Interruptions*)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Anyway, I can't help it. So, please confine yourself to the nearby areas.

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Near Delhi, you mean?

Madam Deputy Chairman, I have only one basic point to make. Today, this morning, the BJP Members were demanding their constitutional right. This is indeed surprising considering that they have torn apart our Constitution on the 6th of December.

The destruction of the constitutional provisions was not done after declaring they would do so. They had assured the Supreme Court, they had assured the Prime Minister that they would uphold all their constitutional duties. And having made that assurance, they went against it. One attempt is being made to find fault with the Prime Minister for having believed their assurance. But the Prime Minister in a democracy has to go by the assurance, specially of those who are represented in Parliament. Indeed, therefore, the nation ought to find fault with those who gave an assurance and then backed out. The ban on the RSS, Vishva Hindu Parishad, Bajrang Dal is something that I had been demanding for the last six months, naturally because I knew them better than anybody else. Consequently, I knew this is precisely what they would do. The murtis of Ram and Sita were installed inside the Babri Masjid is not by an act of courage. but in the night like thieves they came and installed them. Similarly, the destruction of the Babri Masjid is not being done as warrious. as fighters for Ram, but by betrayal, by claiming to uphold the Constitution and then when it was least expected of them, they went and broke it in a sneaky way. Is this what Maryada Purshottam stood for? In fact, if there are any people who don't deserve, who have no right to utter the word of 'Ram', it is the people of RSS and their front organisations, because everything they have done so far has been by sneak. In August of 1989 when it was agreed that they would be allowed to lay the foundation, they gave a written agreement, they signed a written agreement—Mr. Singhal,—Mr. Dalmia and others that they would abide by the Court decision and that they would not take any further steps once the permission to lay the foundation was given. Mr. Rajiv Gandhi believed them and he allwoed the shilanyas ceremony to take place. That writ-

ten agreement signed on 27th September 1989 is there as a document and they went back on that. Therefore, Madam, I would like to say that, in fact, today in the eyes of the world, in the eyes of the people of India, they stand condemned as the people who cannot be trusted with their words, as the people who tore up the constitution, as the people who brought the country to the brink of a disaster as the people who threaten the country today with disunity. But the worst part of what they have done is that they have scuttled a solution to the Ram Janambhoomi issue by negotiation. The Muslim leadership has said that if it could be established that there was a temple which was demolished and on that the Babri Masjid was built, they would give up their claim. They would give up their claim to the Masjid because it is said in the *Koran* that is illegal to read *namaz* in such a place. Therefort, if an commission had been set up to determine, by archaeological evidence and other evidence, whether there was a temple to begin with and if it had concluded that there was a temple on the foundation, then the Muslims would have joined with the Hindus to build the Ram Temple there. After all, Iqbal declared Ram as "Imam-e-Hind". No Muslim in this country has any sense of disrespect to Ram and it would have been a grand symbol of national unity if we had found a solution in that way. But they did not allow this solution to take place. The Muslim leadership had agreed to this approach. It is the Vishwa Hindu Parishad and the RSS who have opposed this solution, because they wanted to establish their supremacy and supremacy over Muslims. The RSS is not a pro-Hindu organisation. The RSS is only an anti-Muslim organisation. They have done nothing for the Hindus in the last 50 or 60 years when they have been in existence. They have spent their entire time spreading poison against the Muslims. Their move is to get psychological and psychic satisfaction by putting the Muslims down. What I would like to say today is that there has to be a permanent solution to the Babri Masjid problem because today if you rush to build a masjid there they will start an agitation again. It wil suit them because they are not committed to a solution. A permanent solution has to be found. Till a permanent solution is found no *poojas* should be allowed in the emple. If the reports are true that the pooja is being conducted there, that is entirely wrong, because if it was a masjid which was demolished and there was no temple to begin with, then it is against our Hindu *dharma* to conduct pooja over the grave of a masjid. At the same time, if there was a temple to begin with, the Muslim leadership has already committed by saying that they will give up their claim to the masjid. Therefore, I would say that in the interest of a permanent solution, even today I will say, the masjid should be built only after it has been firmly established that there was no temple to begin with. If we rush to this we will be playing into the hands of the Hindu fundamentalists because it will suit them very well. That is why I say caution is very essential at this moment. I would say it is of utmost importance that *poojas* are not conducted there because *poojas* cannot be conducted on the graveyard of a masjid if it was a masjid to begin with. That is what the Government has to ensure and they have to give an assurance that no *pooja* is going on there and that they will find a permanent solution to the problem. That is what I would like to say. Madam, if you give me permission, I would like to say about the RSS's activities in other States of India. But I know that you are not going to give me permission. So, I am not dealing with that.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I think there would not be much opportunity in this session to allow you to speak on other subjects because we have a lot of business which we should have completed but due to unforeseen circumstances the House was not in a proper order and we could not take them up. That is why you will not have another opportunity. I hope those occasions would not arise. Now, the Home Minister has to reply. (*Interruptions*) I can read out the names of those who wanted to speak if you are satisfied. (*Interruptions*) ....

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी मैडम, मोरनिंग में तो हम लोग सूरत के मसले को आपके सामने रख रहे **थे** . . .

مولانا عبیداللہ خاں اعظمی : میڈم ۔ مارننگ میں تو ہم لوگ سورت کے مسئلہ کو آپکے سامنے رکھ رہے تھے...

उपसभापति: एक ही बात है। एक ही चीज़ है।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : नहीं मैडम अयोध्या के मसले पर. . .

مولانا عبیداللہ خاں اعظمی : نہیں میڈم ایودھیا کے مسئلہ پر ..

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let Mrs. Sinha speak because she has been wanting to speak... (*Interruptions*) . . .

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी : पूरे मुल्क का मसला है।

مولانا عبیداللہ خاں اعظمی : پورے ملک کا مسئلہ ہے۔

उपसभापति : आजमी साहब, **सबको** मालूम है, पूरे मुल्क का **मसला** है, नहीं तो हम लोग क्या कर रहे है। **उनको** बोलने दीजिए।

मौलाना ओबैदुल्ला खान अज़मी : हम कभी ज़िद नहीं करते मैडम।

مولانا عبیداللہ خاں اعظمی : ہم کبھی ضد نہیں کرتے میڈم ۔

उपसभापति : आप महिलाओं के साथ अत्याचार कर रहे हैं। उनको बोलने दीजिए। बोलिए मिसेज सिन्हा। I cannot allow the suppression of women in this House... (*Interruptions*) ...

श्री संघ प्रिय गौतम : मैडम, एक मिनट के लिए दरख्वास्त कर रहा हूं, आप विचार करें।

उपसभापति : अच्छा, आप **बैठिए**, मैं आपको बाद में बुलाऊंगी। आपकी ओर से तो महिला बैठी थीं, उनको बुला दिया।

श्री संघ प्रिय गौतम : ठीक है, **मैडम**, बुलवा लीजिए।

श्रीमती कमला सिन्हा : उपसभापति महोदया, मुझे बहुत लम्बी बात कोई करनी नहीं है, दो मिनट में ही अपनी बात समाप्त करनी है क्योंकि कल से इस विषय पर बहुत लम्बी चर्चा चल रही है। बहुत लम्बी चर्चा हुई, गृह मंत्री जी का वक्तव्य भी आया। मैं जो बात कहना चाहती हूं वह यह है कि इतिहास साक्षी है, इतिहास गवाह है कि जब कभी किसी तरह का ग[illegible] हुआ [illegible], समाज में हलचल हुई है, [illegible]लादर व[illegible] से आए हों य[illegible]

†[] Transliteration in Arabic Script.

अ ... श में ... हुआ है, औरतें हमेशा सफ्फर करती रही हैं।
It is the women who have borne the brunt of it... *(Interruptions)*...

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: There are women who trouble men... *(Interruptions)*...

SHRIMATI KAMLA SINHA: To you may be. But not to everybody...

तो मैं इसलिए कहना चाहती हूं कि जो घटना हमारे देश में अभी घटी है, बाबरी मस्जिद की, यह केवल धर्म की बात नहीं है, बाबरी मस्जिद को बी०जे०पी०, आर० एस०एस० वाले और आर०एस०एस० के सारे जो एसोसिएट कम्पनी वाले है, उन्होंने केवल राजनीतिक मसले को ही इस्तेमाल किया है।

It is the stepping stone to Delhi *gaddi.*

यह बात साफ हो जानी चाहिए। किसी के दिमाग में अगर कोई धुंधलापन हो तो यह बात साफ हो जानी चाहिए कि राजनीतिक दृष्टिकोण से यह काम कर रहे हैं। राम जी के लिए कोई प्रेम नही है इनको। बात सही है, मर्यादा पुरुषोत्तम राम के लिए इन्होंने कोई ऐसा काम नहीं किया है, यह दिल्ली की गद्दी हासिल करने के लिए किया है। लेकिन इस काम को करने के साथ-साथ मुझे तो आश्चर्य हो रहा था सुषमा जी जब बोल रही थीं, बोलने के साथ-साथ अगर दो बूंद आंसू गिराए होते उन्होंने, औरतें—हिन्दू-मुसलमान औरतें, छोटे-छोटे बच्चे, जिनके ऊपर अत्याचार हुए, जिस तरह से उनके ऊपर रेप हुए, उसके बारे में अगर कोई चर्चा की होती, कहा होता कि मैं औरत हूं और मैं इसके लिए शर्मिंदा हूं, तो मुझे खुशी होती। लेकिन यह उन्होंने नहीं कहा, उन्होंने अटल जी की तारीफ की, आडवाणी जी की तारीफ की, कल्याण सिंह जी का दलील लिया, लेकिन औरतों के बारे में एक शब्द नहीं कहा। तो जब कभी भी समाज में इस तरह के गदर होते हैं, मैंने कहा, औरतें सबसे ज्यादा सफ्फर करती हैं। दूसरा जो तबका सबसे ज्यादा सफ्फर करता है वह है मेहनतकश लोग, जिनको रोज-रोज मेहनत करके रोटी कमाना पड़ता है। वह दिल्ली में हो या दिल्ली के बाहर हो, कहीं भी हो, आप जाएं तो आप देखेंगे इस बात को कि लोग घरों से बाहर नहीं जा सकते, कर्फ्यू लगा हुआ है। बाहर नहीं जा सकते, कुछ खरीद नहीं सकते, चूल्हा चौका बंद है घर में, तो यह हालत होती है। इसलिए हमें चाहिए, सरकार को सख्ती से निपटना होगा इन हालात से। अगर सरकार सचमुच मे चाहती है अपने कलंक को धो देना तो सरकार को बहुत सख्ती से आर०एस०एस० का असली चेहरा पहचानकर सख्ती से निपटना होगा, अगर दिल में कोई ढुल-मुल हो तो गद्दी छोड़ देनी चाहिए। मुझे इतना ही कहना था।

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Home Minister has to speak now. Now I have another problem because Dr. Jain and some other Members have moved a resolution opposing the proclamation and he would like to speak when it is moved. Mr. Minister, you haven't yet moved the resolution.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: Madam, I am on a point of order you have allowed four Members from the Janata Dal and only two from the BJP while ours is the highest number.

उपसभापति: आप तो बिना बुलाए ही बोल देते हैं बीच में। आप सहनशक्ति से बैठे होते तो मैं आपको जरूर बुलवा देती।

I. **STATUTORY RESOLUTIONS SEEKING APPROVAL OF THE PROCLAMATIONS UNDER ARTICLE 356 OF THE CONSTITUTION IN RELATION TO THE STATES OF UTTAR PRADESH MADHYA PRADESH, RAJASTHAN AND HIMACHAL PRADESH**